YouTube kanwhizztimes
@kanwhizztimes lucknow
@kanwhizztimes
www.kanwhizztimes.com

कैनविज टाइम्स

सिर्फ सच

❑ वर्ष-11 ❑ अंक-348 ❑ सोमवार, 22 जनवरी 2024 ❑ नगर संस्करण ❑ लखनऊ से प्रकाशित एवं दिल्ली, पंजाब और उत्तराखंड में प्रसारित ❑ मूल्य- ₹ 3.00 ❑ पृष्ठ-12

सच है कि मंदिर का निर्माण न्यायालय के फैसले से हुआ है और श्रीरामजन्मभूमि पर मंदिर का निर्माण शुरु हुआ यह भी सत्य है कि यदि श्री नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री न होते तो संभवतः न्यायालय का फैसला न हो पाता और न ही जन्मभूमि स्थल पर राम मंदिर का निर्माण हो पाता। प्रमोद कृष्णम

'विकसित भारत संकल्प यात्रा' नये भविष्य का निर्माण करेगीः सिन्हा 11

कॉरपोरेट घराने भी राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के जश्न में शामिल 11

अभिजीत मुहुर्त में विराजेंगे रामलला

84 सेकेंड के शुभ मुहूर्त में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हटाएंगे नेत्रों की पट्टी

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

❑ औषधीय पवित्र नदियों के जल के 114 रजत कलशों से रामलला का अभिषेक

❑ शैय्याधिवास में रामलला के अचल विग्रह संग विराजमान रामलला भी होंगे शामिल

❑ प्राण-प्रतिष्ठा के साप्ताहिक अनुष्ठान के अंतिम चरण में वैदिक मंत्रोच्चार के साथ डाली गयी आहुतियां

लखनऊ। करोड़ों रामभक्तों का पांच सदियों का इंतजार सोमवार को समाप्त होगा जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी समेत देश की गणमान्य हस्तियों की मौजूदगी में अयोध्या में श्रीरामजन्मभूमि पर भव्य राममंदिर में शंख ध्वनि के बीच रामलला की श्यामल किशोरावस्था प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा की जायेगी,साथ ही अस्थायी मंदिर में वर्षो तक विराजमान रहे राम,लक्ष्मण और मां जानकी की मूर्तियों के दर्शन नये भवन में सुलभ हो सकेंगे।

श्रीरामजन्मभूमि ट्रस्ट के अनुसार श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा दोपहर साढ़े 12 बजे अभिजीत मुहुर्त में संपन्न होगी। पंचांग के अनुसार 22 जनवरी को पौष मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि रहेगी। इस दिन अभिजीत मुहूर्त के अलावा सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग और रवि योग जैसे कई शुभ योग बन रहे हैं। भगवान राम का जन्म त्रेता युग में अभिजीत मुहूर्त में ही हुआ था। इस मुहूर्त को बहुत शुभ माना गया है। यही कारण है कि मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा इसी मुहूर्त में की जा रही है। इस भव्य कार्यक्रम में भाग लेने के लिये प्रधानमंत्री सुबह 10 बज कर 55 मिनट पर रामजन्मभूमि स्थल पहुंचेंगे और 12 बज कर पांच मिनट से लेकर 12 बजकर 55 मिनट तक प्राण प्रतिष्ठा समारोह में अपनी उपस्थिति दर्ज करायेंगे। प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के उपरांत प्रधानमंत्री मर्यादा पुरुषोत्तम के आराध्य का दर्शन पूजन कूबर टीला शिव मंदिर में करेंगे। प्राण प्रतिष्ठा के दौरान हेलीकाप्टर के जरिये मंदिर में पुष्प वर्षा की जायेगी जबकि विभिन्न प्रांतो के संगीतवादक वाद्य यंत्रों से मंगल ध्वनि की छटा बिखरेंगे। इस बीच श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के मुख्य पुजारी आचार्य सत्येन्द्र दास ने रविवार को बताया कि अस्थायी मंदिर में विराजमान राम जानकी की प्रतिमाओं को एकादशी यानी आज शाम आठ बजे श्रीरामजन्मभूमि पर नवनिर्मित मंदिर में ले जाया जायेगा। भगवान की नयी प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा के साथ ही नये मंदिर में 1949 से पूजित प्रतिमाओं के दर्शन पूजन किये जा सकेंगे।

प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में भाग लेने के लिये आमंत्रित देश की जानी मानी हस्तियों का आगमन रामनगरी में शुरु हो चुका है। राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत रविवार को अयोध्या जाने के लिये राजधानी लखनऊ पहुंचे वहीं योग गुरु रामदेव,आचार्य बालकृष्ण,डॉ परमानंद सरस्वती, गीता मनीषी, निर्मलानंद माधव प्रिया दास, आचार्य कृष्ण मणि ,सतुआ बाबा, आलोक दास रामनगरी में अपनी उपस्थिति दर्ज करायेंगे। सभी साधु संतों ने हनुमानगढ़ी का दर्शन पूजन करेंगे। गौरतलब है कि प्राण प्रतिष्ठा का अनुष्ठान 16 जनवरी को दोपहर बाद सरयू नदी से प्रारम्भ हुआ था। दिव्य-भव्य मंदिर में सात दिनो तक चले प्राण-प्रतिष्ठा कार्यक्रम पूरा होने के बाद सोमवार शाम को पूरी रामनगरी 10 लाख दीपों से जगमगाएगी। मकानों, दुकानों, प्रतिष्ठानों व पौराणिक स्थलों पर 'राम ज्योति' प्रज्ज्वलित की जाएगी। प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के मद्देनजर पुलिस ने अयोध्या में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए हैं। सरयू नदी पर जल पुलिस पहरा देगी वहीं आसमान से एआई तकनीक से लैस एक खास ड्रोन गरुण शरारती तत्वों पर निगाहबानी करेगा। सुरक्षा के मद्देनजर यूपी पुलिस डायल 112 का निगरानी केंद्र लता मंगेशकर चौक पर बनाया गया। लखनऊ एडीजी जोन पियूष मोराडिया ने बताया ह्न हम एआई के जरिए गरुण ड्रोन के माध्यम से अयोध्या की सुरक्षा पर नजर रख रहे हैं, इसमें स्पीकर हैं इसकी रेंज आठ किमी है। इसमें हूटर भी है और पब्लिक एड्रेस का काम करता है। सुरक्षा के लिहाज से अयोध्या को कई जोन्स और सेक्टर्स में भी बांटा गया है। प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में श्रीश्री रविशंकर,जेएसडब्लू समूह के एमडी सज्जन जिंदल, रेमंड ग्रुप के एमडी गौतम हरी सिंघानिया,उद्योगपति लक्ष्मी मित्तल समेत कई हस्तियों के रविवार को लखनऊ पहुंचने की संभावना है। कार्यक्रम में प्रमुख उद्योगपति मुकेश अंबानी,गौतम अडानी,रतन टाटा,मशहूर क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर समेत कई हस्तियों के शिरकत करने के आसार हैं। भव्य कार्यक्रम के मद्देनजर समूची रामनगरी को स्वर्ग सा सजाया गया है। महाराष्ट्र से आए साढ़े सात हजार पौधों की खूबसूरती से श्रीराम जन्मभूमि परिसर दिव्यतम नजर आने लगा है। श्रीरामलला की प्राण-प्रतिष्ठा को देखते हुए पूरे परिसर को सजाया जा रहा है। फूलों की साज-सज्जा के साथ ही यहां गमले भी लगाए जा रहे हैं। इसके लिए महाराष्ट्र से साढ़े सात हजार से अधिक गमले व पौधे आए हैं। राम मंदिर प्रांगण में 56 प्रजाति के पौधे लगाए जा रहे हैं। इनमें एग्लोनेमा रेड-लिपिस्टक, पिंक, ऐलोकेशिया ब्लैक वेलवेट- कुकुलता, वेस्टिल, फिलोड्रेनड्रॉम रिंग ऑफ ● शेष पेज 11 पर

मोदी ने की धनुषकोडी मंदिर में पूजा-अर्चना, तीन दिवसीय यात्रा संपन्न

चेन्नई (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अयोध्या में राम मंदिर के अभिषेक से पहले रविवार को धनुषकोडी के दक्षिणी सिरे का दौरा किया और कोठंडारास्वामी मंदिर में पूजा की। इसके बाद प्रधानमंत्री तमिलनाडु की अपनी तीन दिवसीय रामायण-कनेक्ट यात्रा समाप्त कर नयी दिल्ली के लिए रवाना हो गये।

श्री मोदी ने अपनी यात्रा के अंतिम चरण में मंदिर में विशेष पूजा-अर्चना की। बाद में उन्होंने अरिचल मुनाई का दौरा किया। जिसके बारे में कहा जाता है कि यहीं पर राम सेतु का निर्माण हुआ था। अरिचल मुनाई भारतीय मुख्य भूमि पर अंतिम बिंदु है। उन्होंने समुद्र तट पर कुछ समय बिताया, कुछ देर ध्यान किया और समुद्र में फूलों ● शेष पेज 11 पर

योगी ने किया रेत शिल्प का अवलोकन

एजेंसी

अयोध्या। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पद्मश्री सुदर्शन पटनायक द्वारा उकेरी गई रेतशिल्प से बनाई गई भगवान श्रीराम की आकृति का रविवार को अवलोकन किया। सीएम ने यहां सेल्फी भी ली। रेत शिल्प पर बनाई गई इस आकृति को वर्ल्ड रिकॉर्ड्स बुक ऑफ इंडिया की तरफ से भगवान श्रीराम के सबसे बड़े रेत शिल्प का सर्टिफिकेट दिया गया है। सीएम योगी ने रविवार को यह सर्टिफिकेट राज्य ललित कला अकादमी की निदेशिका श्रद्धा शुक्ला को प्रदान किया।

बता दें कि रामोत्सव 2024 के अवसर पर राज्य ललित कला अकादमी, उत्तर प्रदेश संस्कृति विभाग की तरफ से रेतशिल्प कला शिविर का आयोजन किया गया था। रेतशिल्प के प्रख्यात कलाकार ओडिशा के पुरी निवासी पद्मश्री सुदर्शन पटनायक ने अपनी टीम संग इसका निर्माण किया था। इसमें उनके सहयोगी संतोष कुमार नायक, बुलू मोहंती, जितेंद्र, प्रमोद बिसवाल, महेश्वर, केनी कावासी एवं बनामबार पटनायक भी शामिल रहे। सुदर्शन पटनायक की टीम ने 55 फीट लंबी, 35 फीट चौड़ी, 23 फीट ऊंची रेत शिल्प कलाकृति सृजित की। भगवान राम का 500 वर्षों बाद अपनी अयोध्या में आगमन हो रहा है, इसमें राम मंदिर की 500 मिनिएचर कृतियों को भी संयोजित किया गया है। मुख्यमंत्री के साथ कैबिनेट मंत्री सूर्य प्रताप शाही, मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र, अवनीश अवस्थी आदि मौजूद रहे।

तमिलनाडु में राम मंदिर कार्यक्रमों के सीधे प्रसारण पर पाबंदी :सीतारमण

नयी दिल्ली। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने रविवार को तमिलनाडु सरकार पर सोमवार को अयोध्या में आयोजित होने वाले राम मंदिर कार्यक्रमों के सीधे प्रसारण पर प्रतिबंध लगाने का आरोप लगाते हुए इस फैसले को 'हिंदू विरोधी घृणित कार्रवाई' बताया। श्रीमती सीतारमण ने आरोप लगाया कि राज्य पुलिस निजी मंदिरों को अयोध्या में मंदिर के प्रतिष्ठा समारोह के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित करने से रोक रही है। उन्होंने एक्स पर कहा, तमिलनाडु सरकार ने 22 जनवरी को अयोध्या राम मंदिर के कार्यक्रमों के लाइव टेलीकास्ट देखने पर प्रतिबंध लगा दिया है। तमिलनाडु में, 200 से अधिक श्री राम मंदिर हैं। जिन मंदिर का प्रबंधन हिन्दू रिलीजियस एंड चैरिटेबल एंडॉमेंट डिपार्टमेंट (एचआर एंड सीई) द्वारा किया जाता है, उनमें ● शेष पेज 11 पर

दुल्हन बनी अयोध्या त्रेता युग की अनुभूति

एजेंसी

अयोध्या। श्रीरामजन्मभूमि स्थल पर भव्य मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के लिये अयोध्या दुल्हन सी सज गयी है। रामनगरी में चहुंओर फूलों की सुगंध के बीच सांस्कृतिक कार्यक्रम और रह रह कर जय श्रीराम का उदघोष धर्म शास्त्रों में वर्णित त्रेता युग की अनुभूति करा रहे हैं।

कड़ाके की ठंड पर आस्था की सुनामी भारी पड़ रही है। भगवान राम की श्याम वर्ण किशोरावस्था प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा सोमवार को अभिजीत मुहुर्त में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और अन्य गणमान्य हस्तियों की मौजूदगी में मंत्रोच्चार के बीच होगा। इस अदुभुद और औलोलिक क्षण का साक्षी बनने के लिये साधु संतों के अलावा देश की गणमान्य हस्तियों का रामनगरी में आगमन लगातार जारी है। योग गुरु स्वामी रामदेव, परम शक्ति पीठ और वात्सल्यग्राम की संस्थापक साध्वी ऋतंभरा,संगीतकार शंकर महादेवन, दक्षिण भारतीय फिल्मो के प्रख्यात अभिनेता रजनीकांत, फिल्म अभिनेत्री कंगना राउत, शेफाली शाह, क्रिकेटर अनिल कुंबले के अलावा केंद्र सरकार के कई मंत्री और उद्योगपतियों का आगमन अयोध्या की पवित्र धरा पर हो चुका है जबकि देश दुनिया की कई जानीमानी हस्तियों का आगमन आज शाम तक होने के आसार हैं। वीवीआईपी मेहमानो के प्लेनों को पार्क करने के इंतजाम लखनऊ के अलावा कानपुर, गोरखपुर और वाराणसी हवाई अड्डे पर भी किये गये हैं। प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को भव्यतम बनाने के लिये राज्य के संस्कृति विभाग ने खास इंतजाम किये हैं। रामपथ पर विभिन्न प्रांतों ● शेष पेज 11 पर

आज रहेगा घना कोहरा, दिन में बना रहेगा कुहासा

❑ दृश्यता (विजिबिलिटी) 50 मीटर से नीचे भी रह सकती है

अयोध्या में सुबह व रात में रहेगा घना कोहरा, दिन का तापमान सामान्य कम रहेगा

कानपुर में सबसे ठण्डा दिन और आगरा में सबसे ठण्डी रात

लखनऊ। मौसम विभाग ने सोमवार के लिए ठंड का रेड अलर्ट जारी किया है। आंचलिक मौसम विज्ञान केन्द्र से प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रदेश के अधिकांश अंचलों में कहीं घना तो कहीं बहुत घना कोहरा छाया रहेगा। इस वजह से दृश्यता (विजिबिलिटी) 50 मीटर से नीचे भी जा सकती है। राज्य में कुछ स्थानों पर कोल्ड डे और कहीं-कहीं सीवियर कोल्ड डे का प्रकोप रहेगा यानि धूप नहीं निकलेगी और दिन में भी कुहासा बना रहेगा।

अयोध्या में सोमवार को होने वाले प्राण प्रतिष्ठा समारोह के लिए मौसम विभाग ने विशेष बुलेटिन जारी किया है। आंचलिक मौसम विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह के अनुसार अयोध्या में सोमवार को घना कोहरा छाया रहेगा। सुबह 10 बजे तक दृश्यता 100 मीटर से 400 मीटर के बीच रहेगी। दिन का तापमान सामान्य से कम रहेगा। बीते 24 घंटों के दौरान पूर्वी उत्तर प्रदेश में कहीं-कहीं पर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कुछ स्थानों पर घना और कहीं बहुत घना कोहरा बना रहा। पश्चिमी यूपी में कुछ स्थानों पर और पूर्वी यूपी में अनेक स्थानों पर कोल्ड डे और कहीं-कहीं सीवियर कोल्ड का प्रकोप रहा। रविवार को गोरखपुर, अयोध्या, प्रयागराज, कानपुर, लखनऊ, झांसी, आगरा मण्डलों में दिन का तापमान सामान्य से कम रहा। शनिवार को ● शेष पेज 11 पर

करोड़ों रामभक्तों का पांच सदियों का इंतजार समाप्त

एक और दीवाली के लिए तैयार देश

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। लगभग 500 वर्ष के इंतजार के बाद अयोध्या में श्रीरामजन्मभूमि पर नवनिर्मित भव्य मंदिर में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के विराजमान का साक्षी सोमवार को देश दुनिया के करोड़ों रामभक्त बनेंगे और इस अवसर पर अपनी प्रसन्नता को व्यक्त करने के लिये रामभक्त अपने घरों,चौबारों को इजहार रोशन करने के लिये दीप जलायेंगे।

कल्पना करें तो यह कुछ ऐसा ही अवसर होगा जिसका वर्णन रामचरितमानस जैसे धार्मिक ग्रंथों में किया गया है जब त्रेता युग में भगवान राम अपना अर्धांगिनी मां जानकी और भ्राता लक्ष्मण के साथ 14 वर्ष का वनवास पूरा करने के बाद अयोध्या वापस लौटे थे और अयोध्यावासियों ने उनके आने की खुशी में घी के दीपक जलाये थे। प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को लेकर अयोध्या समेत पूरे देश में उत्सव का माहौल है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ समेत संत समाज और अति विशिष्ट लोगों की उपस्थिति में रामलला के श्रीविग्रह की प्राण प्रतिष्ठा का ऐतिहासिक अनुष्ठान सोमवार दोपहर संपन्न होगा। इस अवसर पर पूरी अयोध्या नगरी को हजारों क्विंटल फूलों से दुल्हन की तरह सजाया गया है। अवधपुरी में उत्सव सा माहौल है। सूर्यवंश की राजधानी अयोध्या धाम समेत पूरे देश के मंदिरों में राम संकीर्तन और राम चरित मानस का पाठ हो रहा है। फूलों से सजी अयोध्या जी में जन्मभूमि पथ से लेकर राम पथ, भक्ति पथ और धर्म पथ की अलौकिक आभा देखते ही बन रही है। सांस्कृतिक नृत्य और वादन के माध्यम से विभिन्न स्थानों पर प्रदेश के साथ-साथ देश भर की परंपराओं और कला का समागम हो रहा है। हर तरफ भगवान राम के भजन सुनने को मिल रहे हैं। सोमवार शाम को भव्य दीपोत्सव की तैयारी है। ऐसा लग रहा है मानों रघुनंदन के अभिनंदन के लिए पूरा स्वर्ग ही धरती पर उतर आया है। जनवरी में ही दीपावली का अहसान हो रहा है। प्राण प्रतिष्ठा के लिए राम मंदिर परिसर समेत पूरे अयोध्या धाम को फूलों से सजाया गया है। जन्मभूमि स्थान में अलग-अलग तरह के देशी विदेशी फूलों से सजावट की गई है, जबकि जन्मभूमि पथ, राम पथ, धर्म पथ और लता चौक पर भी सुंदर फूलों की सजावट है। विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए मंच बनाए गए हैं। विभिन्न धर्माचार्यों द्वारा अलग-अलग स्थानों पर राम कथा का आयोजन हो रहा है तो विभिन्न देशों की रामलीलाओं का मंचन भी किया जा रहा है। लता चौक पर लगी वीणा को भी लाइटिंग और फूलों के अद्भुत संगम से रौशन किया गया है। पूरे अयोध्या धाम में म्यूरल पेंटिंग और वॉल पेंटिंग के माध्यम से भगवान श्रीराम की जीवनी से जुड़े अलग-अलग अध्यायों का चित्रण किया गया है। राम की पैड़ी में सरयू आरती के साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ लेजर शो धार्मिक अलख जगा रही है। अयोध्या धाम का ऐसा कोई स्थान नहीं जो फूलों से या एलईडी लाइटिंग से रौशन न किया गया हो। यही नहीं, अयोध्या आने वाले विभिन्न हाईवे भी फूलों और लाइट से सजाए गए हैं। कुल मिलाकर अयोध्या में स्वर्ग जैसा अहसास हो रहा है। इसके साथ ही सूर्यास्त के बाद अयोध्या में दस लाख दीयों से दीपोत्सव की भी तैयारी की गई है। वहीं पूरे देश और दुनिया में भी दीपोत्सव ● शेष पेज 11 पर

रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में सम्मिलित होने के लिए आयोध्या निकले मंहथो का किया स्वागत

कैनविज टाइम्स संवाददाता

कुशीनगर । 22 जनवरी को श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर तीर्थक्षेत्र, अयोध्या नूतन मन्दिर में भगवान रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में सम्मिलित होने हेतु आयोध्या के लिए निकले बगहीकुटी धाम के महंथ श्री विश्वैश्वरनाथ जी, बड़वरहवा वैश्नवपुरकुटी महंथ रामनयन दास जी, बलकुडिया माधवपुर लालजी दास जी के पडरौना पहुंचने पर पूर्व केंद्रीय मंत्री कुंवर आरपीएन सिंह ने शाल ओढ़ाकर आगामी सफर के लिए शुभकामनाएं देते हुए आदरपूर्वक श्री अयोध्या धाम के लिए विदा किया। इस दौरान पडरौना सदर विधायक मनीष जायसवाल 'मंटू', जिला मंत्री विश्व हिन्दू परिषद पडरौना कुशीनगर गोरक्ष प्रांत सनत कुमार पाण्डेय, मुकेश त्रिपाठी जिला अध्यक्ष विश्व हिन्दू परिषद, विशाल सिंह, अविनाश, रवि शर्मा, चन्द्रशेखर दीक्षित, प्रिंस प्रताप सिंह, शमसेर मल्ल, गूड्डू मल्ल आदि लोग मौजूद रहे।

प्राण प्रतिष्ठा के पूर्व संध्या पर पडरौना मे किया गया भजन-कीर्तन व जागरण का आयोजन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

कुशीनगर ।श्रीरामजन्मभूमि तीर्थक्षेत्र अयोध्याधाम नूतन मंदिर में रामलला प्राणप्रतिष्ठा की पूर्व संध्या पर पडरौना नगर के जनरल बिपिन रावत नगर

भक्तिरस में डूबे रहे श्रद्धालु

मानस कॉलोनी स्थित श्री बुढ़िया माता मंदिर पर भजन कीर्तन एवं जागरण का भव्य आयोजन किया गया। पालिकाध्यक्ष विनय जायसवाल के नेतृत्व में आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य कलाकार सुरसंग्राम भोजपुरी गायक बृजेश बिरजू और गायिका सृष्टि दुबे की प्रस्तुति ने भक्तों के मन मोह लिए। राममय माहौल में शुरू जागरण कार्यक्रम में भीषण ठण्ड के बावजूद भी दोपहर से लेकर देर रात तक भक्तों का तांता लगा रहा और सभी जन झूमते हुए भक्तिरस में डूबते रहे। नपाध्यक्ष विनय जायसवाल ने कहा कि हमारे प्रभु राजाराम आज 496 वर्षों के बाद पुनः अपने महल में लौटने वाले हैं। इस ऐतिहासिक दिन को भव्य बनाने में सभी ने एकजुटता दिखाई है। कार्यक्रम में मौजूद हजारों की सँख्या में आये रामभक्त इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। 22 जनवरी के दिन प्राणप्रतिष्ठा के बाद दोपहर 1 बजे से बुढ़िया माता मंदिर स्थान पर विशाल भण्डारे की जानकारी उन्होंने मीडिया के माध्यम से सभी को दी साथ ही एक बार फिर सभी से आग्रह किया कि 22 जनवरी को हम सभी को अपने घरों और व्यापारिक प्रतिष्ठान में श्री राम ज्योति जलाकर प्रभु का स्वागत करना है। इस दौरान सुनीता देवी विमला गुप्ता आरोही जायसवाल संतोषी गुप्ता कौशल्या देवी मीना कुमारी प्रियंका देवी सुशील वर्मा नेहा गुप्ता सरोज देवी अहिल्या देवी संतोषी देवी सविता देवी रिंकी देवी प्रतिनिधि मनीष बुलबुल जायसवाल मंदिर के पुजारी वीरेंद्र सिंह रितेश जायसवाल अरविंद कुशवाहा सुनील जायसवाल अभय सिंह आर्यन शर्मा ब्रजेश शर्मा आलोक चौबे नीरज मिश्रा हरिमोहन जायसवाल साधु मद्धेशिया जयप्रकाश गुप्ता सहित हजारों की संख्या में महिलाएं उपस्थित रहीं।

आज नहीं खुलेंगी मांस-मछली की सभी दुकानें :उमेश मिश्रा

कुशीनगर कैनविज टाइम्स संवाददाता। जिला मजिस्ट्रेट उमेश मिश्रा ने बताया कि शासन के निर्देश के अनुक्रम में अयोध्या में दिनांक 22 जनवरी को भगवान श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इसके दृष्टिगत शासन द्वारा प्रदेश में मांस-मछली के विक्रय को पूर्णतया प्रतिबंधित किये जाने के निर्देश प्रदत्त हैं।उक्त के आलोक में जनपद कुशीनगर में 22 जनवरी दिन सोमवार को मांस-मछली की समस्त दुकानें बन्द रखी जायेगी। उक्त आदेश का कड़ाई से अनुपालन किया जाय।यह आदेश तत्काल प्रभाव से लागू होगा।

फुटबाल टीचर्स ने पुलिस को दी मात, सहारा ने युवा क्लब को हराया

लखनऊ कैनविज टाइम्स संवाददाता । हेमवंती नन्दन बहुगुणा मेमोरियल फुटबाल टूर्नामेंट के पहले दिन तीन मैच खेले गये। इसमें पहला मैच सहारा फुटबाल क्लब और युवा फुटबाल क्लब के बीच हुआ, जिसमें सहारा ने एक-शून्य से मैच को जीत लिया। वहीं दूसरे मैच में फूटीफाई ने पांच-तीन से मैच को जीता, जबकि टीचर्स फुटबाल क्लब ने पुलिस न्यू ब्वायज को 6-5 से हराया। सहारा और युवा क्लब के बीच हुए मैच में प्रथम हाफ में कोई भी टीम गोल नहीं कर सकी। दूसरे हाफ के दसवें मिनट में सहारा के निरंजन शाही ने एक गोल कर बढ़त बना ली। इसके बाद युवा फुल्बाल क्लब की टीम कोशिश करती रही, लेकिन कोई गोल नहीं कर सकी और सहारा की टीम ने एक-शून्य से मैच को जीत लिया। दूसरे मैच में फूटीफाई फुटबाल क्लब और मिलानी के बीच नौ मिनट तक कसम-कस चलता रहा। 10वें मिनट में मिलानी के मोहित ने एक गोल कर बढ़त बना ली। फूटीफाई के रजत ने एक गोलकर स्कोर को बराबर पर ला दिया। अंत तक यह स्कोर बनारहा। इसके बाद सूट आउट से फैसला हुआ, जिसमें फूटीफाई ने पांच-तीन से मैच को जीत लिया। तीसरा मैच टीचर्स फुटबाल क्लब और पुलिस न्यू ब्वायज के मध्य हुआ। इसमें पुलिस के न्यू ब्वायज के सचिन ने एक गोल कर बढ़त बना ली। खेल के दूसरे हाफ में पुलिस न्यू ब्वायज के दिव्यांश ने पुनः एक गोलकर अपनी टीम को दो-शून्य से आगे कर दिया। टीचर्स के खिलाड़ी विकास और अर्नव ने अंतिम समय में एक-एक गोल कर स्कोर को दो-दो की बराबरी पर कर दिया। इसके बाद पेनाल्टी सूट आउट से फैसला हुआ, जिसमें टीचर्स फुटबाल क्लब ने छह-पांच से मैच को जीत लिया।

एनबीआरआई में फूलों से बना प्रभु श्रीराम का मॉडल लोगों को खूब भाया

लखनऊ। लखनऊ स्थित राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान के परिसर में गुलाब और ग्लेडियोलस फूलों की प्रदर्शनी लगाई गई है। इस प्रदर्शनी में ही फूलों से बनाया गया प्रभु श्रीराम मंदिर का मॉडल दर्शकों को खूब आकर्षित कर रहा है। इस प्रदर्शनी में रंग-बिरंगे फूलों की क्यारियां बनाई गई जो दर्शकों के आकर्षण का केंद्र रही। डॉ. एस. के तिवारी ने बताया कि प्रदर्शनों के लिए 24 रनिंग चैलेंज शील्ड कप ट्राफियां सहित सरकारी, स्वायत्त निकाय, अर्द्ध सरकारी विभाग, महिलाएं, व्यक्तिगत, उत्पादक, नर्सरी के लोग एवं मालियों से विभिन्न वर्गों में प्रतियोगिता के लिए कुल 448 प्रविष्टियां मंगाई गई। प्रदर्शनी में मुख्य आकर्षण के रूप में नवनिर्मित राम मंदिर का फूलों से बना हुआ मॉडल है, जो दर्शकों के लिए खास आकर्षण का केंद्र रहा। पूरे देश में इन दिनों राम लहर चल रही है, जिसे देखते हुए फूलों से बनाया हुआ राम मंदिर का मॉडल आने वाले दर्शकों को खास आकर्षित कर रहा है। यहां आने वाले लोगों को ग्लेडियोलस एवं गुलाब से संबंधित तकनीकी जानकारी भी दी जा रही है।

चमक रहा है श्रीराम मंदिर दुल्हन सी सजी अयोध्या

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। एक नगरी है विख्यात अयोध्या नाम की, यही जन्मभूमि है परम पूज्य श्रीराम की... मन-मंदिर से गुलाब की पंखुड़ियों तक कण-कण में राम... देश में वंदन पधार रहे रघुनंदन... श्रीराम जन्मभूमि अयोध्या में प्रभु के पधारने का समय नजदीक आ चुका है, मंदिर का आंतरिक भाग स्वर्णिम आभा लेने लगा है। नयनाभिराम, लोकपावन भगवान श्रीराम का दर्शन इसी मंदिर परिसर में मिलेगा। चमक रहा है श्रीराम मंदिर, दिवाली सी जगमगा रही है अयोध्या, हे आर्यपुत्रों हे रामभक्तों तुम्हें अयोध्या बुला रही है... मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के आंगन को इस कदर फूलों से संवारा गया है कि इसकी शोभा देखकर गोस्वामी तुलसी दास द्वारा रचित रामचरित मानस का एक दोहा रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाइ... याद आ जाता है। श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के अलावा देश-दुनिया की कई शख्सियतें शामिल होंगी। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर राम मंदिर सहित पूरी

अयोध्या को बेहद खूबसूरती से सजाया गया है।राम मंदिर के गर्भ गृह से लेकर बाहरी परिसर तक को रंग-बिरंगे फूलों से सजाया गया है। मंदिर के स्तंभों, छतों और दीवारों पर फूलों से आकर्षक आकृतियां बनाई गई हैं, जो वातावरण को दिव्य और पवित्र बना रही हैं। इसके अलावा मंदिर के ऊपरी हिस्से को भी बेहद खूबसूरत अंदाज में संवारा गया है। प्राण प्रतिष्ठा समारोह से पहले राम मंदिर को रोशनी से सजाकर जगमग कर दिया गया है। रात में यह दृश्य किसी अजूबे से कम नहीं लगता। भव्य आयोजन से पहले मंदिर के साथ-साथ आसपास की जगहों की भी सुंदरता देखते बन रही है। राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा को लेकर देश ही नहीं, विदेश में भी रह रहे भारतीय लोगों में जबर्दस्त उत्साह है। पांच सदियों की तप-तपस्या, साध-साधना पूरी हो चली है। राम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ की अंतिम समिधा निर्णायक मंत्रोच्चार की प्रतीक्षा में है। रामभक्तों की भावना आकार ले रही है। रामकथा में उस प्रसंग का स्मरण

हे आर्यपुत्रों, हे रामभक्तों तुम्हें अयोध्या बुला रही है

मन-मंदिर से गुलाब की पंखुड़ियों तक कण-कण में राम

करें, जब प्रभु श्रीराम 14 वर्षों का वनवास व्यतीत कर सीता संग अपनी जन्मभूमि में लौटे थे। त्रेतायुग में श्रीराम के अयोध्या पुनरागमन का वही दृश्य कलिकाल में पुनः उपस्थित है। सुमन वृष्टि नभ संकुल, भवन चले सुखकंद। हर्षातिरेक से नभ और धरा एकमय हो गए हैं। भौतिक भवनों से लेकर मानवमानस के द्वार वंदनवार से सज गए हैं, गैरिक ध्वजाओं से धज गए हैं। प्रत्येक हृदय में अयोध्या विराज गई हैं। संपूर्ण भरतभूमि ही अयोध्या हो गई है। रामोत्सव-लोकोत्सव एकाकार हो गए हैं। आकांक्षाएं हिलोरें ले रही हैं। हनुमान गढ़ी से शंखघोष हो रहा है, सरयू की लहरें नृत्य कर रही हैं, कनक भवन स्वर्णिम आभा से प्रमुदित है, हमारे प्रभु श्रीराम आ रहे हैं। राम सभी के हैं।

उपेन्द्र महाराज रामलला को अर्पण करेंगे चांदी का चंवर

लखनऊ कैनविज टाइम्स संवाददाता । लखनऊ के चारबाग रेलवे स्टेशन पर बने रामभक्त सहायता केन्द्र पर रविवार को ग्वालियर के लश्कर से उपेन्द्र जी महाराज पहुंचे। अयोध्या जाने के लिए ट्रेन से चले उपेन्द्र जी महाराज को ट्रेन रुट डायवर्जन के कारण चारबाग रेलवे स्टेशन पर उतरना पड़ा। महाराज अपने साथ चांदी से बने चंवर को लेकर चले हैं, जिसे श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट को अर्पण करने की इच्छा रखकर अयोध्या को रवाना हुए हैं। ग्वालियर के लश्कर के उपेन्द्र जी महाराज ने कहा कि पूर्णतः चांदी से बने चंवर को अर्पण करने के लिए वह अयोध्या जा रहे हैं। जिसे श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय को सौंपेंगे। इसके साथ ही प्राण प्रतिष्ठा के बाद प्रभु श्रीराम के दर्शन पूजन करके ही वह अपने घर को लौटेंगे। उन्होंने अपने संदेश में कहा कि जहां रामकाज है, वहां राम विद्यमान हैं। श्रीराम के दर्शन पूजन के लिए अब मंदिर बन गया है। 23 जनवरी से श्रद्धालु अपने प्रभु श्रीराम के दर्शन को अयोध्या अवश्य ही जायें। राम नाम की माला का जाप करें, जिससे अलौकिक शक्ति मिलती है। राम का नाम अपने आप में एक शक्ति है। जिसके जपने मात्र से ही बिगड़े काम भी बन जाते हैं।

अपने राम के स्वागत को तैयार अयोध्या, अपने घरों में मनाएं दिवाली : मोहसिन रज़ा

लखनऊ कैनविज टाइम्स संवाददाता। उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री एवं भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता मोहसिन रज़ा ने अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा पर खुशी जाहिर करते हुए प्रदेशवासियों से इस दिन को दिवाली के रूप में मनाने की अपील की है। उप्र हज कमेटी के चेयरमैन मोहसिन रज़ा ने रविवार को जारी एक बयान में कहा कि राम भक्तों को लंबे समय से जिसका इंतजार था, वह घड़ी आ गयी है। अयोध्या अपने राम के स्वागत को तैयार है। सोमवार 22 जनवरी को रामलला की प्राण प्रतिष्ठा होगी। प्रभु राम के आगमन से पूर्व ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के प्रयासों से अयोध्या का चहुंमुखी विकास हुआ है। डबल इंजन की सरकार आगे भी राम नगरी के कायाकल्प के लिए कार्य करेगी। रज़ा ने कहा कि हमारे मुख्यमंत्री योगी ने अयोध्या पहुंच रहे श्रद्धालुओं से पैदल नहीं चलने की अपील की है। उन्होंने राम भक्तों के स्वास्थ्य की चिंता करते हुए यह अपील की है। इसलिए मेरी भी समस्त राम भक्तों से अपील है कि वे 22 जनवरी को अपने घर, आस-पास के मंदिरों और प्रतिष्ठानों को स्वच्छ रखें, दीपक जलाएं और उल्लास मनाएं।

दहेज लोभियों ने विवाहिता को घर से निकाला,मुक़दमा दर्ज

कैनविज टाइम्स संवाददाता

दूध मुंही बच्ची को जबरन उठा ले गये ससुरालीजन-पीड़िता

रहीमाबाद/लखनऊ। सरकार की लाख कोशिशों के बाद भी महिला उत्पीड़न के मामले थमने का नाम नही ले रहे है। एक ऐसा ही मामला रहीमाबाद में सामने आया जहां दहेजलोभियों ने मारुति कार व 6 लाख रुपयों की मांग कर विवाहिता को घर से निकाल दिया और दुधमुंही बच्ची को जबरदस्ती उठा ले गये। विवाहिता ने ससुरालीजनों पर रिपोर्ट दर्ज करा न्याय की गुहार लगाकर दुधमुंही बच्ची को दिलाए जानें की मांग की है। रहीमाबाद थाना क्षेत्र के ग्राम कुशलखेड़ा जमोलिया निवासिनी निधि प्रजापति का विवाह करीब ढ़ाई वर्ष पूर्व आशियाना थाना क्षेत्र के अंबिका बिहार बंगला बाजार निवासी अभिषेक प्रजापति के साथ हुआ था। शादी के बाद से ही विवाहिता को ससुरालजन दहेज को लेकर प्रताड़ित करने लगे थे। पीड़िता ने ससुरालीजनों पर दर्ज कराई रिपोर्ट में आरोप लगाया है कि विगत वर्ष 30 अगस्त को रक्षाबंधन पर्व के दिन अपने घर आयी थी। पति अभिषेक उसे घर के बाहर छोड़कर चला गया था। उसके चार दिन बाद उसका ससुर राजकुमार, सास सरिता, पति अभिषेक व देवर उसके मायके आकर उसके साथ मारपीट कर जबरदस्ती उसकी डेढ़ वर्ष की दुधमुंही बच्ची कृषा को उठा लें गये थे। उसके बाद ससुरालीजनों ने उसके भाई से 6 लाख रुपये लाने के साथ मारुति कार लाने की बात कह कर विवाहिता से कहा कि जब यह कार और नगदी लेकर आओगी तभी तुम्हें रखेंगे। विवाहिता ने दर्ज करायी गयी रिपोर्ट में आरोप लगाया है कि जब उसकी शादी हुई थी तब ससुरालीजनों ने यह कहकर 7 लाख रुपये लिये थे गाड़ी न दो हम बिजनेश में रुपये लगाएंगे। पीड़िता ने पति अभिषेक प्रजापति, सास सरिता, ससुर राजकुमार, देवर सौरभ प्रजापति, संजीव व ननद सुरभि पर जान से मरने की धमकी, मारपीट सहित दहेज उत्पीड़न का अभियोग दर्ज कराये जानें के साथ अपनी दुधमुंही बच्ची को दिलाए जाने गुहार लगाई है।

पांच वर्षों के संघर्ष के बाद राम मंदिर का ऐतिहासिक क्षण आया : केशव प्रसाद मौर्य

एजेंसी

अयोध्या। उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने रविवार को कहा कि 500 वर्षों के संघर्ष के बाद राम मंदिर की

पांच वर्षों के संघर्ष के बाद राम मंदिर का ऐतिहासिक क्षण आया : केशव प्रसाद मौर्य

हर घर को अयोध्या धाम और हर मंदिर को राम मंदिर बनाना है

प्राण प्रतिष्ठा का यह ऐतिहासिक क्षण आया है। 22 जनवरी को हमारे आराध्य प्रभु श्री राम अपने भव्य मंदिर में विराजेंगे, इस अवसर पर सभी भारतवासी हर घर को अयोध्या धाम और हर मंदिर को राम मंदिर बनाएं। वह रविवार को अयोध्या के कारसेवकपुरम पहुंचे और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक पुरुषोत्तम नारायण सिंह से भेंटकर उनका कुशलक्षेम जाना। उन्होंने पत्रकारों से कहा कि 14 जनवरी से 22 जनवरी तक प्रदेश में स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा के बाद घर-घर राम ज्योति जलाकर दीपावली मनाना है। हर ग्राम को अयोध्या धाम और हर मंदिर को राम मंदिर बनाना है। उन्होंने कहा कि अयोध्या आज सज धज कर तैयार है। अयोध्या को प्रभु श्री राम की प्रतीक्षा का फल मिलने वाला है। अयोध्या के साथ-साथ संपूर्ण जनमानस आनंदित है। एक तरफ जहां विपक्षी दलों ने राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के आमंत्रण को ठुकरा दिया, वहीं पूरा राष्ट्र राम के आने का इंतजार कर रहा है।

प्रभु श्रीराम आस्था का विषय, इसमें भी विपक्ष देख रहा राजनीति : स्वाती सिंह

लखनऊ कैनविज टाइम्स संवाददाता। अपने ही देश में पांच सौ वर्षों तक वनवास के बाद प्रभु श्रीराम अपने घर में प्रवेश कर रहे हैं। यह क्षण राजनीति का नहीं है। इसको जश्न के तौर पर हम सभी को मनाना चाहिए। कुछ लोग और राजनीतिक दल इसको भी राजनीतिक चश्मे से देखने की कोशिश कर रहे हैं। भाजपा इसको आस्था के रूप में देखती है। यह बातें भाजपा की वरिष्ठ नेता व पूर्व मंत्री स्वाती सिंह ने रविवार को कही। वह मायावती द्वारा कहे गये, 'ठीक नहीं है धर्म का राजनीतिकरण' का जवाब दे रही थीं। उन्होंने कहा कि राजनीति हमेशा धर्म युक्त होती है। जहां भी राजनीति में धर्म का प्रवेश नहीं होता, वहां पर राजनीति में सुचिता नहीं आ सकती। धर्म को कुछ लोग संकीर्णता से ले लेते हैं। वहीं कुछ राजनीतिक दलों को प्रभु श्रीराम के दर्शन करने में भी राजनीति दिख रही है। वे विशेष संप्रदाय की नाराजगी का विशेष ध्यान रखते हैं। स्वाती सिंह ने कहा कि अभी हम सभी को मिलकर जश्न मनाना चाहिए। इस समय प्रभु श्रीराम की नगरी सज चुकी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और योगी आदित्यनाथ पल-पल की खबर ले रहे हैं। सोमवार को प्रभु श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा हो जाएगी। इससे पहले अयोध्या पूरी तरह सज चुकी है। इसका नतीजा है कि वहां पर पर्यटकों की संख्या भी बढ़ गयी है।

श्रीराम का विरोध करने वाले साधु-संत नहीं : योगगुरू रामदेव

अयोध्या। योग गुरू रामदेव ने कहा कि प्रभु श्रीराम टेंट से मंदिर में आ रहे हैं तो विवाद क्यों ? कुछ लोग बेवजह विवाद कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रभु श्रीराम का विरोध करने वाले साधु-संत नहीं हो सकते। वह रामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शामिल होने रविवार को अयोध्या पहुंचे हैं। बाबा रामदेव ने कहा कि हमारे लिए श्रीराम धर्म का विग्रह हैं। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा सांस्कृतिक आजादी का महापर्व है, सांस्कृतिक संविधान का उत्सव है। राम केवल हिंदू नहीं सभी के आराध्य हैं। राम का त्याग दुनिया के लिए आदर्श है। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर देश में चारों तरफ राममय माहौल है। उन्होंने कहा कि संपूर्ण विश्व में भारतीय संस्कृति का सूर्योदय हो रहा है और श्रीराम जन्मभूमि का संघर्ष विश्व का सबसे लंबा संघर्ष है। 500 वर्षों के सतत संघर्ष के बाद 22 जनवरी को अयोध्या में भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा का गौरवशाली दिन वैश्विक इतिहास के पन्नों में दर्ज होगा।

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा ऐतिहासिक क्षण, दीपोत्सव कर खुशी मनाएं : मेनका

विकसित भारत संकल्प यात्रा से वंचितों को मिल रहा लाभ

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सुलतानपुर । तीन दिवसीय दौरे पर पहुंची पूर्व केंद्रीय मंत्री व सांसद मेनका संजय गांधी रविवार को सुबह कादीपुर में कपाली महाराज की मौजूदगी में उनके कादीपुर आश्रम से निकली मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की विशाल शोभा यात्रा का आरती पूजन कर शुभारंभ किया। श्रीमती गांधी ने अयोध्या में हो रहे भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा को ऐतिहासिक क्षण बताया।श्रीमती गांधी ने कहा कि 500 वर्षों के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के कार्यकाल में ऐसा समय आया है कि अयोध्या में भगवान श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा होने जा रही है। उन्होंने कहा कि 22 जनवरी को जनपदवासी इस पुनीत अवसर पर अपने घरों की साफ-सफाई कर श्रीराम ज्योति प्रज्ज्वलित कर इस क्षण को दीपावली पर्व की तरह खुशी मनाएं। श्रीमती गांधी ने कहा कि जिले के तीर्थराज धोपाप, विजेथूआ महावीरन व सीताकुंड घाट पर 22 को रामलला के प्राण प्रतिष्ठा के दिन बड़ा आयोजन किया जाएगा।धोपाप में वह स्वयं उपस्थित रहेंगी।धोपाप में कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ 51हजार दीपों का प्रज्वलन किया जाएगा।श्रीमती गांधी रविवार को उमरी वह बिरसिंहपुर में पहुंची विकसित भारत संकल्प यात्रा में सम्मिलित हुई।उन्होंने कहा कि विकसित भारत संकल्प यात्रा ने सुल्तानपुर जिले के 926 गांव में भ्रमण कर 6 लाख 85 हजार लोगों से सीधा संपर्क करने का सफल प्रयास किया है।उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत 2047 तक विकसित व आत्मनिर्भर राष्ट्र बनने की ओर बढ़ रहा है। उन्होंने कहा वंचित पात्रों को योजनाओं का लाभ देने के लिए विकसित भारत संकल्प यात्रा की गाड़ी गांव-गांव पहुंच रही है।

आरएसएस के सरसंघचालक मोहन भागवत एवं सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले पहुंचे अयोध्या

एजेंसी

अयोध्या। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंचालक डॉ. मोहन भागवत एवं सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले अयोध्या पहुंच चुके हैं। आरएसएस कई सह सरकार्यवाह भी अयोध्या पहुंच चुके हैं। संघ के ये सर्वोच्च पदाधिकारी यहां श्रीरामलाल की प्राण प्रतिष्ठा में शामिल होने श्रीरामनगरी पहुंचे हैं। अयोध्या पहुंचने वालों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंचालक डॉ. मोहन भागवत के अलावा सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले भी शामिल हैं। ये दोनों रविवार को अयोध्या पहुंचे हैं। जबकि पूर्व सरकार्यवाह सुरेश उपाख्य भैय्याजी जोशी, सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल और अखिल भारतीय सम्पर्क प्रमुख रामलाल पहले से ही अयोध्या में हैं। इसके अलावा सह सरकार्यवाह सुरेश सोनी, अखिल भारतीय सह व्यवस्था प्रमुख अनिल भी अयोध्या पहुंच चुके हैं। इसके अलावा कई अन्य बड़े दायित्वधारियों की जल्दी ही अयोध्या पहुंचने की सूचना है। प्राण प्रतिष्ठा के कार्यक्रम में देशभर में आरएसएस के 11 क्षेत्रों के क्षेत्र संघचालकों तथा संघ से जुड़े विविध संगठनों के राष्ट्रीय अध्यक्षों के पहुंचने का सिलसिला जारी है। ज्ञातव्य हो कि आरएसएस के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर और सह प्रचार प्रमुख नरेन्द्र ठाकुर अयोध्या में मीडिया एवं श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के बीच समन्वय की भूमिका के साथ ही पत्रकारों से संवाद करते हुए दिख रहे हैं। व्यवस्था से जुड़े कार्यों को संभालने वाले स्वयंसेवकों और कार्यकर्ताओं को भी दिशा निर्देश दे रहे हैं। इसके अलावा संघ से जुड़े से समवैचारिक संगठनों में स्वदेशी जागरण मंच से आर सुन्दरम, अधिवक्ता परिषद से श्रीनिवास मूर्ति, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से डॉ. राजशरण शाही, अडालारासन, बिट्ठल दुघाप्पा कांबले, महादेव गायकवाड़, गुरुचरण सिंह गिल, हिन्दुस्थान समाचार बहुभाषी न्यूज एजेंसी से अरविन्द मार्डीकर, सहकार भारती से दीनानाथ ठाकुर, फिस से बाल देसाई, ग्राहक पंचायत से नारायण भाई साह, भारतीय मजदूर संघ से हिरण्यमोय पाण्डया, भारत विकास परिषद से गजेन्द्र सिंह सन्धू एवं कुलविन्दर, विवेकानन्द केन्द्र से बालकृष्ण, आरोग्य भारती से डॉ. राकेश पण्डित, साहित्य परिषद से सुशील त्रिवेदी, सेवा भारती से पन्नालाल जी भंसाली, सक्षम से एस. गोविन्द राज समेत अन्य विविध संगठनों के अखिल भारतीय अधिकारियों को आमंत्रित किया गया है, जिनके श्रीरामनगरी अयोध्या पहुंचने का सिलसिला जारी है।

विकसित भारत यात्रा के दौरान अब्बास नगर में बांटे गए प्रशस्ति पत्र

प्रधान सुनील के हाथों कम्बल पाकर जरूरतमंदों के खिले चेहर

कैनविज टाइम्स संवाददाता

नगराम , लखनऊ। रविवार को विकसित भारत संकल्प यात्रा का आयोजन ग्राम पंचायत गढ़ा के मजरा अब्बास नगर में किया गया । कार्यक्रम की शुरुआत विद्यायक के द्वारा दीप प्रज्वलित कर माँ सरस्वती वंदना के साथ शुभारंभ किया गया, कार्यक्रम में नुक्कड़ नाटक व नृत्य छोटे बच्चों के द्वारा प्रस्तुत किये गए । तत्पश्चात ग्राम प्रधान सुनील पटेल ने एक हजार लोगों से अधिक जरूरतमंदों को कम्बल वितरण किया। मुख्य अतिथि एवं अतिथि अंगवस्त्र व माला पहनाकर स्वागत किया। गढ़ा के मजरा अब्बास नगर में पहुंचे मुख्य अतिथि के रूप में मोहनलालगंज विधायक अमरेश रावत ने सरकार द्वारा चलाई जा योजनाओं की जानकारी दी, इस दौरान प्रधान संघ अध्यक्ष देवेंद्र कुमार सिंह, विनोद वर्मा , ब्रजेश वर्मा , सूर्य कुमार द्विवेदी , अभिषेक दीक्षित ,ग्राम प्रधान समेसी अशोक कुमार ,सहायक कृषि विकास अधिकारी मोहनलालगंज सोमनाथ यादव, ,अध्यापक सुबोध ,शैलेंद्र वर्मा, केपी सिंह ग्राम प्रधान सुनील पटेल एवं समस्त ग्रामवासी सहित महिलायें बच्चे उपस्थित रहे । बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए और उन्हें पुरस्कार देकर ग्राम प्रधान द्वारा सम्मानित किया गया सभी आये अतिथिगणों को ग्राम प्रधान द्वारा अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया गया । बेहतर प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों को प्रमाण पत्र सोमनाथ यादव कृषि विकास अधिकारी मोहनलालगंज जी के द्वारा देकर सम्मानित किया गया । अंत मे आये सभी ग्राम प्रधानो के द्वारा शपथ दिलाकर कार्यक्रम का समापन किया गया।

गणतंत्र दिवस से सपा प्रदेश में मनाएगी पीडीए पखवाड़ा

लखनऊ। समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के निर्देश पर 26 जनवरी से सपा उत्तर प्रदेश की सभी विधानसभा क्षेत्रों में पीडीए पखवाड़ा का आयोजन करेगी। जिले के सभी विधानसभा क्षेत्रवार संगठन के पदाधिकारी तथा प्रमुख कार्यकर्ता व नेतागणों की बैठक बुलाकर तिथिवार सेक्टरवार कार्यक्रम तैयार कर सुनिश्चित करेंगे कि किस-किस तारीख को किस स्थान पर पीडीए जन पंचायत होगी।गणतंत्र दिवस पर संविधान निर्माता बाबा साहब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर द्वारा निर्मित भारतीय संविधान में उल्लेखित सामाजिक न्याय की अवधारणा को ताकत देने के लिए दलित, पिछड़े, अल्पसंख्यक समाज एवं पीड़ित लोगों की बैठक की जाएगी। इसके साथ ही सभी विधानसभा क्षेत्रों में कार्यक्रम सम्पन्न कराने हेतु जिला संगठन के दो-दो पदाधिकारियों को जिम्मेदारी दी जाये, ताकि वह अपने आवंटित विधानसभा क्षेत्र में पीडीए जन पंचायत हेतु जोन प्रभारी, सेक्टर प्रभारी, ब्लाक प्रभारी, नगर अध्यक्ष, विधानसभा अध्यक्ष तथा कमेटी एवं समाजवादी सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के स्थानीय कलाकारों को लेकर कार्यक्रम कराकर लोकसभा चुनाव हेतु समाजवादी पार्टी के पक्ष में मतदान करने हेतु नागरिकों को जागरूक करें। जिस सेक्टर में कार्यक्रम होंगे उसकी सूची जिलाध्यक्ष व महानगर अध्यक्ष द्वारा प्रदेश कार्यालय को भेजी जायेगी।भाजपा सरकार में पिछड़े, दलित, अल्पसंख्यकों एवं महिलाओं के ऊपर किए जा रहे पक्षपात, शोषण, उत्पीड़न तथा सामाजिक अन्याय के विरूद्ध पीडीए जन पंचायत के माध्यम से लोकतंत्र और संविधान को मजबूती से लागू कराना समाजवादी पार्टी का लक्ष्य है।

छुट्टी के दिनों में लोकबंधु अस्पताल की आकस्मिक चिकित्सा एवं सुविधाओं का बुरा हाल

खस्ता हाल देख मुख्य चिकित्सा अधीक्षक ने लगाई फटकार

गंभीर मरीज समेत तीमारदार परेशान साफ सफाई पर भी उठता सवाल

कैनविज टाइम्स संवाददाता

कानपुर रोड एलडीए कालोनी स्थित लोकबंधु अस्पताल में छुट्टी के दिनों में आपातकालीन सेवाओं से लेकर परिसर की साफसफाई तक प्रभावित रहने की शिकायतें लगातार प्रकाश में आने के बावजूद अस्पताल प्रसाशन समस्याओं को दूर करने में असफल साबित होता दिखाई दे रहा है।छुट्टी के दिनों में इमरजेंसी में आने वाले मरीजों और उनके तिमारदारों को नाना प्रकार की मुश्किलें झेलनी पड़ रही हैं।

पीड़ितों की माने तो छुट्टी के दिनों में जब अधिकारी अनुपस्थित होते हैं तो कड़ाके की ढंड में आने वाले मरीजों को गरम कंबल के लिये घंटों इंतजार करना पड़ता है साथ ही इमरजेंसी से जांच के लिये भेजे गये मरीजों को भी घंटों इंतजार करवाया जा रहा है।आरोप है कि छुट्टी के दिनों में खून व अन्य जांचों पर लगाए गये कर्मचारी अपनी जिम्मेदारी को भूल ड्यूटी के समय अपना समय कहीं और दे रहे हैं जिस कारण जांच कराने आये मरीज विभाग में बैठ कर घंटों तक इंतजार कर रहे हैं।परिसर के भीतर वार्डो के शौचालयों की साफसफाई के नाम पर खानापूर्ति की जा रही है।अस्पताल कर्मियों की मरीजों और तिमारदारों के साथ व्यवहारिकता भी सवालों के घेरे में है।

रविवार को दो महिला मरीजों को लेकर पहुंचे तिमारदारों ने भी खासी फजीहत झेली।अस्पताल स्टाफ का गैरजिम्मेदाराना व बेरुखा रवैया घंटों तक झेलने के बाद सुनवाई न होता देख तिमारदारों ने भारतीय पत्रकार एवं मानवाधिकार परिषद से संपर्क किया और मदद मांगी।भारतीय पत्रकार एवं मानवाधिकार परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष जितेन्द्र बहादुर सिंह ने मुख्य चिकित्सा अधीक्षक को फोन द्वारा मामले से अवगत कराया।मामले का संज्ञान लेकर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डा0 राजीव दीक्षित संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष जितेन्द्र बहादुर सिंह के साथ लोकबंधु अस्पताल पहुंचे और अनियमितताओं के लिये जिम्मेदार कर्मचारियों को फटकार लगाई।अधिकारी की डांट सुनने के बाद अस्पताल परिसर की साफसफाई के साथ सारी सेवाएं सुचारू रूप से संचालित हो सकीं।

36वीं राज्य ताइक्वांडो चैम्पियनशिप ट्रॉफी लखनऊ टीम ने जीते 20 स्वर्ण, 6 रजत और 5 कांस्य

दूसरा स्थान औरैया ने और तीसरा स्थान गोंडा ने हासिल किया

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। 36वीं उत्तर प्रदेश राज्य ताइक्वांडो चैम्पियनशिप 2024 का सफलतापूर्वक उत्तर प्रदेश ताइक्वांडो एसोसिएशन द्वारा आयोजित की गई। श्री पवन सिंह चौहान, एमएलसी अंतिम दिन के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे और कर्नल संजीव कौल और श्री शंभूनाथ, उप प्रधानाचार्य केंद्रीय विद्यालय अलीगंज, विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित हुए।

तकनीकी अध्यक्ष- ग्रैंड मास्टर पीटर जगतियानी, राष्ट्रीय खिलाड़ी-मनोज वर्मा (राष्ट्रपति पदक से सम्मानित), राजेश कुमार सिंह, मनोज कुमार शर्मा, सुश्री संयोगिता सिंह चौहान और प्रचार विंग- के अध्यक्ष ग्रैंडमास्टर गौरव सिंह चौहान भी चैंपियनशिप के दौरान उपस्थित थे।एम एल सी श्री पवन सिंह चौहान और ग्रैंड मास्टर जिम्मी जगतियानी ने सभी विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये।एमएलसी श्री पवन सिंह चौहान ने खिलाड़ियों को प्रेरित करते हुए उन्हें संबोधित किया और उन्हें युद्ध कला के रूप में और आत्मरक्षा के लिए भी ताइक्वांडो के महत्व के बारे में बताया, लड़कों और लड़कियों दोनों के लिए इसे सीखना और ऐसी प्रतियोगिताओं में भाग लेना और खेल के क्षेत्र में आगे बढ़ना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि ताइक्वांडो का खिलाड़ी कभी भी आत्महत्या के बारे में सोच नही सकता है।

ग्रैंड मास्टर डॉ जिम्मी आर जगतियानी ने बताया कि इस राज्य चैंपियनशिप के स्वर्ण और रजत पदक विजेता 2024 की आगामी राष्ट्रीय चैंपियनशिप में उत्तर प्रदेश राज्य का प्रतिनिधित्व करेंगे।

मेदांता ने मोहनलालगंज में शुरू किया कलेक्शन सेंटर

कैनविज टाइम्स संवाददाता

मोहनलालगंज।लखनऊ, रविवार को मोहनलालगंज कस्बे में मेदान्ता ने ब्लड कलेक्शन सेंटर की शुरुआत की जिसका उद्घाटन एसोसिएट डारेक्टर एंव हेड एमरजेंसी मेडीसिन एंव ट्रामा सेंटर मेदांता हॉस्पिटल लखनऊ के लोकेश गुप्ता एंव रीजनल मैनेजर अनंत कुमार ने किया।डाक्टर आरपी सिंह ने बताया कि रविवार मोहनलालगज कस्बे में कालेबीर मंदिर के पास मेदांता ने लैब कलेक्शन सेंटर खोला है।इस सेंटर का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र के लोगो को भी लाभ देना है।जिसमे काफी कम कीमत पर ब्लड के पैकेज रखे गए है।और इसी सेंटर के माध्यम से मेदांता डॉक्टरों द्वारा ऑनलाइन ओपीडी शुरू कर मरीजों को देखा जाएगा।डाक्टर आरपी सिंह ने बताया कि पूरे प्रदेश में 39 सेंटर खोले गए है।साथ ही आठ सौ कलेक्शन सेंटर प्रदेश के विभिन्न जिलों के कस्बों में खोले जा रहे है।

फर्नीचर के गोदाम में आग लगने से लाखों का सामान जलकर राख

ठाकुरगंज। कोतवाली क्षेत्र के भुहर पुल के करीब रेलवे पटरी के पास उस वक्त हड़कंप मच गया। जब एक फर्नीचर के गोदाम में आग लग गई। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप ले लिया जिसके चलते लाखों का सामान जलकर राख हो गया। पीड़ित अनिल पुत्र केशव ने जानकारी देते हुए बताया है। कि आग लगने से चंद मिनट पहले वह घर पहुंचा था। आज पत्नी का एग्जाम था जिसको लेकर अलीगंज एग्जाम दिलवाने गया था। वापस आकर घर के बाहर अलाव के आगे हाथ सेक रहा था। तभी गोदाम के अंदर शॉर्ट सर्किट के चलते आग लग गई। इसके बाद पुलिस को सूचना दी गई मौके पर पहुंची ठाकुरगंज पुलिस ने दमकल की गाड़ी को सूचित किया। आग इतना विकराल रूप ले चुकी थी कि तीन गाड़ी दमकल की सहायता से आग पर काबू पाया गया हालांकि तब तक पीड़ित का लाखों रुपए का सामान जलकर राख हो गया था। पीड़ित के अनुसार 60 लाख रुपए की संपत्ति जलकर राख हो गई है। पीड़ित अनिल ने बताया के बालाजी मॉडल हाउस के नाम से हंस खेड़ा थाना पारा क्षेत्र में शोरूम है। और गोदाम भुहर के पास बनाया हुआ है। यहां माल बनाकर शोरूम पहुंचने का काम किया जाता था। इस गोदाम के ऊपर खुद अपनी फैमिली के साथ रहता था। हालांकि आगजनी के चलते जानहानी का कोई नुकसान तो नहीं हुआ है। मगर फर्नीचर का गोदाम जलकर राख हो गई।

त्रिवेणी नगर में निकाली गई राम शोभा यात्रा

लखनऊ, कैनविज टाइम्स संवाददाता। त्रिवेणी नगर में राम शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। यात्रा की शुरुआत दक्षिणमुखी हनुमान मंदिर से की गई। जिसमें बड़ी संख्या में भक्त शामिल हुए। डीजे पर तेज धुन में बज रहे रामभजन के बीच यात्रा में शामिल भक्त झूमते नजर आए। यात्रा में शामिल मनमोहक झांकी को देख लोग गदगद हो उठे। आचार्य अमित कृष्ण ने बताया कि शोभा यात्रा का आयोजन समाजसेवी मनोज डिंगर, अमृता और दिवेश पांडेय के विशेष प्रयास से आयोजित हुई। त्रिवेणी नगर के विभिन्न मार्गों से होकर गुजरी यात्रा का जगह जगह स्वागत किया गया। यात्रा के दौरान लोगों को प्रसाद का वितरण भी किया गया।

जरूरतमंदों में हुआ कंबलो का वितरण

लखनऊ, कैनविज टाइम्स संवाददाता। बढ़ती सर्दी को देखते हुए सरल केयर फ़ाउंडेशन ट्रस्ट और बाबू सुंदर सिंह फ़ाउंडेशन की तरफ़ से नंदौली गाँव में ज़रूरतमंद लोगो कंबल वितरण किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि बाबू सुंदर सिंह इंजीनियरिंग कॉलेज की वाइस चेयरपर्सन ने कहा कि ज़रूरतमंद लोगो की मदद में हम लोग अभियान चला कर कंबल वितरण कर रहे है लखनऊ और बहराइच में अलग अलग जगहों पर 10 हज़ार से अधिक लोगो को कंबल दिये जा चुके है। वहीं सरल केयर फ़ाउंडेशन की अध्यक्ष रीता सिंह ने कहा कि लगातार 5 साल से नंदौली गाँव में कंबल वितरण का कार्यक्रम चल रहा है, इस साल तीन सौ कंबल का वितरण किया गया।

सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

लखनऊ, कैनविज टाइम्स संवाददाता। राजधानी के गोमतीनगर एक्स्टेंशन में आम जनता और भारतीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष त्रयंबक नाथ त्रिपाठी के सहयोग से सड़क सुरक्षा जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें लोगों को हेलमेट, सीट बेल्ट लगाने के फायदे के बारे में जानकारी के साथ ही सड़क सुरक्षा और यातायात नियमों के बारे में बताया और लोगों को शपथ दिलाई की दुर्घटना से बचाव के लिए कभी शराब पीकर गाड़ी नहीं चलाएंगे, मोबाइल पर बात नहीं करेंगे साथ ही यदि कोई दुर्घटना घटती है तो पीड़ित की मदद करेंगे।

एक वारंटी गिरफ्तार, भेजा जेल

मोहनलालगंज।मोहनलालगंज पुलिस ने विद्युत चोरी के मुकदमें में न्यायालय से एनबीडब्ल्यू वारंट जारी होने के बाद से फरार चल रहे अभियुक्त को रविवार को गिरफ्तार कर न्यायालय ?में पेश किया,जहां से उसे जेल भेज दिया गया।इंस्पेक्टर आलोक राव ने बताया 2017 में दर्ज विद्युत चोरी के मुकदमें न्यायालय से एनबीडब्ल्यू वारंट जारी होने के बाद भी फरार चल रहे अभियुक्त रमेश निवासी डेहवा थाना मोहनलालगंज को पुलिस टीम ने दाबिश देकर उसके घर से गिरफ्तार किया।अभियुक्त राजा कहार को न्यायालय में पेश किया गया,जहां से उसे जेल भेज दिया गया।

सुंदरकांड पाठ के साथ राम भजन का आयोजन

लखनऊ, कैनविज टाइम्स संवाददाता। आलमबाग स्थित कृष्णा देवी गर्ल्स डिग्री कॉलेज की प्राचार्या प्रोफ़ेसर सारिका दुबे के मार्गदर्शन में महाविद्यालय में 14 से 21 जनवरी के मध्य अयोध्या में प्रस्तावित भगवान श्री राम की प्राण प्रतिष्ठा संबंधी आयोजन के दृष्टिगत विशेष सफाई का अभियान चलाया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय में प्राचार्या के कुशल नेतृत्व में सुंदरकांड का पाठ तथा राम भजन का आयोजन किया गया।

अमांवा जंगल में हो रहा प्रतिबंधित जीवों का शिकार

वंरक्षकों के पहुंचने पर भाग खड़े हुए शिकारी

सरोजिनी नगर । राजधानी से सटे अमांवा के विशाल जंगल में कई दिनों से लगातार प्रतिबंधित जीवों का शिकार किया जा रहा है। तमाम ग्रामीणों के साथ-साथ हिंदू जागरण मंच के जिला अध्यक्ष सूर्यभान विश्वकर्मा द्वारा लगातार इसकी सूचना वन विभाग के अधिकारियों को दी जा रही थी इसी के तहत रविवार को जब एक बार फिर से शिकारी जंगल के पिपरसंड, रूप खेड़ा क्षेत्र में शिकार के लिए अपना जान लगाए हुए थे तभी इसकी जानकारी वंरक्षकों को दी गई। बताते हैं कि जब तक वनरक्षक मौके पर पहुंचते तब तक किसी प्रकार भनक प्रकार शिकारी भाग खड़े हुए।

भारतीय किसान यूनियन (अराजनौतिक) की ज़ोन कमेटी का गठन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोसाईंगंज। क्षेत्र के महमूद गांव में रविवार को भारतीय किसान यूनियन (अराजनैतिक) संगठन के जोन अध्यक्ष विनोद कुमार नगर निगम के नेतृत्व में जोन का गठन किया गया। जिसमें अजय सिंह रावत को महा सचिव व विनोद चौधरी ,शिवकुमार,बबलू रावत ,ललित पासवान,जसवंत रावत को उपाध्यक्ष, करन यादव को संगठन मंत्री, धर्मदास को संगठन महामंत्री, वीर पाल लोधी को मीडिया प्रभारी,सोनू यादव को सलाहकार, बैजनाथ को कोषाध्यक्ष व हरीश पाल,रामू रावत,चेतराम,लाईक यादव,राम चरन ,चंद्र शेखर,रमेश,अखिलेश मिश्रा,रमाकांत पाल, दिनेश पाल , विपिन शाहू,अखिलेश रावत,शिव शंकर रावत,मैनू रफीक अहमद,राजकुमार रावत,संतोष रावत,सुरेश चंद यादव,मनोज कुमार,सुनील रावत आदि को सचिव व सैकड़ों संख्या में सदस्य बनाए गए। आगामी होने वाली दिनाँक 27,28,29 जनवरी को राष्ट्रीय चिंतन शिविर के बारे में चर्चा की गई ।

जानकीपुरम में खुला डेंजफॉक्स मैन्स वियर का एक्सक्लूसिव शोरूम, विधायक ने किया उद्घाटन

पहला शोरूम तेलीबाग में खुलने के बाद अब जानकीपुरम में खुला दूसरा शोरूम

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। राजस्थान में तेजी से उभरती हुई पुरुष परिधानों की जानी मानी निर्माता कम्पनी डेंजफॉक्स मैन्स वियर के एक्सक्लूसिव शोरूम का उद्घाटन रविवार को जानकीपुरम में हुआ। पहला शोरूम तेलीबाग में खोलने के बाद डेंजफॉक्स मैन्स वियर का यह दूसरा शोरूम है। ब्रांड डायरेक्टर जीतेंद्र यादव ने बताया कि इस एक्सक्लूसिव शोरूम में पुरुष परिधानों की नार्मल, कैजुअल और फार्मल ड्रेसेज उपलब्ध रहती हैं। हर सीजन के परिधानों के साथ शर्ट, पैंट, टाउजर एक्सक्लूसिव फाइबर्स से तैयार किए जाते हैं जो पुरुषों की सुंदरता में चार चांद लगाते हैं। स्टोर के सभी परिधानों की स्टिचिंग इन हाउस होती है जो कपड़ों को लम्बी आयु प्रदान करती है। लखनऊ में और स्टोर्स खोलने की बात करते हुए कहा कि जल्द ही राजधानी सहित उत्तर प्रदेश में ऐसे 70 एक्सक्लूसिव शोरूम खोले जाएंगे और पैन इंडिया में 350 से ज्यादा स्टोर्स अगले वित्तीय वर्ष तक खोले जाएंगे। फ्रैंचाइजी प्रमुख ज्योति कृष्णा ने कहा कि ओपनिंग पर 70 प्रतिशत तक ऑफर्स उपलब्ध है। उद्घाटन मौके पर विधायक जयदेवी कौशल ने कहा कि जानकीपुरम में इस शोरूम के खुलने से स्थानीय निवासियों को दूर जाने की आवश्यकता नहीं रह जाएगी और ब्रांडेड कपड़े किफायती दामों में मिल सकेंगे। वहीं उद्घाटन समारोह में डेंजफॉक्स कम्पनी राजस्थान से जरनल मैनेजर सुधांशु शर्मा, सेल्स मैनेजर दिनेश शर्मा तथा मार्केटिंग हेड धीरज शर्मा मौजूद रहें।

दुष्कर्म के फरार आरोपी को बंथरा पुलिस ने किया गिरफ्तार

सरोजिनी नगर। बंथरा थाना क्षेत्र के भदोई निवासी दुष्कर्म के आरोपी अजीत उर्फ जीतू कहार पुत्र स्वर्गीय रामचंद्र (40) को बंथरा पुलिस ने रविवार सुबह कटीबगिया तिराहे के पास से गिरफ्तार कर न्यायालय भेज दिया। आरोपी के खिलाफ पीड़ित द्वारा बंथरा थाने में 18 जनवरी को लिखित शिकायत देते हुए मुकदमा दर्ज कराया गया था कि आरोपी ने पीड़ित की पुत्री उम्र करीब 20 वर्ष जो की दिमागी रूप से कमजोर है उसको गुटका लाने के लिए भेजा था और जब वह वापस आई तो उसे जबरन घर के अंदर बंद करके उसके साथ दुष्कर्म जैसे जघन्य अपराध को अंजाम देने के साथ-साथ जान से मारने की धमकी दी गई थी। बंथरा पुलिस द्वारा दुष्कर्म के साथ एससी एसटी एक्ट व जान से मारने का मुकदमा लिखा गया था। सहायक पुलिस आयुक्त कृष्णानगर विनय कुमार द्विवेदी द्वारा मामले की जांच पड़ताल करने के बाद गिरफ्तारी के लिए बंथरा पुलिस को आदेशित किया गया जिसके बाद रविवार सुबह करीब 10:00 आरोपी को बंथरा पुलिस द्वारा मुखबिर की सूचना पर कटीबगिया तिराहे के पास से गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

एसीपी व प्रभारी निरीक्षक ने कोतवाली में पीस कमेटी की बैठक

एसीपी ने बैठक में मौजूद लोगो को साइबर ठगी से बचाव के लिये किया जागरूक

अयोध्या में मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा व गणतंत्र दिवस शांतिपूर्ण मनाने के लिये मोहनलालगंज कोतवाली में पीस कमेटी की बैठक हुयी आयोजित

कैनविज टाइम्स संवाददाता

मोहनलालगंज।श्रीराम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम व गणतंत्र दिवस के दृष्टिगत सहायक पुलिस आयुक्त मोहनलालगंज राधा रमण सिंह की अध्यक्षता व प्रभारी निरीक्षक आलोक राव की मौजूदगी में रविवार को मोहनलालगंज कोतवाली में पीस कमेटी की बैठक आयोजित हुयी।

एसीपी राधा रमण सिंह ने कहा कि यह शांतिप्रिय क्षेत्र है और पूर्ण विश्वास है कि श्रीराम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा व गणतंत्र दिवस को सभी लोग मिलकर प्रेम और भाईचारे के साथ मनाएंगे। इसके लिए परस्पर सहयोग व सतर्कता बरतने की आवश्यकता है।उन्होंने बैठक में मौजूद धर्मगुरूओ,प्रधानो,व्यापारियो समेत दोनो समुदायों के प्रबुद्धजनों से अनुरोध किया कि लोगों को विशेषकर युवाओं को प्रेरित करें कि परस्पर मेल जोल और भाईचारे के साथ इस उत्सव को मनाएं। कोई भी ऐसा कार्य न करें, जिससे अप्रिय स्थिति उत्पन्न हो।प्रभारी निरीक्षक आलोक राव ने कहा प्रदेश स्तर पर शराबबंदी है और मीट की दुकाने बंद रहेगी। हमारे यहां कोई भी समस्या नहीं है सभी वर्ग के लोग सही तरीके से आयोजन का उत्सव मना रहे हैं। अगर कोई भी अप्रिय घटना घटित करता है तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।उन्होने बैठक में मौजूद लोगो से अपील की सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक व भड़काऊ पोस्ट डालने वालो की सूचना तत्काल पुलिस को दे।?से लोगो के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही की जायेगी।एसीपी राधा रमण सिंह ने बैठक में मौजूद लोगो को साइबर ठगी से बचाव के लिये जागरूक करते हुये कहा कि कई बार ऑनलाइन ठगी का शिकार होने पर लोग इसलिए किसी को नहीं बताते कि उनका मजाक बनेगा। लेकिन ऐसा नहीं करना चाहिए और अगर कोई किसी तरह से ऑनलाइन ठगी का शिकार हो जाता है तो उसे तुरंत हेल्पलाइन नम्बर 1930 पर शिकायत करनी चाहिए।साइबर ठगी से बचने के लिये झूठे प्रलोभन से बचे।फर्जी जाब के आफर से सावधान रहे।असत्यापित लिंक पर क्लिक न करें।फ़ेसबुक पर अज्ञात लोगो से फ्रेंड रिक्वेस्ट स्वीकार ना करें।एसीपी ने बैठक में मौजूद प्रधानो, व्यापारियो समेत संभ्रान्त लोगो से सुरक्षा के दृष्टिगत दुका?नो,घरो,कार्यालयो में सीसीटीवी कैमरे लगवाये जाने की अपील भी की।बैठक में व्यापार मंडल अध्यक्ष अजय पांडे,प्रधान ललित शुक्ला,प्रधान शंकर यादव,सभासद हिमांशु तिवारी समेत काफी संख्या में व्यापारी,प्रधान,धर्मगुरू व संभ्रान्त लोग व उपनिरीक्षक मौजूद रहें।

शिक्षा जीवन का पासवर्ड: प्रोफ़ेसर सुधाकर वर्मा

सम्मान से प्रगति में लगते हैं पंख : निर्मल वर्मा, नन्दकिशोर कैलाश चन्द्र महाविद्यालय टिकरा में हुआ प्रतिभा सम्मान व युवा महोत्सव

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सीतापुर। सम्मान से दायित्व बोध होता है। आन्तरिक ऊर्जा जाग्रत होती है। प्रगति में पंख लगते हैं। ये बातें नन्द किशोर कैलाश चन्द्र डिग्री कालेज, टिकरा बिसवां, सीतापुर में वार्षिकोत्सव एवं युवा सम्मान समारोह में बतौर मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक निर्मल वर्मा ने छात्र छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कही। महाविद्यालय के प्रबंध निदेशक/शिया पी.जी. कालेज लखनऊ में जूलॉजी डिपार्टमेंट के प्रोफ़ेसर डॉ. सुधाकर वर्मा ने युवाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि शिक्षा जीवन का पासवर्ड है। इससे जीवन की हर मुसीबत का ताला खुलता है इसलिए इस पासवर्ड को कभी मत भूलो। महाविद्यालय डायरेक्टर संतोष वर्मा ने बताया महाविद्यालय में बीएससी मैथ्स, बीएससी बायोलॉजी, कॉमर्स कोर्स संचालित है। संस्थापक राकेश वर्मा ने मेधावी छात्रों को पुरस्कृत करते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक निर्मल वर्मा ने छात्र छात्राओं को स्मार्टफोन वितरित किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर जयवीर सिंह हिन्दी विभाग अध्यक्ष आरएमपी डिग्री सीतापुर के द्वारा की गई। इस दौरान कॉलेज के बीएससी मैथ बीएससी बायोलॉजी और कॉमर्स के मेधावी छात्रों को गोल्ड सिल्वर और कांस मेडल देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर डॉक्टर देवेंद्र कश्यप ' निडर' प्रवक्ता चंद्रशेखर प्रजापति, कवयित्री पिंकी प्रजापति, अरविंद प्रजापति, रामसागर राजपूत, डॉ राहुल वर्मा डॉक्टर पुष्पेंद्र सिंह, जनता इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य मोहम्मद इदरीश ,अर्जुन वर्मा ,प्रमोद चौरसिया, श्री राम चंपा देवी के प्रधानाचार्य राकेश शुक्ला बृजमोहन शकुंतला देवी इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य दिवाकर वर्मा उप प्रधानाचार्य सतीश चंद्र वर्मा पुष्पेंद्र राकेश लवकुश कमलेश भार्गव राजकीय इंटर कॉलेज सांडा के प्रधानाचार्य जगत नारायण सिंह मौलाना आजाद डिग्री कॉलेज के डॉ प्रदीप वर्मा, एस जे डी इन्टर कालेज मो मकसुद आदि तमाम लोग मौजूद रहे।

एक कर्मयोद्धा जिसने विश्वपटल पर दी भारत को नई पहचान

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सीतापुर1925 में उत्तर प्रदेश के सीतापुर जिले में एक मध्यम वर्गीय परिवार में जन्मे डॉ रामबक्श सिंह के नवाचार और बायो गैस प्रौद्योगिकी में अतुलनीय सहयोग को नहीं भुलाया जा सकता।बायो गैस प्रौद्योगिकी में अग्रणी कार्य के प्रति प्रतिबद्धता उनके जीवट को दर्शाती है।1950 कि दशक में वैज्ञानिक डॉ सिंह 9 सितंबर 1957 ग्राम रामनगर सीतापुर उत्तर प्रदेश में विश्व के प्रथम गोबर गैस प्लांट को स्थापित कर विश्व पटल पर भारत के हस्ताक्षर किए।दिनांक 3 अक्टूबर 1957 में प्रकाशित लेख नेशनल हेराल्ड समाचार पत्र में प्रदर्शित अक्षय ऊर्जा में एक अभूतपूर्व युग की शुरुआत को चिन्हित किया । डॉ रामबक्श सिंह ने 25 वर्षों से अधिक समय तक भारत सरकार की सेवा की और विश्व को अपने एक अनूठे अविष्कार को प्रदान किया।वह अमेरिकी कृषि विभाग में सेवानिवृत्त के पश्चात शामिल हो अंतरराष्ट्रीय मिशनों में योगदान प्रदान किया। 1960 में डॉ सिंह ने भारत के उत्तर प्रदेश के अजीतमल(इटावा)में एशिया के प्रथम गोबर गैस अनुसंधान केंद्र की स्थापना कर लगभग 16 वर्षों तक केंद्र प्रभारी की जिम्मेदारी पूर्ण निष्ठा के साथ

सरकार कब देगी सच्चा सम्मान जिसके थे वह हकदार

निभाई।जून 1972 में यूनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका में पहले गोबर बायो गैस प्लांट की स्थापना की,इनकी काबिलियत को अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त हुई।विश्व स्तर पर प्रसिद्ध वैज्ञानिक,इंजीनियरिंग संस्थानों के साथ-साथ अनुसंधान सहित प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय निकायों ने भी उनके इस उत्कृष्ट कार्य की प्रशंसा की।डॉ रामबक्श सिंह भारत के नए उभरते वैज्ञानिकों के प्रेरणा स्रोत अवश्य होंगे,बायो ऊर्जा के क्षेत्र में डॉ साहब के योगदान को अबतक नजरअंदाज करने वाली सरकारों से अपेक्षा है कि इस महान विभूति को कब मिलेगी सच्ची श्रद्धांजलि, इन्हें कब मिलेगा सच्चा सम्मान जिसके थे वह हकदार?

35 सौ दीपों से करेंगे स्वागत, प्राण प्रतिष्ठा के साक्षी बनेंगे कैदी

मीरजापुर। अयोध्या में भव्य राम मंदिर के उद्घाटन की तैयारियों के बीच राम भक्त अपने भगवान का स्वागत करने में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते हैं। भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा के आयोजन के लिए सभी अपने तरीक़ेसे भागेदारी करने की कोशिश में हैं। इस कड़ी में मीरजापुर जेल में बंद क़ैदी भी 35 सौ मिट्टी के दीपकों से अपने आराध्य भगवान राम के स्वागत की तैयारी कर रहे हैं।

मिशन जय भीम कोचिंग सेंटर का हुआ शुभारंभ

मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे जिला अध्यक्ष मिशन जय भीम सुशील कनौजिया

कैनविज टाइम्स संवाददाता

मोहम्मदी-खीरी। जनपद खीरी की तहसील मोहम्मदी के अंतर्गत ग्राम अखिराजपुर मिशन जय भीम सामाजिक संगठन के द्वारा कोचिंग सेंटर का शुभारंभ किया गया जिसमें मिशन जय भीम जनपद लखीमपुर खीरी के जिला अध्यक्ष सुशील कुमार कनौजिया मिशन जय भीम कोचिंग सेंटर का फीता काटकर कोचिंग सेंटर को आरंभ कराया उन्होंने बताया की मिशन जय भीम की प्राथमिकता शिक्षा की ओर है अभी प्रथम कोचिंग का उद्घाटन किया गया है आज से धीरे-धीरे ग्रामीण स्तर पर निशुल्क कोचिंग सेंटर मिशन जय भीम सामाजिक संगठन के द्वारा निशुल्क खोले जाएंगे जहां पर कक्षा 01 से कक्षा 08 तक बच्चों को निशुल्क शिक्षा दी जाएगी और सप्ताह में एक दिन भारतीय संविधान को भी पढ़वाया जाएगा उन्होंने बताया की राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेंद्र पाल गौतम जी लगातार मिशन जय भीम को देश में प्रदेश में मजबूत कर रहे हैं उन्हीं के निर्देश अनुसार की मिशन जय भीम जनपद लखीमपुर खीरी में सामाजिक मुद्दों एवं अत्याचार उत्पीड़न के खिलाफ व अपनी विरासत को बचाने को लेकर लगातार मैदान में अपनी आवाज को शासन व प्रशासन तक पहुंच रहा है मिशन जय भीम लगातार जनपद लखीमपुर खीरी में कार्य कर रहा है चाहे वह अंबेडकर पार्क सौंदरीकरण का हो या अंबेडकर पार्क से अवैध कब्जा हटवाने का हो या समाज पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाने का हो सभी सामाजिक मुद्दों पर लगातार अपने समाज की आवाज को शासन प्रशासन तक पहुंचाने का कार्य जिला अध्यक्ष सुशील कुमार कनौजिया कहां की मैं अपने समाज व कार्यकर्ताओं की समस्या को अपनी समस्या समझता हूं जिसमें उपस्थित रहे रोहित गौतम जिला उपाध्यक्ष सन्दीप राज बी पी गौतम शिक्षक पंकज वर्मा शिवानी देवी दीनदयाल गौतम आदि तमाम कार्यकर्ता मौजूद रहे।

ठंड के अटैक से बचने को सीएचसी अधीक्षक डॉ अमित बाजपेई की जनता से अपील

कैनविज टाइम्स संवाददाता

फरधान-खीरी। उत्तर प्रदेश में कड़ाके की ठंड को लेकर फरधान सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र प्रभारी डॉ0 अमित बाजपेई की तरफ से जनता से ठंड से बचने के लिए अपील की गई है उन्होंने कहा है कि आप लोग ऐसे समय में अपने घर से कम ही बाहर निकलें। जिले में कड़ाके की ठंड को लेकर इस वक्त लोग काफी परेशान है। यहां शाम ढलते ही चारों तरफ कोहरा ही कोहरा देखने को मिलने लगता है वही सुबह होते ही सर्द हवाएं चलने लगते हैं। जिसकी वजह से लोगों को कड़ाके की ठंड का सामना करना पड़ता है वहीं जिले में पड़ रही कड़ाके की ठंड को लेकर सीएचसी अधीक्षक डॉ अमित बाजपेई ने जनता से अपील की है कि ऐसे वक्त में आप लोग अपने घरों से कम से कम बाहर निकले अगर आप अपने घर से बाहर निकलते हैं तो याद रखें कि आप अपने चेहरे पर गमछा या फिर मफलर लगाए अगर आप बाइक चलाते हैं तो हेलमेट जरूर लगाए जिससे आपको ठंड कम लगे वही अपने पशुओं को बचाने के लिए आप लोगों को अपने घर के ही अंदर बांधे जिससे उनको ठंड ना लगे। इन बातों का आप लोग विशेष ध्यान दें, ठंड लगने पर सरकारी अस्पताल में पहुंचकर तत्काल इलाज कराये। सीएचसी अधीक्षक डॉ अमित बाजपेई ने कहा है कि क्षेत्र में जगह-जगह पर अलाव के इंतजाम किए गए हैं। वहीं प्रशासन के तरफ से गरीब व जरूरतमंद लोगों को कंबल बांटने का काम भी किया जा रहा है।ऐसे में जो लोग गरीब हैं और उनके पास ठंड से बचने के लिए कोई इंतजाम नहीं है तो वह कंबल जरूर ले सकता है वहीं अगर किसी व्यक्ति को ठंड लग गई है तो वह लापरवाही बिल्कुल ना बरतें ऐसे में उसे नजदीकी सरकारी अस्पताल में पहुंचना चाहिए जहां पर

आम जन मानस को बताये ठंड से बचाव के उपाय

सर्दी, जुकाम व गले में खराश के मरीज बढ़े - डॉ अमित बाजपेई

डॉक्टर के द्वारा अपना इलाज करवाना चाहिए। जरा सी लापरवाही आपको बड़ी मुसीबत में डाल सकती है।फरधान सीएचसी अधीक्षक डा. अमित बाजपेई ने बताया कि हांड कपाने वाली सर्दी से बुजुर्गों को सावधान रहने की जरूरत है। सर्दी में नशे सिकुड़ जाती हैं और खून का जमाव होता है। सीएचसी अधीक्षक डॉ. अमित बाजपेई ने बताया कि इन दिनों ठंड बढ़ने लगी है। ऐसे में लोग एहतियात बरतें। बुखार के लक्षण होने पर तुरंत चिकित्सक से जांच करवाएं। थोड़ी सी लापरवाही बीमार कर सकती है। बुखार के साथ-साथ लोगों को गले में खराश की शिकायत हो रही है। सीएचसी अधीक्षक डॉ. अमित बाजपेई ने बताया कि अस्पताल में ज्यादातर मरीज सर्दी, जुकाम, खांसी के आ रहे हैं। उन्हें दवाइयां देकर सर्दी से बचने के उपाय बताए जा रहे हैं उनका कहना है कि इस मौसम में लोगों को खानपान के साथ कपड़े पहनने में लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए फिलहाल उपचार से ज्यादा ठंड से बचाव ही उपचार है। उन्होंने बताया कि गर्म कपड़े पहने,सिर में टोपी लगाएं,ठंडी चीजों और बासी भोजन से परहेज करें। ताजा एवं सुपाच्य भोजन लें वही हाड़ कंपा देने वाली ठंड से बचने के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र फरधान में आने वाले मरीज व उनके तीमारदारों के लिए अलाव की व्यवस्था की गई है जो निरन्तर जल रहे है। बचाव के उपाय बतलाते हुये चिकित्सक ने कहा कि बच्चों को पूरे बाजू के ऊनी कपड़े पहनाएं, बच्चों को ठंडी चीज खाने के लिए न दें, दूध आदि पेय पदार्थ भी गुनगुना करके दें, बुजुर्ग सुबह-शाम बाहर टहलने न निकलें, हल्की धूप के बाद हल्का ऊनी कपड़ा पहनकर निकलें,जब बाहर टहलने निकलें तो जहां तक संभव हो मास्क लगा लें, धूल और धुआं से बचकर रहें इससे फ़ेफड़ों में संक्रमण की संभावना कम होगी, हृदय और उच्च रक्तचाप वाले मरीज विशेष सतर्क रहें।

फायदे का तिलिस्मी राज,कायदे कानून को ताक पर रख हो रही वसूली

साहबों के लिए कामधेनु बन गई ,पत्रकारों की चहलकदमी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सकरन(सीतापुर)। कलमकारों की गाँव गाँव के घोटालों के राज के खुलासों से उच्चाधिकारियों की जांच के नामपर गर्म होती दिख रहीं जेबें।किसी भी फर्जीवाड़े के खुलासे में जाँच के नामपर गर्म हो रहीं जांचकर्ताओं की जेबें।बाजार गर्म इस बात की दिख रही है कि क्षेत्र में गठरियों घोटालों के सौदे कौड़ियों के दाम में हो रहे।सरकारी धन को चपत लगाने के अनेकों माध्यमों में मुख्यमंत्री आवास योजना,मनरेगा,राज्यवित्त हो या समूहों के द्वारा किए जा रहे शौचालय केअर टेकर में,पोषण उठान के साथ ही नौनिहालों के राशन के घोटाले में बस एकतरफा लूट ही लूट दिख रही,क्षेत्र की कोई भी इंटरलॉकिंग ,बंधा निर्माण,चकबन्ध निर्माण हो या मनरेगा हॉट बाजार,अमृत वाटिका,मुख्यमंत्री फलोद्यान में वृहद वृक्षारोपण,हैंडपम्प रिबोर, कहीं भी देखलो सबकुछ लेसा पोता ही मिलेगा।शिकायत इत्यादि होने पर जांच के नाम पर सिर्फ व सिर्फ होता खुल्लमखुल्ला सौदा।मामले कैसे भी हों एक से बढ़कर एक रिश्वतखोरी के कारनामें दिख रहे आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को अन्नप्राशन में मिलने वाली राशि में बंदरबाँट की प्रक्रिया संचालित।योगीराज के सुशासन को पलीता लगाने के सुअवसरों में आंगनबाड़ी में रजिस्टर्ड होनहार भारत के भविष्यों को मिलने वाले भोजन के बर्तनों की खरीद में फर्जी बिल बाउचर की कारस्तानी खूब दिख रही।ऐसे हालातों में पत्रकारों की लेखनी ही विभागीय जांचकर्ता अधिकारियों के लिए बन गई कामधेनु जो सरकारी धन को लपेटकर बैंकों में कर रहे जमा।

कुशभवनपुर हुआ राममय, अतिथियों के सत्कार में जुटे स्वयंसेवक

सुलतानपुर। रेलवे स्टेशन भी प्राण प्रतिष्ठा के इतिहास का साक्षी बन रहा है। पूरा कुशभवनपुर राममय हो गया है। भगवामय स्टेशन पर कई प्रांतों से ट्रेन से साधु-संत यहां पहुंच रहे हैं। जिन्हें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पदाधिकारियों की ओर से उनका स्वागत कर उन्हें अयोध्या पहुंचाया जा रहा है। अयोध्या में 22 जनवरी को होने वाले प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को लेकर स्थानीय रेलवे स्टेशन पर देश के विभिन्न हिस्सों से साधु-संत आ रहे हैं। ऐसे में रेलवे स्टेशन का मुख्य द्वार फूल मालाओं से सजा हुआ है। पूरा परिसर भगवा कपड़े से सजाया गया है। आने वाले साधू-संतों के ठहरने के लिए वर्तमान पुरुष प्रतीक्षालय को रेड मैट लगाकर सुसज्जित किया गया है। वहीं अधिकारी विश्रामगृह की भी साज-सज्जा की गई है। स्टेशन परिसर में स्वागतकर्ता हेतु कुर्सी एवं एक नंबर प्लेटफार्म पर मैट लगाकर सुसज्जित किया गया है। रूपेश सिंह ने बताया कि देश के विभिन्न हिस्सों से रेलवे स्टेशन पहुंच रहे साधु संतों का भव्य स्वागत किया जा रहा है। अब तक 250 के आसपास साधु संतों को अयोध्या पहुंचाया जा चुका है।

सैकड़ो गायों की संदिग्ध मौत की जांच हेतु प्रधानमंत्री को लिखा पत्र

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखीमपुर-खीरी। मामला जनपद खीरी की सदर तहसील के ग्राम बांसखेड़ा का है जहां जिला परिषद की जमीन पर बनी गौशाला में लगभग तीन सौ से अधिक गौवंशों की संदिग्ध मृत्यु होने के बाद भी खीरी प्रशासन अभी तक प्रभवी संज्ञान नहीं लिया और ना ही किसी दोषी के खिलाफ ठोस कार्रवाई की गई है जिससे अपराधियों के हौसले काफी बुलंद है शिकायतकर्ता मोहित वर्मा पुत्र राकेश कुमार वर्मा निवासी ग्राम बांसखेड़ा खीरी ने प्रधानमंत्री को प्रेषित पत्र के माध्यम से कहा है कि ग्राम बांसखेड़ा के प्रधान संतोष वर्मा पुत्र जितेंद्र वर्मा द्वारा उक्त गौशाला की देख-रेख अपने लोगों द्वारा करवाई जाती है जहां गौशाला के नाम पर आने वाली भारी भरकम धनराशि को गोलमाल करते हुए गोवंशियों की सुविधाओं एवं स्वास्थ्य, खान-पान आदि व्यवस्थाओं पर उचित ध्यान नहीं दिये जाने के कारण भूख प्यास से व्याकुल गोवंश पशु निरंतर अपना दम तोड़ रहे हैं जिनके शवों को दर्जनों की संख्या में एक साथ एक ही गड्ढे में दबाकर ऊपर से मिट्टी भरकर दबवा दिया जाता है अथवा गोवंशीय पशुओं के शव मछली के चारे के रूप में पड़ोस की मछली तालाब में प्रयोग करते हुए अमानवीय कृत्य किया जा रहा है उपरोक्त संदर्भ में स्थानीय अधिकारियों को सूचना देने के पश्चात भी जिम्मेदार अधिकारियों द्वारा सिर्फ लीपा पोती कर गोवंशों के साथ हुई क्रूरता एवं शासकीय धन की लूट खसोट पर कोई भी प्रभावी कार्यवाही नहीं की गई है बल्कि गोवंशों की निर्मम हत्या व उनके नाम पर आने वाले भारी भरकम बजट की लूट खसोट बदस्तूर निरन्तर जारी है।

उपरोक्त अभिषेक बिंदुओं की शिकायत करते हुए शिकायतकर्ता ने प्रधानमंत्री से पशुओं की निर्माण हत्या एवं शासकीय धन के भ्रष्टाचार पर प्रभावी कार्यवाही किए जाने की मांग करते हुए दोषियों के खिलाफ विधिक करवाई का अनुरोध किया है।

गाजियाबाद में नौ राज्यों की 41 प्रतिभाएं हुई सम्मानित

एजेंसी

गाजियाबाद। 'समाज कल्याण फ़ेडरेशन ऑफ इंडिया' नामक संस्था ने रविवार को अपने स्थापना दिवस एवं 75वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में नौ राज्यों की 41 प्रतिभाओं को सम्मानित किया। संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं वरिष्ठ पत्रकार जितेन्द्र बच्चन ने बताया कि उन प्रतिभाओं का सम्मान किया गया है, जो देश के अलग-अलग राज्यों के विकास में चुपचाप अपनी भागीदारी निभा रहे हैं। इनके हुनर से संपूर्ण राष्ट्र सशक्त हो रहा है। इस सम्मान से वे अब और प्रोत्साहित होंगे और समाज को एक प्रगतिशील दिशा मिलेगी। विजयनगर प्रताप विहार सेक्टर-12 स्थित एसबीआर एकेडमी में आयोजित सम्मान समारोह की मुख्य अतिथि गाजियाबाद की मुख्य आयकर आयुक्त आईआरएस डॉ शुचिस्मिता पलाई रहीं। जबकि विशिष्ट अतिथियों में दिल्ली के आठ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने वाले वरिष्ठ साहित्यकार सुरेशपाल वर्मा 'जसाला' और कन्या महाविद्यालय कासगंज (उप्र) की प्रिंसिपल डॉ रानू शर्मा शामिल रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता शिक्षाविद एवं समाजसेवी संजय बग्गा ने की। मुख्य अतिथि डॉ शुचिस्मिता पलाई ने कहा कि समाज के संपूर्ण विकास के लिए सामाजिक संस्थाओं की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। हमें खुशी है कि शिक्षा को बढ़ावा देने के क्षेत्र में एसकेएफआई अग्रणी भूमिका निभा रहा है। संस्था के राष्ट्रीय निदेशक विजय कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि सम्मान समारोह में नौ राज्यों की कुल 41 प्रतिभाओं को चार कैटेगरी में राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान, साहित्य गौरव, समाज गौरव, पत्रकार भूषण सम्मान से नवाजा गया है। इससे पहले शिवा डांस स्कूल की छात्राओं ने गणेश वंदना की। अतिथियों का स्वागत किया गया। उसके बाद राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली, उत्तराखंड, हरियाणा, बिहार और झारखंड से आए शिक्षा, नृत्य, साहित्य, संगीत, स्वास्थ्य, पर्यावरण, पुलिस एवं पत्रकारिता से जुड़ी शख्सियतों का पुष्प गुच्छ, शॉल, स्मृति चिन्ह व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

वन विभाग की मिलीभगत से शारदानगर वनरेंज में हो रही देशी आम के हरे पेड़ों की कटान

दक्षिण खीरी वन प्रभाग की शारदानगर रेंज के गांव तेंदुआ का मामला

कैनविज टाइम्स संवाददाता

फूलबेहड-खीरी। जब किसी किसान द्वारा किसी भी प्रतिबंधित पेड़ को गलती से छू लिया जाता है तो वन महकमा के यही जिम्मेदार वन अधिनियम के अंतर्गत उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कार्यवाही कर देते हैं लेकिन साफ तौर पर देखा जा सकता है कि इस तरह से लकड्कट्टे बड़े पैमाने पर देशी आम के प्रतिबंधित हरे पेड़ों की बाग का कटान कर रहे हैं।

वही जब विभाग द्वारा जानकारी ली गई तो बताया गया कि इन सभी पेड़ों का परमिट जारी हुआ है जरा सोचिए अब इसी तरह वन विभाग लकड्कट्टो को हौसला बढ़ाते हुए उन्हें हरे पेड़ों का परमिट जारी करेगा तो भला कैसे पृथ्वी को हरा-भरा बनाया जा सकता है।

जहां एक तरफ सरकार धरती को हरा भरा बनाए रखने के लिए लाखों-करोड़ों रुपए खर्च करती है वहीं वन विभाग के उच्च अधिकारी चंद पैसों के लालच में पड़कर हरे भरे पेड़ों का परमिट जारी कर देते हैं लकड्कट्टे निडर होकर हरे पेड़ों को काटते रहते हैं।

कलमी की आड़ में देशी आम के पेड़ों पर चला दिया आरा

दक्षिण खीरी वन प्रभाग की शारदानगर रेंज में आम के देसी पेड़ों के कटान में वन विभाग बड़ा खेला खेल रहा है। आम के देसी पेड़ों को कलमी आम बताकर रवन्ना जारी कर रहा है। इसी रवन्ने की आड़ में शातिर लकड्कट्टे धड़ल्ले से देसी आम के हरे भरे पेड़ों का सफाया कर रहे हैं। इस गोरखधंधे की शिकायत पर वन अधिकारियों की कार्रवाई मौका मुआयना तक सीमित रहती है प्रदेश सरकार ने सेमल समेत विभिन्न प्रजातियों के पेड़ों के कटान के लिए छूट दी थी। इसमे कलमी आम के पेड़ों को भी छूट में रखा गया। बशर्ते कलमी आम के पेड़ की ढुलाई के लिए रवन्ना बनवाना होता है, जबकि देसी आम के पेड़ कटान के लिए परमिट आवश्यक है। इसी के चलते कलमी की आड़ में देसी आम के पेड़ों का कटान किया जा रहा है। हाल ही में फूलबेहड़ के तेंदुआ गांव में एक आम की बाग को काट डाला गया लेकिन वन विभाग पेड़ों का संरक्षण नहीं कर पाते पूरा मामला जनपद खीरी के शारदानगर वनरेंज के फूलबेहड थाना क्षेत्र तेंदुआ गांव का है यहां के संबंध में जब फॉरेस्टर फूलबेहड संजय आजाद से देशी आम की बाग कटान मामले में जानकारी चाही गई तो उन्होंने बताया कि बाग के सभी पेड़ों का परमिट जारी हुआ है।

(संजय आजाद, फॉरेस्टर फूलबेहड, शारदानगर वनरेंज)

राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान से सम्मानित हुए ज्ञानेन्द्र रवि

साहित्य, शिक्षा व समाज में उत्कृष्ट योगदान के लिए गाजियाबाद में हुआ सम्मान

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सुलतानपुर। राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफ़ेसर ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह रवि को शिक्षा, साहित्य व समाज क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान उन्हें समाज कल्याण फ़ेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा गाजियाबाद के एसबी रिकार्डस एकेडमी में रविवार को आयोजित एक भव्य समारोह में प्रदान किया गया। समारोह के विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार सुरेश पाल वर्मा जसाला, एमिटी विश्वविद्यालय के आईटी प्रबंधक सुधांशु श्रीवास्तव व कार्यक्रम संयोजक जीतेन्द्र बच्चन ने सम्मान पत्र व स्मृति चिन्ह भेंटकर ज्ञानेन्द्र को सम्मानित किया। मुख्य अतिथि गाजियाबाद की मुख्य आयकर आयुक्त शुचिस्मिता पलाई ने कहा कि यह सम्मान देश का प्रतिष्ठित और चर्चित सम्मान है। समारोह में नौ राज्यों से आई विभिन्न क्षेत्रों की इकतालीस प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह रवि साहित्य, शिक्षा, समाजसेवा व पत्रकारिता आदि क्षेत्रों में दर्जन भर से अधिक सम्मान पा चुके हैं। वे पिछले एक दशक से जनपद में विभिन्न संस्थाओं के साथ विविध क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं। ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह रवि को मिलने वाले इस महत्वपूर्ण सम्मान पर महाविद्यालय परिवार सहित जनपद के शिक्षकों, साहित्यकारों व समाजसेवियों ने प्रसन्नता व्यक्त की है।

मनाई गई पूर्व विधायक स्व. इंद्रभद्र सिंह की पुण्य तिथि

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सुल्तानपुर। इसौली के पूर्व विधायक स्व. इंद्रभद्र सिंह की रविवार को मायंग में 25वीं पुण्य तिथि मनाई गई। यहां गोंडा के भाजपा सांसद बृजभूषण शरण सिंह पहुंचे। उन्होंने कहा विधायक बनना, सांसद बनना या उससे आगे कुछ बनना हम इसे व्यक्तित्व का पैमाना नहीं मानते। उन्होंने कहा हमने ऐसे भी विधायक देखे हैं, ऐसे भी जनप्रतिनिधि देखे हैं कि परिचय देना पड़ता है ये साहब ये रहे हैं। तमाम ऐसे लोग हैं जो प्रधान हुए नहीं, विधायक का चुनाव लड़े ही नहीं जो भी आया सबके प्रति अपनी सद्भावना रखते रहे। उनका कद हमेशा समाज में ऊंचा बना रहा।

बृजभूषण शरण सिंह ने स्व इंद्रभद्र सिंह के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इंद्रभद्र सिंह एक जिंदा दिल इंसान थे। उन्होंने सदा अपने क्षेत्र के लोगों की दिल खोलकर मदद व सहयोग किया है। उन्होंने कहा कि आज हमें काफी खुशी है बाबू इंद्रभद्र सिंह के दोनों बेटे चंद्रभद्र सिंह सोनू व यशभद्र सिंह मोनू अपने पिता के बताए मार्गों पर चल रहे हैं और क्षेत्र के लोगो की मदद कर रहे हैं। आपको बताते चलें कि स्व. इंद्रभद्र सिंह की शहर के दीवानी चैराहे के पास 21 जनवरी सन 1999 को बम से मारकर हत्या कर दी गई थी। उसके बाद उनकी विरासत को उनके बड़े बेटे चंद्रभद्र सिंह ने संभाला। हर साल चंद्रभद्र सिंह सोनू और उनके भाई यशभद्र सिंह मोनू अपने पिता की पुण्यतिथि को मनाते हैं। इस कार्यक्रम में क्षेत्र के हजारों लोग शामिल होकर बाबू इंद्रभद्र सिंह को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। सोनू सिंह के आवास पर हर बार की तरह इस बार भी 16 जनवरी से पांच दिवसीय श्री अथर्ववेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें भद्र परिवार के साथ साथ हजारों लोग शामिल हुए।

विक्रांत वर्मा की मौत का मामला

सुल्तानपुर। विक्रांत वर्मा की हत्या को चार दिन बीत गए और अबतक केस दर्ज नहीं हुआ। परिवारीजन हत्या का आरोप लगाते हुए थाने में तहरीर दे रहे। लेकिन आरोप है कि पुलिस आत्महत्या का केस दर्ज कराने के लिए परिजनों को बाध्य कर रही। ऐसे में पिता ने एसपी से मिलकर उनसे मांग किया है कि हत्या का मुकदमा दर्ज कराया जाए।

मामला कोतवाली देहात थानाक्षेत्र के दुबेपुर कस्बे का है। जहां बीते 17 जनवरी की सुबह फार्म हाउस के बगल 24 वर्षीय विक्रांत वर्मा की जली हुई लाश पाई गई थी। पिता रमेश वर्मा के मुताबिक उनका पुत्र विक्रांत वर्मा 15 जनवरी की रात लगभग 10 बजे दिल्ली से घर आया था। अगले दिन वह शाम लगभग 6 बजे घर से बकरी फार्म पर गया था।उसके बाद देर तक न आने पर विक्रांत की पत्नी ने अपने मोबाइल नंबर 8858218080 से विक्रांत को फोन किया। तो विक्रांत द्वारा बताया गया की अभी घर आऊंगा परंतु रात 10 बजे तक वापस नहीं लौटने पर उसका फोन उठना बंद हो गया। थोड़े समय बाद उसका मोबाइल स्विच ऑफ हो गया। पीड़ित पिता ने बताया कि जब सुबह हम अपने खेत स्थित बकरी फॉर्म पर गए तो देखा कि विक्रांत की अलाव के पास कोयला सरीखे जली हुई लाश पड़ी थी। उसकी बाइक भी वहीं खड़ी थी। पीड़ित पिता ने दी तहरीर में कहा है कि शंका है कि अज्ञात व्यक्तियों ने उसके बेटे की हत्या करके सबूत मिटाने के लिए शव जला दिया है। हमने दाह संस्कार के बाद कोतवाली देहात थाने में प्रथम सूचना दर्ज करने के लिए दरख्वास्त दिया किंतु कोई कार्यवाही नहीं हुई। ग्रामीणों ने बताया कि जिस तरह युवक का शव अलाव के बगल मिला उससे तो लग रहा कि पहले विक्रांत की हत्या की गई और घटना को आत्महत्या का रूप देने के लिए शव को अलाव के बगल लिटाकर किसी ज्वलनशील पदार्थ से जला दिया गया। बताया जाता है कि पुलिस ने युवक के मोबाइल समेत कई वस्तुओं को जांच के लिए कब्जे में लिया है। युवक का पोस्टमार्टम पैनल द्वारा हुआ है। इस मामले में एसपी ने जांचकर त्वरित कार्रवाई का आश्वासन दिया है।

युवक ने कनपटी पर दागी गोली, मौत

प्रेमिका से अनबन के बाद उठाया खौफनाक कदम

सुल्तानपुर। कादीपुर में झाड़ियों में युवक का शव संदिग्ध अवस्था मिलने से हड़कंप मच गया। प्रथम दृष्टया मामला आत्महत्या का प्रतीत हो रहा है। शव झाड़ियों के बीच पड़ा मिला है। स्थानीय लोगों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंचकर जांच कर रही है। घटना कादीपुर कोतवाली क्षेत्र के जवाहर नगर की है।

रविवार सुबह कादीपुर कोतवाली क्षेत्र के जवाहर नगर कस्बे में गांव निवासी संतोष केवट (24) पुत्र रामकेवल का शव झाड़ियों के बीच पाया गया। स्थानीय लोगों के अनुसार बच्चे क्रिकेट खेल रहे थे। गेंद झाड़ियों में आई तो बच्चे उसे लेने वहां पहुंचे तो शव देखकर बच्चे चीखने चिल्लाने लगे। इस पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। स्थानीय लोगों ने कादीपुर पुलिस को सूचना दिया। जिस पर पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच पड़ताल करते हुए शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। घटना स्थल पर देखा गया कि युवक की कनपटी पर बंदूक लगाकर टिगर दबाया गया था। मोबाइल मृतक युवक के हाथ में था। ऐसे में कयास लगाया जा रहा है कि प्रेमिका से बात करते हुए अनबन के बाद युवक ने आत्महत्या जैसा खौफनाक कदम उठा लिया है।कादीपुर कोतवाल अशोक कुमार सिंह ने बताया कि पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचकर जांच की गई है। पड़ताल मा ऐसा लग रहा है कि आशनाई के चलते युवक ने खुद पर गोलियां दागी हैं। डेड बॉडी को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर मामले में आवश्यक विधिक कार्रवाई की जा रही है।

पुलिस ने पाक्सो में वांछित युवक को जेल भेजा

अमेठी,थाना जामो पुलिस ने दुष्कर्म व पाक्सो एक्ट में वांछित एक युवक को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। पुलिस ने पकड़े गये युवक के खिलाफ मुकदमा दर्जकर जेल भेज दिया है। पुलिस अधीक्षक डॉ इलामारन जी के निर्देश पर स्थानीय पुलिस द्वारा क्षेत्र में अपराध एवं अपराधियों के धर पकड़ हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में रविवार को उप निरीक्षक संजीव कुमार मय हमराही द्वारा देखभाल क्षेत्र, चेकिंग संदिग्ध व्यक्ति, वस्तु, वाहन के दौरान मुखबिर की सूचना पर दुष्कर्म व पाक्सो एक्ट में वांछित कुलदीप पुत्र बुद्धराम निवासी कस्बा व थाना जामो इक्कीस वर्ष को उमर पुलिया से गिरफ्तार किया गया।थाना जामों पुलिस ने गिरफ्तार युवक को जेल भेज दिया है।

अहोरवा भवानी समेत दर्जनों मंदिरों में श्रीराम चरित मानस पाठ शुरु

अमेठी। अयोध्या धाम में श्रीराम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में क्षेत्र के देवालयों पर शिवालयों पर धार्मिक आयोजनों की धूम मची हुई है।रविवार को आदिशक्ति पीठ मां अहोरवा भवानी के दरबार में श्रीराम चरित मानस पाठ आरम्भ हुआ।संगीतमयी श्रीराम चरित मानस पर प्रभु श्रीराम के भक्तों में गजब का उत्साह देखने को मिला और मंदिर के भवन को रंग बिरंगी आधुनिक लाइटों के साथ ही फूलों से सजाया गया है जो कि आकर्षण का केन्द्र बिंदु बना हुआ है।तहसील तिलोई क्षेत्र के दर्जनों ग्राम पंचायतों में स्थित प्राचीनतम मंदिरों में भगवान श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा के पूर्व रविवार की सुबह से ही श्रीराम चरित मानस पाठ आरम्भ हुआ। इन मंदिरों पर भक्तों की कतारें लगी रही। आधुनिक लाइटों के साथ ही रंग बिरंगे गुब्बारों से मंदिरों को सजाया गया है।पन्हौना रियासत के राजा व मंदिर के व्यवस्थापक राजा सुरेन्द्र बहादुर सिंह ने बताया कि अयोध्या धाम में श्रीराम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में श्रीराम चरित मानस पाठ आयोजित किया गया है जिसका समापन सोमवार को होगा और प्राण प्रतिष्ठा वाले दिन प्रभु श्रीराम के भक्तों द्वारा हवन पूजन के बाद प्रसाद वितरित किया जायेगा।

पुलिस मुठभेड़ में पच्चीस हजार का इनामी बदमाश गिरफ्तार

अमेठी,थाना जगदीशपुर कमरौली, स्वाट व सर्विलांस टीम द्वारा पुलिस मुठभेड़ में पच्चीस हजार रुपये का इनामिया शातिर बदमाश को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस टीम ने उक्त इनामी बदमाश के कब्जे से एक अदद तमंचा व जिन्दा कारतूस के साथ ही एक खोखा कारतूस बरामद किया है।जनपद अमेठी में अपराध एवं अपराधियों के धर पकड़ हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में शनिवार को थाना जगदीशपुर के प्रभारी निरीक्षक राकेश सिंह मय हमराही, स्वाट टीम प्रभारी धीरेन्द्र कुमार वर्मा, कमरौली के थानाध्यक्ष अमिनेष कुमार मय हमराही, सर्विलांस सेल प्रभारी उमेश कुमार मिश्रा द्वारा देखभाल क्षेत्र, चेकिंग संदिग्ध व्यक्ति, वस्तु व वाहन के दौरान मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई कि एक व्यक्ति उरूवा जंगल में गोकशी करने की फिराक में मौजूद है। उक्त सूचना पर त्वरित कार्यवाही करते हुये संयुक्त पुलिस टीम द्वारा मौके पर पहुंचकर देखा गया कि एक व्यक्ति जंगल के अन्दर से आता हुआ दिखाई दिया। पुलिस टीम द्वारा रुकने के लिये कहा गया तो उक्त व्यक्ति नें पुलिस टीम को देखकर जान से मारने की नियत से फायर कर दिया एल। आत्मरक्षार्थ पुलिस टीम द्वारा फायर करने पर शातिर बदमाश के पैर में गोली लगने से घायल होकर गिर गया। पुलिस टीम द्वारा बदमाश को पकड़कर कब्जे से एक तमंचा,दो जिन्दा कारतूस व एक खोखा कारतूस बरामद किया गया। पुलिस टीम द्वारा नाम व पता पूंछने पर अपना नाम जुनैद पुत्र अख्तर निवासी ग्राम नया पुरवा मजरे खैरातपुर थाना जगदीशपुर जनपद अमेठी उम्र करीब तीस वर्ष बताया। घायल बदमाश को इलाज हेतु पुलिस टीम द्वारा अस्पताल पहुंचाया गया।

श्रीराम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के पूर्व निकली भव्य शोभा यात्रा में उमड़ा जनसैलाब

कैनविज टाइम्स संवाददाता

तिलोई अमेठी,अयोध्या धाम में श्रीराम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के पूर्व रविवार को अहुरी में भोलेनाथ मंदिर से गाजे बाजे के साथ भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। शोभा यात्रा में भक्तिमय गीतों पर राम भक्त झूमते रहे और राम आयेंगे जैसे गीतों पर भक्तों ने खूब धमाल मचाया। विकास खण्ड तिलोई की ग्राम पंचायत अहुरी स्थित प्राचीनतम भोलेनाथ मंदिर से ग्राम प्रधान वीरभान सिंह की अगुवाई में रविवार की सुबह डीजे ढोल नगाड़े और गाजे बाजे के साथ भव्य शोभा यात्रा निकाली गई जो कि गांव के गली गलियारों का भ्रमण किया जिसमें श्रीराम लक्ष्मण और जानकी की वेशभूषा में बच्चे आकर्षण का केन्द्र बिंदु बने रहे। भव्य शोभा यात्रा में राम आयेंगे तो आंगन सजाऊंगी जैसे भक्तिमय गीतों पर प्रभु श्रीराम के भक्तों ने खूब धमाल मचाया। भव्य शोभायात्रा में उमड़े जनसैलाब में सैकड़ों की संख्या में महिलाओं और पुरुषों ने भगवा वस्त्र धारणकर एक ही नारा एक ही नाम, जय श्रीराम जय श्रीराम का गगनभेदी नारा बुलंद करते रहे। इस मौके पर विंध्या प्रसाद दुबे, गोपी मौर्या, रागिनी सिंह, वीरा सिंह,सूर्यभान सिंह, राम सुख यादव, गोबिंद प्रताप सिंह, संतोष यादव, तीर्थ चौरसिया,जगपाल मौर्या, संजय सिंह, अनिल पटवा, राज बबन सिंह, अशोक मौर्या, राधेश्याम चौरसिया सहित अन्य तमाम भक्तगण मौजूद रहे।

हिस्ट्रीशीटर को बनाया सपा प्रवक्ता, यही है समाजवादी पार्टी का चाल चरित्र- महंत राजूदास

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सुल्तानपुर। उत्तर प्रदेश में अपराध के मुद्दे पर सरकार से सवाल पूछने वाली समाजवादी पार्टी को खुद अपराधी पसंद हैं। सपा ने हाल में प्रवक्ताओं के पैनल में सुल्तानपुर से जिस धर्मेंद्र सिंह बब्लू भपटा के नाम पर मुहर लगाया है वो थाने का हिस्ट्रीशीटर है। पुलिस ने उसके खिलाफ गैंगेस्टर की कार्रवाई कर रखा है। ऐसे में सवाल लाजमी था। अयोध्या हनुमान गढ़ी के महंथ राजूदास ने एक्स पर लिखा है, यही है समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष (कालनेमी) का चाल, चरित्र और चेहरा! देखिए किस प्रकार से 13 मुकदमे वाले सुल्तानपुर के हिस्ट्रीशीटर को समाजवादी पार्टी का प्रवक्ता बनाया है!

लिस्ट में 20वें नंबर पर है नाम

समाजवादी पार्टी ने 74 प्रवक्ताओं का पैनल घोषित किया है। इसमें जिले से पूर्व विधायक अनूप संडा और धर्मेंद्र सिंह बब्लू भपटा का नाम शामिल है। अनूप संडा का नाम जहां 8वें स्थान पर है वही धर्मेंद्र सिंह का नाम 20वें स्थान पर। सुल्तानपुर से पैनल में दो नाम जोड़कर अवध क्षेत्र को साधने की भले ही कोशिश की गई हो लेकिल धर्मेंद्र सिंह के नाम की घोषणा होने पर सपा प्रमुख सवालों के घेरे में आ गए हैं।

दरअस्ल कोतवाली देहात के भपटा गांव निवासी धर्मेंद्र सिंह बब्लू भपटा कोतवाली देहात थाने के टॉप टेन अपराधियों में तीसरे स्थान पर हैं। उनके विरुद्ध स्थानीय पुलिस ने गैंगेस्टर एक्ट की कार्रवाई कर रखा है। तत्कालीन बसपा सरकार में उनके विरुद्ध जिला बदर की कार्रवाई हो चुकी है। 13 मुकदमों में इलाहाबाद में हत्या के दो मामलों समेत 11 मामले सुल्तानपुर में दर्ज हैं। उनकी हिस्ट्रीशीट नंबर 67 ए है। वे उत्तर प्रदेश कॉपरेटिव बैंक के चेयरमैन रह चुके हैं। उनकी माता सरोजनी देवी दो बार भदैया ब्लॉक प्रमुख रह चुकी हैं। पूर्व में वे सपा के पूर्व जिला महामंत्री और प्रदेश प्रवक्ता रह चुके हैं।

छुट्टा जानवर किसानों की गेहूं-सरसों की फसल कर रहे तबाह

कैनविज टाइम्स संवाददाता

कड़ाके की ठंड में जानवर हांकते दिखे किसान

सुल्तानपुर। छुट्टा जानवर किसानों की खून-पसीने की कमाई बर्बाद करने में लगे हैं। शासन स्तर के अधिकारी इन पर नकेल कसने के लिए आए। गौशालाओ का हवा-हवाई निरीक्षण किया, निर्देश दिए और चलते बने। लेकिन आलम ये है कि इस कड़ाके की ठंड में लोग घरों से निकलकर खेतों में छुट्टा जानवर से फसल बचाने को बाध्य हैं।

जिले के लंभुआ ब्लॉक अंतर्गत मदनपुर पनियार ग्राम में जहां आवारा पशुओं का आतंक खुलेआम देखा जा सकता है। किसानों की खून पसीने की कमाई खेती को छुट्टा जानवर चैपट कर रहे हैं। महिला किसानों ने बताया कि आवारा पशु गेहूं, सरसों आदि फसलों का भारी नुकसान कर रहे हैं। केवल यही ही नहीं बल्कि इसी क्षेत्र के भदैया ब्लॉक अंतर्गत अभियाखुर्द, हनुमानगंज, पखरौली, विकवाजितपुर, गोपालपुर, अभियाकलां में भी छुट्टा जानवरो का आतंक देखने को मिल रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि प्रधान, सीक्रेटरी, बीडीओ सबसे शिकायत करके थक गए कोई देखने सुनने वाला नहीं है।

आपको बता दें कि कमोबेश ये स्थिति समूचे जिले में हैं। यहां कादीपुर तहसील, बल्दीराय तहसील, जयसिंहपुर तहसील में स्थिति इसी प्रकार है। बल्दीराय में तो बीस बाईस दिनों के अंदर आवारा पशुओ से परेशान ग्रामीणों ने तीन बार पशुओं को कैद किया। लेकिन आलम ये कि अधिकारियों ने गौशाला तक जानवर पहुंचाए पर दोबारा उनके खेत जानवर चरने लगे।

एनटीपीसी ऊंचाहार में अनेकता में एकता की थीम पर सजा मेला प्रांगण

एजेंसी

रायबरेली। एनटीपीसी ऊंचाहार में प्रियदर्शिनी लेडीज क्लब के सौजन्य से तरंग मेला का आयोजन रविवार को किया गया। मेले का उद्घाटन एनटीपीसी के क्षेत्रीय कार्यकारी निदेशक (उत्तर) एन श्रीनिवासा राव व उत्तरा महिला मण्डल की अध्यक्षा विजया राव ने किया। ऊंचाहार परियोजना प्रमुख मनदीप सिंह छाबड़ा व प्रियदर्शिनी लेडीज क्लब की अध्यक्षा तरूणा छाबड़ा ने मुख्य अतिथियों के आगमन पर उनका स्वागत किया। भारतीयों में व्याप्त एकता पर गर्व की अनुभूति का भाव रखते हुए इस वर्ष मेले की थीम 'अनेकता में एकता' रखी गई। भारत के विभिन्न राज्यों की संस्कृति, वेशभूषा और खान-पान आदि की विविधता को मुख्य रूप से प्रदर्शनी के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। मेले में आयुर्वेद, बाजरा व जड़ी बूटियों के महत्व को प्रस्तुत करते हुए देश को स्वस्थ व समृद्ध बनाने में मोटे अनाज को श्री अन्न के रूप में दर्शाया गया। इसी के अंतर्गत मोटे अनाज के विभिन्न प्रकारों और उनके स्वास्थ्यवर्धक लाभों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। मिलेट्स प्रदर्शनी के माध्यम से मोटे अनाज को अतुलनीय विरासत के रूप में प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया। ऊर्जा क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से निरंतर विद्युत उत्पादन करने वाली ऊंचाहार परियोजना की प्रदर्शनी का भी आयोजन मेले में किया गया। जिसमें ऊंचाहार परियोजना की उपलब्धियों, नए आयामों और लक्ष्यों आदि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई व एक प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया और पुरस्कार के रुप में जूट बैग का वितरण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने का प्रयास किया गया। 'अनेकता में एकता' की मेले की थीम को बल देते हुए प्रियदर्शिनी लेडीज क्लब की ओर से 'अनेकता में एकता' के अंतर्गत विभिन्न राज्यों के स्वादिष्ट व्यंजनों के स्टॉल लगाए गए। इनमें लिट्टी-चोखा, सरसों का साग-मक्के की रोटी, छोले-भटूरे, उड़द दाल कचौड़ी, केक पेस्ट्री व शाही पनीर आदि बेहद पसंद किए गए। सांस्कृतिक धरोहर का प्रदर्शन करते हुए लखनऊ के त्रिशक्ति ग्रुप द्वारा रामायण को सूक्ष्म रूप में एक नृत्य नाटिका के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। साथ ही परियोजना के आवासीय परिसर स्थित बाल भवन के बच्चों ने संगीत एवं कथक नृत्य के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति की। मेले में साहित्य, कला व खेलकूद आदि क्षेत्रों के प्रसिद्ध व्यक्तियों, भारतीय तीज-त्योहारों, ऐतिहासिक इमारतों और विविधताओं से भरी संस्कृतियों को प्रस्तुत किया गया। उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध जिलों की कईं वस्तुओं का स्टॉल मेले में लगाया गया, जिनमें बनारसी साड़ी, रायबरेली का वुडन फर्नीचर व मूंज आदि शामिल हैं। मेले के दूसरे दिन विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों सहित लकी ड्रॉ का आयोजन किया गया और इसी के साथ प्रियदर्शिनी लेडीज क्लब द्वारा आयोजित तरंग मेला संपन्न हुआ।

नायब तहसीलदार से अभद्रता पर जिला पंचायत सदस्य के खिलाफ मुकदमा दर्ज

कैनविज टाइम्स संवाददाता

अमेठी,थाना शिवरतनगंज क्षेत्र की ग्राम पंचायत खरगपुर में आवास आवंटन की भूमि पर अवैध कब्जे की शिकायत की जांच करने गये राजस्व कर्मियों से अभद्रता का मामला सामने आया है। पुलिस ने लेखपाल की तहरीर पर जिला पंचायत सदस्य एवं उनके दस अन्य समर्थकों पर सरकारी काम में बाधा उत्पन्न करने और अभिलेख नष्ट करने का मुकदमा दर्ज किया है।क्षेत्र की ग्राम पंचायत खरगपुर में तहसील प्रशासन द्वारा अपात्रों को रेवड़ी की तरह बेशकीमती भूमि आवंटित की गई है जिसमें दर्जनों लोगों द्वारा व्यवसायिक काम्पलेक्स बनवा ली गई है जो कि आवंटन के वक्त भी अपात्र थे और आज भी अपात्र है लेकिन इस बेशकीमती भूमि पर नजरें गड़ाये लोगों द्वारा अपने परिजनों और चहेतों के नाम बेशकीमती भूमि आवंटित करवा ली गई है।गांव खरगपुर में प्रेमावती और एक अन्य रसूखदार व्यक्ति के बीच में जमीनी विवाद चल रहा था तो जिला पंचायत सदस्य राजेन्द्र भारती ने मामले में अधिकारियों ने महिला को न्याय दिलाने की गुहार लगाई तो नायब तहसीलदार अशोक कुमार कुशवाहा हल्का लेखपाल सुरेन्द्र कुमार के साथ मौके पर पहुंचकर मामले की जांच पड़ताल करने पहुंच गये इसी दौरान नायब तहसीलदार लेखपाल और जिला पंचायत सदस्य में विवाद हो गया जिसका वीडियो भी सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुआ लेकिन प्रशासन कुम्भकर्णी नींद में सोता रहा। इसी बीच सपा के जिलाध्यक्ष राम उदित यादव ने जिला पंचायत सदस्य राजेन्द्र भारती को पार्टी से बाहर निकाल दिया। इसी बीच खरगपुर गांव के लेखपाल सुरेंद्र कुमार पाल ने थाने में तहरीर दी गई तहरीर में लिखा है कि वह नायब तहसीलदार के साथ खरगपुर गांव के गाटा संख्या 92 में हुये आवास आवंटन की जांच करने के लिये गये थे और मौके पर मौजूद जिला पंचायत सदस्य राजेंद्र भारती एवं उनके दस अन्य समर्थकों ने अभद्रता करते हुये मेरे साथ हाथापाई की एवं नायब तहसीलदार अशोक कुमार कुशवाहा से अभद्रता की तथा जिला पंचायत सदस्य ने खसरा एवं नक्से को मुझसे छीनकर फाड़ दिया है। इस सम्बंध में थानाध्यक्ष तनुज कुमार पाल ने बताया कि लेखपाल की तहरीर पर जिला पंचायत सदस्य राजेंद्र भारती और उनके दस अन्य समर्थकों के खिलाफ मुकदमा दर्जकर लिया गया है और मामले की विवेचना की जा रही है वहीं जिला पंचायत सदस्य राजेन्द्र भारती ने तहसील प्रशासन द्वारा लगाये गये आरोपों को निराधार बताया है।

प्रधानमंत्री के आवाहन पर सारदा नगर प्रथम वार्ड के लोक कल्यानेश्वर शिव मंदिर के प्रांगण में सफाई अभियान चलाया गया

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। राम लला के प्राण प्रतिष्ठा से पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर संगठन के निर्देश अनुसार शारदा नगर प्रथम वार्ड मंडल दक्षिणी दो पी,डब्लू,डी, के लोक कल्यानेश्वर शिव मंदिर में मुख्य अतिथि के रूप में लखनऊ महानगर के मीडिया संयोजक चन्द्र भूषण पाण्डेय उर्फ़ पप्पू पाण्डेय एवं सहयोगी ओ,बी,सी,मोर्चा अध्यक्ष अम्बरीष मौर्या मण्डल उपाध्यक्ष नितेश वाश्णे की उपस्तिथि में सेक्टर संयोजक प्रमोद कुमार सिंह सेक्टर ई के सभी बूथ अध्यक्षों के द्वारा ,स्वछ्ता अभियान के तहत मंदिर की साफ सफाई किया गया जिसमें वहां के क्षेत्रीय जनता भी अपना भव्यता के साथ सहयोग कर कार्यक्रम को सफल बनाते हुए श्री राम के उद्घोष एवं राम धुन के साथ कार्यक्रम को समापन किया।

योगी राज में नगर पालिका की नोटिस के बाद भी नजूल की जमीन पर बन गई दुकान

अवैध निर्माण करना तो उनको बस भ्रष्ट इंजीनियर या नजूल विभाग के अमीन से संपर्क करना बाकी सारी समस्याओं का हल हो जायेगा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोण्डा। नगर पालिका परिषद यानी किसी को भी अवैध निर्माण करना तो उनको बस भ्रष्ट इंजीनियर या नजूल विभाग के अमीन से संपर्क करना बाकी सारी समस्याओं का हल हो जायेगा ये बात कैनविज टाइम्स के रिपोर्टर नही कह रहे है बल्कि नगर में अवैध निर्माण करने वाला दूसरे अवैध निर्माण करने को तैयार व्यक्ति से कहता है और कही ना कही ये बात सही भी है क्योंकि नगर में हो रहे हर अवैध निर्माण में यही सामने आता है शिकायत के बाद भी जेई और नजूल के अमीन मौके पर तो ठीक शिकायत तक नही देखते है बल्कि जिसकी शिकायत हुई उसको जा कर कह देता।इंजीनियर मौका रिपोर्ट लगाने की बजाए नगर पालिका परिषद में बैठे ही मन से मौका रिपोर्ट बना देते है आवासीय निर्माण अनुमति पर बने व्यवसायिक निर्माण की शिकायत के बाद भी रिपोर्ट में कही भी इसका जिक्र नहीं करता ख़्रग्ट्ट नही छोड़ा बस इतना लिख देता।ऐसा एक मामला नही है बल्कि कई मामले है। जिसमें भ्रष्ट इंजीनियर और नजूल विभाग के अमीन की जोड़ी ने बड़े खेल किए है।ऐसा ही कुछ मामले में फिर सामने आये है ऐसे कई मामले है मालवीय नगर डॉक्टर बिष्ट की गली में सिंधी किचन स्टोर के बगल वाली दुकान और उसी के ठीक पास में हुए नजूल की सम्पति पर अवैध निर्माण के मामले में भी बड़ा गोलमाल हुआ है।जिसमें भी पालिका परिषद के इन भ्रष्टों का नाम चर्चाओं में है। यह कोई पहला मामला नहीं है मालवीय नगर में अकबर मेंहदी और अफसर मेंहदी माजिद टेलर्स और ओमप्रकाश उर्फ दद्दू ने नजूल की जमीन पर अवैध तरीके से दुकान का नगरपालिका परिषद निर्माण अनुमति के विपरित जब इसका अवैध निर्माण हो रहा था तब एक शिकायत और खबर 20 नवंबर 2022 को हुई थी दूसरा मामला ठीक इसी से लगे का है जिसकी भी अवैध निर्माण की शिकायत दिनांक 20 नवंबर 2022 को की गई थी लेकिन दोनों शिकायतों पर कई दिनों तक नगर पालिका परिषद ने तीन-तीन बार नोटिस देने का खेल हुआ फिर जेई और नजूल के अमीन की अगुवाई में जेई के साथ मिल नोटिस से नोट कमाने का खेल हुआ आज भी डॉक्टर बिष्ट की गली में मालवीय नगर में अकबर मेंहदी और अफसर मेंहदी माजिद टेलर्स और ओमप्रकाश उर्फ दद्दू ने अपनी दुकानें बनाकर खड़ी कर ली है।और कुछ लोगो का महल जैसा शो रूम भी पूरा बन कर तैयार हो गया पर योगी के राज में गोण्डा नगर पालिका परिषद में हो रहे अवैध निर्माण करने वालों का कुछ नही बिगड़ा बस आप जेई और नजूल विभाग के अमीन को थोड़ा ज्यादा खुश करना पड़ेगा ऐसे में लोगों कहना भी सच लगता है कि ईमानदारी का पाठ दूसरों को पढ़ाने वालों के राज में इतना भ्रष्टाचार कैसे संभव हो रहा है। जहां तीन-तीन नोटिस देने के बावजूद भी बीच शहर में नजूल की संपत्ति पर अवैध निर्माण हो जाता है।

वही जो भी हो अवैध निर्माण एक तरफ तो गोण्डा नगर पालिकापरिषद की पहचान बन गए है तो दूसरी तरफ भ्रष्ट इंजीनियर और नजूल के अमीन

के लिए मोटा माल कमाने का साधन बन गए है सूत्र बता रहे है कि जेई और नजूल विभाग के अमीन नगर पालिका के ईओ हो या सभापति सबको खुश रखते है कभी किसी को नाश्ता तो कभी किसी को पार्टी देते रहते है ये सुन एक सभापति पति बोले कि मालवीय कहावत है कि खुद खावे काकड़ी हमें दे आकड़ी नगरपालिका परिषद में ऐसा ही कुछ हो रहा है और कोई तो है जो इन भ्रष्ट जेई और नजूल के अमीन की अवैध कमाई का हिस्सा ले रहा तभी तो इतना संरक्षण मिल रहा है।वरना इतना लिख देने के बाद तो अभी तक इन दोनों पर कार्यवाही का चाबुक चल जाना था खैर ठीक है हमारा काम है लिखना हमने तो लिख दिया अब लिखें पर कार्यवाही करना या नही करना ये जिला प्रशासन या नगरपालिका परिषद के जिम्मेदार को तय करना है।

दर्जी कुआं तिराहे पर रूट डायवर्ट होने से परेशान हुई क्षेत्रीय जनता

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोण्डा। भक्तों के भगवान श्रीराम की नगरी जाने के उत्साह को रूट डायवर्जन ने फीका कर दिया है। रूट डायवर्जन के चलते लोगों को काफी चक्कर तो लगते ही पड़ रहे हैं।रविवार को दर्जी कुआं तिराहे पर पुलिस चौकी क्षेत्र में कड़ाके की सर्दी में भी क्षेत्रीय लोगों का लोगों के पसीना छुड़ा दिया।अयोध्या में भगवान श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को बस एक दिन शेष बचा था।आज होने वाले प्राण प्रतिष्ठा को लेकर भारी वाहनों का रूट डायवर्जन तो शुरू करा दिया गया है।लेकिन क्षेत्रीय जनता को भी उनके घर नवाबगंज तक जाने नहीं दिया गया।दो पहिया वाहन व साइकिल वालों को भी डाइवर्ट के ही रास्ते पर जाने दिया जा रहा है।वही जो वाहन दर्जीकुआँ से डायवर्ट किये जायेंगे उन्हें झिलाही रेलवे क्रासिंग होते हुए मनकापुर उतरौला रोड से डुमरियागंज होकर गन्तव्य तक भेजा जायेगा।वही जो वाहन दर्जीकुआँ से मोतीगंज-मनकापुर मार्ग से डायवर्ट किये जायेंगे वह मोतीगंज, मनकापुर- मसकनवाँ बाजार,बभनान और मनकापुर-कोल्हमपुर मार्ग होते हुए लोलपुर पुल की तरफ डायवर्ट कर जनपद बस्ती को भेजा रहा है।वही क्षेत्रीय जनता का कहना है कि बड़े वाहनों के लिए बेडिकेडिंग लगाना ठीक है पर जो लोग दर्जी कुआं से नवाबगंज के बीच अगल-बगल गांव में रहते हैं जिनके घर की रास्ता ही वहीं है उनको क्यों रोका जा रहा है।यह सही नहीं है।अगर रोकना है तो सभी लोगों को पूरी तरह से रोकना चाहिए था,लेकिन

बीच रास्ते में आने-जाने दिया जा रहा है। दर्जी कुआं तिराहे पर ही क्यों नहीं जाने दिया जा रहा है क्षेत्रीय जनता को अपने घर यह बात सही नहीं है।बेरिकेडिंग की वजह से काफी परेशानी हुई है।एक से दूसरे जगह पर जाने के लिए काफी घूमकर जाना पड़ा।ऐसे में काफी समय की बर्बादी हुई है।वही वजीरगंज निवासी ने बताया कि वह एक जरूरी काम से अस्पताल आया था लेकिन उसे उसे रास्ते से वापस गांव नहीं जाने दिया गया।लेकिन वह फिर घूम कर कहोबा चौराहे होते हुए डुमरियाडीह पहुंचा और फिर अपने घर वजीरगंज गया।वहीं कई लोगों की पुलिस से नोकझोंक भी हुई है।क्षेत्रीय जनता रूट डायवर्ट होने से अपने घर पहुंचने में भी बहुत तकलीफ हुई और उनमें साफ गुस्सा नजर आ रहा था।

काली कुंडा मंदिर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से समरसता भोज

कैनविज टाइम्स संवाददाता

नानपारा, बहराइच। नगर नानपारा स्थित काली कुंडा मंदिर के प्रांगण में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ नानपारा नगर की ओर से एक समरसता भोज का आयोजन किया गया जिसमें नगर के सभी लोगों को आमंत्रित किया गया और भारी संख्या में सभी आयु वर्ग के महिला पुरुष व बच्चों ने समरसता भोज ग्रहण किया। इसमें मुख्य वक्ता प्रधानाचार्य सरस्वती शिशु मंदिर बालमुकुंद जी रहे, इसके अलावा नगर संचालक गोपाल टेकरीवाल, नगर प्रचारक रवि, नगर कार्यवाहक आनन्द श्रीवास्तव, नगर सेवा प्रमुख ध्यान प्रकाश श्रीवास्तव ने समरसता भोज में महती भूमिका निभाई। वहीं मनोज गुप्ता, राहुल कश्यप, दिलीप जायसवाल, सुनील सिंघल, अभिलाष श्रीवास्तव, मंडल अध्यक्ष भाजपा अजय गुप्ता, ऊषा सिंघानिया, ओम प्रकाश शर्मा, नगर नानपारा कोतवाल मिथिलेश राय अपने पूरे दलबल के साथ तथा आचार्य हनुमान, नंद किशोर गुप्ता, गौतम गुप्त, राजेंद्र गुप्ता, धर्मेंद्र गुप्ता और हर्षित आदि सैकड़ों जनमानस उपस्थित रहे।

हम कथा सुनाते राम सकल गुणगान की

नगर में निकली शोभायात्रा, नागरिकों ने किया अभिनन्दन

राम सीता एवं लक्ष्मण के सजीव स्वरूपों ने चुराया आकर्षण

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बहराइच। शनिवार को विद्या भारती के तत्वाधान में आगामी 22 जनवरी को रामलला विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा समारोह के निमित्त छात्र-छात्राओं द्वारा भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम एवं सीता और लक्ष्मण जी की सजीव रूप में शोभायात्रा निकाली गई। यात्रा सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज माधवपुरी से प्रारम्भ होकर शहर के मुख्य मार्गों से निकाली गई जहां शहर के समाजसेवियों एवं व्यापारियों ने प्रभु श्री राम लक्ष्मण और माता सीता के सजीव स्वरूपों का पुष्प अर्पित कर स्वागत किया। शोभायात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व आरएसएस के विभाग प्रचारक डॉ. अवधेश ने रथ पर विराजे तीनों स्वरूपों की आरती उतारकर माल्यार्पण किया। ततपश्चात यात्रा प्रारम्भ होकर नगर के मुख्य मार्गों से निकली।

रथ पर लव कुश के रूप में बैठे दो बालक हम कथा सुनाते राम सकल गुणगान की का गायन कर नागरिकों का मन अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे। शोभायात्रा में सबसे आगे चल रहे बैंड में रामधुन लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच रहे थे। शोभायात्रा में बड़ी संख्या में सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कालेज के छात्र एवं विद्यालय के प्राचार्य रवि जी, भूपेंद्र, धर्मेंद्र, विनोद,नगर प्रचारक दौलत, आचार्य श्री अनूप , आलोक, जितेंद्र, ऋषि शंकर, नीरज जी, संजीव बाजपेई, नारायण दत्त, राजेंद्र, मनोज, गुरप्रीत, नीरव, मुदित, राजकुमार, सोनम जी, लक्ष्मी सहित सैकड़ो की संख्या में छात्र-छात्राओं ने कार्यक्रम में सहभागिता की।

केडीसी के जिमनेजियम हाल में मनाया जायेगा ''उत्तर प्रदेश दिवस''

बहराइच । मुख्य विकास अधिकारी रम्या आर ने बताया कि 24 जनवरी 2024 को स्व. ठाकुर हुकुम सिंह किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय के जिमनेजियम हॉल में ''उत्तर प्रदेश दिवस 2024'' समारोह का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर विभिन्न विभागों द्वारा संचालित कल्याणकारी योजनाओ से सम्बंधित भव्य स्टाल जगाये जायेंगे। सीडीओ ने बताया कि सभी सम्बन्धित विभागों को निर्देश दिये गये हैं कि प्रदर्शनी स्टाल के साथ-साथ विभाग के सम्बंधित 20-20 लाभार्थियों की उपस्थिति सुनिश्चित कराते हुए प्रशस्ति पत्र इत्यादि का वितरण भी किया जाय।

जनपद में 22 जनवरी को रहेगा सार्वजनिक अवकाश

बहराइच। जिलाधिकारी मोनिका रानी ने बताया कि शासन के आदेशानुसार 22 जनवरी 2024 को अयोध्या में प्रस्तावित श्री राम मन्दिर के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के दृष्टिगत जनपद बहराइच में 22 जनवरी 2024 को निगोशिएवुल इन्स्ट्रूमेन्ट एक्ट 1881 के अधीन सार्वजनिक अवकाश रहेगा।

कमांडेंट गंगा सिंह उदावत को गृह मंत्री ने किया सम्मानित

एसएसबी 42वीं वाहिनी ने जीता लगातार दूसरी बार सर्वश्रेष्ठ वाहिनी का ख़िताब

कैनविज टाइम्स संवाददाता

नानपारा, बहराइच। प्रशिक्षण केंद्र सलोनीवाडी, असम में आयोजित कार्यक्रम के दौरान सशस्त्र सीमा बल के 60वें स्थापना दिवस (हीरक जयंती) के अवसर पर एसएसबी 42वीं वाहिनी ने लगातार दूसरी बार सर्वश्रेष्ठ वाहिनी का ख़िताब अपने नाम कर लिया है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गृह मंत्री, भारत सरकार अमित शाह ने एसएसबी 42वी वाहिनी के कमांडेंट गंगा सिंह उदावत को ट्रॉफी देकर सम्मानित किया है। कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि को जवानो के द्वारा सलामी, मार्च आदि दिया गया। इस मौके पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन हुआ जिसमें बलकार्मियो ने बढ़ चढ़कर प्रतिभाग किया। कार्यक्रम के दौरान बल के गौरवशाली 60 वर्षो के इतिहास को बताया गया कि बल किस प्रकार स्पेशल सर्विस ब्यूरो से सशस्त्र सीमा बल की भूमिका में आया और केन्द्रीय सशस्त्र बलों में अपनी सर्वाधिक लोकप्रियता वाला बल बना ‑ सशस्त्र सीमा बल पहला सीमा रक्षक बल है जिसने महिलओं की भर्ती की तथा महिलाएं विभिन्न दुर्गम क्षेत्रों में पुरुषों से कंधे से कन्धा मिलकर ड्यूटी का निर्वहन कर रही है ‑ बल की प्रचालन एवं अहम विभिन्न गतिविधियों के आंकलन के आधार पर मुख्यालय एवं वाहिनी जो प्रथम रही है उनको गृह मंत्री द्वारा ट्रॉफी अलंकृत किया गया जिसमे 42वी वाहिनी सशस्त्र सीमा बल, जनपद- बहराइच द्वारा सर्वश्रेष्ट वाहिनी का ख़िताब अपने नाम किया, जिसे गृह मंत्री ने गंगा सिंह उदावत, कमांडेंट 42वी वाहिनी को सर्वश्रेष्ठ वाहिनी का ट्रॉफी देकर सम्मानित किया ‑ अंत में मुख्य अतिथि द्वारा अपने भाषण में बल के कार्यो की सराहना की तथा बल के उज्जवल भविष्य के लिए कामना की।

काशी की गंगा आरती में भगवान राम का कटआउट बना आकर्षण, पांच हजार दीपों से सजा घाट

वाराणसी। अयोध्या में जन्मस्थान पर सोमवार को रामलला के मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा समारोह का उल्लास काशी में चहुंओर दिख रहा है। रविवार को अस्सीघाट पर मां गंगा सेवा समिति की ओर से आयोजित सायंकालीन गंगा आरती में 15 फीट के प्रभु श्री राम का कटआउट घाट पर उपस्थित पर्यटकों और श्रद्धालुओं में आकर्षण बना रहा।समिति की ओर से भगवान के कटआउट के पूजन के साथ पूरे घाट को दीपकों से सजाया गया। दीपों की श्रृंखला से जय श्री राम लिखा गया। इस कार्यक्रम में श्रवण मिश्रा, यश चतुर्वेदी, हिन्दू युवा वाहिनी के महानगर मंत्री अभिषेक गोलू आदि ने पूरे उत्साह से भागीदारी की।प्राण प्रतिष्ठा समारोह की पूर्व संध्या पर हुकुलगंज रामलीला समिति की ओर से श्री राम शोभायात्रा निकाली गई। समिति के अध्यक्ष एवं क्षेत्रीय पार्षद बृजेश चन्द्र श्रीवास्तव की अगुवाई में शोभायात्रा में आगे आगे रथ पर भगवान श्री राम की मूर्ति एवं कलश लिए दर्जनों महिलाएं चल रही थी। वहीं, शोभा यात्रा में बज रहे भक्ति गीतों पर मंत्र मुग्ध होकर लोग भक्ति के रस में डुबे नृत्य कर रहे थे।

प्रधानमंत्री के आगमन को लेकर गोण्डा पुलिस मुस्तैद चप्पा-चप्पा चाक चौबंद

रेलवे बसस्टेशन व स्टेशन के किनारे बने झुग्गी झोपड़ी, होटलों, मॉल व अन्य भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर की जा रही सघन चेकिंग

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोण्डा । अयोध्या धाम में होने वाले श्री राम मंदिर प्राण-प्रतिष्ठा कार्यक्रम एवं प्रधानमंत्री जी के आगमन के दृष्टिगत पुलिस अधीक्षक विनीत जायसवाल के निर्देशन में अपर पुलिस अधीक्षक राधेश्याम राय के पर्यवेक्षण में गोण्डा - अयोध्या बॉर्डर पर लगातार 24 घंटे बैरियर लगाकर सघन चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है, बॉर्डर को पूरी तरह से सील कर दिया गया है।

केवल अधिकृत लोगों को ही प्रवेश करने दिया जा रहा है।सीमाओं पर लगातार पुलिस, पीएसी व आरआरएफ फोर्स के साथ फ्लैग मार्च की जा रही है।फ्लैग मार्च के दौरान गोण्डा-अयोध्या बार्डर व सरयू नदी के सीमावर्ती गाँवों में ड्रोन कैमरों से निगरानी करते हुए संदिग्ध व्यक्तियों की चेकिंग की जा रही है,तथा पुलिस द्वारा लगातार श्रद्धालुओं से यह भी अपील की जा रही है कि 22 जनवरी को अयोध्या में श्री रामलला के दर्शन के लिए नही आये इसके अतिरिक्त जनपद गोण्डा के समस्त थानों द्वारा पुलिस डॉग स्क्वायड व स्थानीय अभिसूचना इकाई के साथ एचएचएमडी से रेलवे स्टेशन बस स्टाप व रेलवे स्टेशन के किनारे व आस -पास के होटलों मॉल व अन्य भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर सघन चेकिंग कर होटलों में रूके व्यक्तियों से पूछताछ कर उनका सत्यापन किया जा रहा है।होटल, मॉल व अन्य प्रतिष्ठानों के मालिकों से शांति सुरक्षा व्यवस्था के संबंध में वार्ता कर आवश्यक दिशा निर्देश दिये जा रहे है।जनपद के राजपत्रित पुलिस? अधिकारियों द्वारा क्षेत्र में निरन्तर भ्रमणशील रहकर संदिग्ध वाहनों व्यक्तियों की चेकिंग की जा रही है।

श्रमिकों के शोषण को लेकर उपश्रमायुक्त पर लगा गंभीर आरोप

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोण्डा। चीनी मिलों में श्रमिकों के साथ अन्याय और शोषण का आरोप लगाते हुए इन्दिरा युवा वाहिनी के राष्ट्रीय सचिव शैलेंद्र सिंह ने उप श्रमायुक्त को पत्र भेजकर शिकायत दर्ज कराई है। भेजे गए पत्र में शैलेन्द्र सिंह ने कहा है कि संज्ञान में आया है कि आपके क्षेत्र अन्तर्गत चीनी मिलों बभनान दतौली एवं मैजापुर तथा बजाज चीनी मिल कुंदुरखी व डिस्टलरियों में कार्यरत कर्मचारियों के साथ अत्यधिक अन्याय एवं आर्थिक शोषण किया जा रहा है। आपके समक्ष मजदूर संगठनों एवं कारखानों में पंजीकृत मजदूर यूनियनों ने अपनी मांगो को लेकर अनेकों बार अनुरोध किया लेकिन अभी तक उनकी एक भी मांग पूरी नहीं की गयी। मिल परिसर एवं विभिन्न गन्ना तौल केन्द्रों पर कार्यरत कामगारों को शुगर बेसबोर्ड से आच्छादित करते हुये उनके देय वेतन की दरों का निर्धारण किया है तथा समय-समय पर नियमानुसार मंहगाई भत्ते का भुगतान भी आपके माध्यम से सुनिश्चित कराने का निर्देश शासन द्वारा दिया गया है परंतु आपकी उदासीनता के कारण प्रत्येक वर्ष करोड़ों रूपये मजदूरी का भुगतान ना करके मिल प्रबन्धन अपनी मनमानी कर रहा है। आप अवगत हैं कि कारखानों में कार्यरत समस्त कर्मियों अधिकारियों को न्यूनतम माह का बोनस 30 जवम्बर 2023 तक हो जाना चाहिए परन्तु अभी तक बोनस का भुगतान न होना मिल प्रबन्धन की मनमानी एवं आपकी उदासीनता को परिलक्षित करता है। ज्ञातव्य हो कि श्रम विभाग की स्थापना का मुख्य उद्देश्य ही उत्पादन के साथ-साथ कामगारों का आर्थिक शारीरिक एवं मानसिक सवंर्धन करना है न कि कमजोर वर्ग के शोषण का मूक दर्शक बने रहना है।अतः उपरोक्त बिंदुओं के दृष्टिगत आपके क्षेत्र में स्थापित एवं व्यवसायरत मिलों एवं डिस्टलरियों में कितने कामगार नियमित, दैनिक, संविदा, सीजनल, कैजुअल एवं बदली श्रमिक के रूप में कार्यरत हैं और उनके सापेक्ष कितने रूपये का भुगतान मजदूरी वेतन और कितने मजदूरों को बोनस का भुगतान किया गया है उक्त सम्बन्ध में प्रत्येक कामगारों की संख्या के सापेक्ष भुगतान की गयी धनराशि का विवरण उपलब्ध कराते हुये विभाग के उद्देश्यों के क्रम में कार्यरत कामगारों को आर्थिक एवं सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने व सूचित करने की मांग की है।

ट्रैक्टर की चपेट से बाइक सवार युवक गंभीर घायल

कर्नलगंज,गोण्डा। रविवार को बहन की तिलक चढ़ाने के लिए फल खरीदने कर्नलगंज बाजार गए बाइक सवार युवक को ट्रैक्टर ने टक्कर मार दिया,जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। स्थानीय लोगों द्वारा आनन-फानन में उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र ले जाया गया,जहां प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज हेतु उसे गोण्डा रेफर कर दिया गया।मिली जानकारी के मुताबिक कोतवाली कर्नलगंज क्षेत्र के ग्राम पंचायत नारायनपुर मांझा (भलियन पुरवा) निवासी रवि सिंह (22) पुत्र कौशल सिंह के चचेरी बहन की रविवार को तिलक जानी थी और रवि सुबह कर्नलगंज बाजार फल खरीदने गया था तभी पिपरी स्थित श्रीराम आटो मोबाइल्स (पेट्रोल पंप) के पास अनियंत्रित ट्रैक्टर की चपेट आने से वह गंभीर रूप से घायल हो गया। स्थानीय लोगों द्वारा उन्हें सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया,जहां प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सक द्वारा बेहतर इलाज हेतु गोण्डा रेफर कर दिया गया।

भारत नेपाल सीमा की सुरक्षा को लेकर नेपाल व भारत के अधिकारियों की हुई बैठक

कैनविज टाइम्स संवाददाता

नानपारा, बहराइच। 59वी वाहिनी सशस्त्र सीमा बल नानपारा के प्रांगण में आगामी 22 जनवरी को अयोध्या में श्रीराम मंदिर में होने वाले प्राण प्रतिष्ठा एवं 26 जनवरी की संवेदनशीलता एवम भारत नेपाल सीमा की सुरक्षा परिदृश्य को मद्देनजर मोनिका रानी, (आई.ए.एस.), जिलाधिकारी बहराइच की अध्यक्षता में समन्वय बैठक का आयोजन किया गया जिसमें भारत नेपाल से आने जाने वाले लोगो पर कड़ी नजर रखने, सीमावर्ती क्षेत्र में संयुक्त रूप से सघन जांच अभियान, गस्ती और प्रचालन गतिविधियों को बढ़ाने के विषय में चर्चा की गई। इस कार्यक्रम के दौरान वृंदा शुक्ला (आई.पी.एस.) पुलिस अधीक्षक बहराइच, कैलाश चन्द रमोला कमांडेंट 59 वाहिनी, अतुल कार्की कमांडेंट 70 वाहिनी, शक्ति सिंह ठाकुर, द्वितीय कमान अधिकारी 59 वाहिनी, राज रंजन द्वितीय कमान अधिकारी 42 वाहिनी, हरखा बहादुर शाही 31वीं वाहिनी इघ्क्क नेपाल, सुधीर राज साही नेपाल पुलिस बर्दिया, सुभाष बोहरा क्ष्म बांके, पवित्रा मोहन त्रिपाठी (सहायक पुलिस अधीक्षक), राहुल पाण्डेय नानपारा, अंबिका चौधरी तहसीलदार, अशोक कुमार वन विभाग नानपारा, विकास भक्ता इघ्क्क बांके नेपाल, मोहन आर्या क्ष्ग बर्दिया नेपाल उपस्थित रहे।

वीरांगना भूमि झांसी हुई राममय

जय श्रीराम के गगनभेदी उद्घोष के साथ निकली बाइक रैली

कैनविज टाइम्स संवाददाता

झांसी। जन-जन के आराध्य प्रभु श्रीराम लला की प्राण प्रतिष्ठा अयोध्या धाम के दिव्य-भव्य नूतन मंदिर में 22 जनवरी को होने जा रही है। प्रभु श्रीराम लला की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर वीरांगना लक्ष्मीबाई की भूमि झांसी में रविवार को श्रीराम बाइक यात्रा का आयोजन किया गया। बाइक यात्रा में विभिन्न हिंदू संगठनों के हजारों लोगों ने सहभागिता की।बाइक यात्रा को भगवा ध्वज दिखाकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग प्रचारक डॉ. अखंड प्रताप द्वारा खाना किया गया। महानगर में निकली इस रामयात्रा का पूरे नगर में जोरदार स्वागत किया गया। श्रीराम के गगनभेदी जयघोष ने पूरा नगर राममय कर दिया। लोगों ने फूल बरसा कर प्रभु श्री राम की सेवा के लिए निकले उनके भक्तों को पलकों पर सजाया।

रविवार को श्री राम जन्म भूमि प्राण प्रतिष्ठा सम्पर्क अभियान समिति के तत्वावधान में झांसी महानगर में रामभक्तों द्वारा एसएपी0आई0 इण्टर कॉलेज से प्रारम्भ करके पूरे महानगर में अयोध्या में प्रभु श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में धूमधाम से निकाली गई बाईक रैली से समूचा वातावरण राममय और भगवा हो गया। अयोध्या धाम में प्रभु श्रीराम लला प्राण प्राण प्रतिष्ठा समारोह 22 जनवरी से पूर्व रविवार को झांसी महानगर में हजारों रामभक्तों द्वारा बाईक रैली निकाल कर समूचे झांसी महानगर का वातावरण राममय और भगवामय कर दिया।

बाइक रैली एस0पी0 आई0 इंटर कॉलेज से प्रारम्भ होकर खंडेराव गेट, शहर कोतवाली, रानी महल, मिनर्वा चौराहा, सैयर गेट, गोविन्द चौराहा, कचहरी चौराहा, सदर बाजार चौराहा, झाँसी होटल चौराहा, जेल चौराहा, इलाइट चौराहा, चित्रा चौराहा, श्री गुरुनानक देव जी चौक, आर्यकन्या चौराहा, कच्चे पुल, मेजर ध्यानचंद स्टेडियम, बी.के.डी चौराहा, आशिक चौराहा और तहसील होते हुए पुनः एस0पी0 आई0 इंटर कॉलेज पर ही समाप्त हुई। इस विशाल बाइक रैली में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल और अन्य विचार परिवार के कार्यकर्ता, पदाधिकारी और सैंकड़ों की संख्या में रामभक्त सम्मिलित हुए। रैली में सभी रामभक्त गले में भगवा पट्टिका और हाथों मे भगवा ध्वज लेकर रामलला हम आएंगे-दर्शन तेरे पाएंगे, जयकारा हे वीर बजरंगी-हर हर महादेव, वंदे मातरम-जय श्रीराम आदि गगनभेदी उद्घोष करते हुए चल रहे थे। आगे-आगे चल रहे डीजे पर बज रहे भजनों पर श्रद्धालुओं समेत नगरवासियों ने जमकर नृत्य किया। बाइक रैली का जगह-जगह महानगर वासियों ने पुष्प वर्षा कर स्वागत किया और भक्तिभाव से प्रभु श्रीराम जी के चित्र की आरती उतारी। कई स्थानों पर स्वागत के साथ हनुमान चालीसा व सुन्दरकाण्ड पाठ का भी आयोजन किया गया। महानगर संयोजक श्रीराम लला प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव समिति झांसी महानगर एवं मीडिया प्रमुख श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव समिति ने बताया है कि प्राण प्रतिष्ठा के दिन पौष शुक्ल द्वादशी 22 जनवरी को महानगर के लगभग सैंकड़ों मंदिरों में श्रीराम लला प्राण प्रतिष्ठा के धार्मिक आयोजन होंगे। प्रत्येक मंदिर पर प्रभु श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के समय साज-सज्जा सहित भजन- कीर्तन और प्रभु श्री राम की आरती की व्यवस्था रामसेवकों द्वारा की जा रही है। मंदिरों को सजाया जा रहा है। सायंकाल संपूर्ण समाज द्वारा भव्य दीपावली मनाने हेतु कार्य योजना तैयार की गई है। झांसीवासी श्री राम लला की प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को लेकर बहुत ही उत्साहित हैं। 22 जनवरी को महानगर समेत जिले के मंदिरों में भजन कीर्तन, सुंदरकांड का सामूहिक पाठ, हनुमान चालीसा का पाठ, हवन आदि धार्मिक अनुष्ठान होकर प्रसादी वितरण होगा। सायंकाल मंदिरों और घरों में दीप प्रज्जवलित कर दीपावली मनाई जाएगी। सभी रामभक्त नवीन वस्त्र धारण करेगें।बताते चलें कि श्रीराम लला की प्राण प्रतिष्ठा से पूर्व घर-घर पूजित अक्षत निमंत्रण अभियान के अंतर्गत झांसी महानगर में लगभग 2 लाख से अधिक परिवारों में प्रभु श्रीराम लला के दर्शन का निमंत्रण दिया गया है। साथ ही मेरा मोहल्ला मेरी अयोध्या के कार्यक्रम के तहत पूरे महानगर के एक- एक मोहल्ले को सजाया जा रहा है। यही नहीं महानगर के 35 चौराहों को भी सजाने के कार्य किया जा रहा है।

इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग कार्यवाह धर्मेंद्र चौधरी,महानगर कार्यवाह मुकुल पस्तोर, महानगर प्रचारक सक्षम, महानगर सहकार्यवाह जयपाल, शारीरिक प्रमुख राहुल,मार्ग प्रमुख डॉ. शरद द्विवेदी,डॉ तीर्थेश, श्रीराम हुण्डैत, सभी नगर कार्यवाह,नरेन्द्र दद्दू,राजेश उपाध्याय, सांसद अनुराग शर्मा, महापौर बिहारी लाल आर्य,पूर्व जिलाध्यक्ष मुकेश मिश्रा, प्रदीप सरावगी,भाजयुमो महानगर अध्यक्ष अमित सिंह जादौन, पीयूष रावत,कुंवर रामपाल सिंह निरंजन, और अन्य विचार परिवार के कार्यकर्ता, पदाधिकारी और हजारों की संख्या में रामभक्त उपस्थित रहे।

नगर में निकली श्री रामलला शोभायात्रा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पीलीभीत। श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में आयोजित श्री रामलला शोभायात्रा निकाली गई। 500 वर्ष के संघर्ष के बाद आज ये शुभ घड़ी आई है। कि अयोध्या में श्री मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा होने जा रही है। शोभायात्रा में मौजूद सभी लोगों ने 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर अपने अपने घर पर दीपक जलाकर उत्सव मनाएं।नगर में आयोजित यात्रा का धर्म प्रेमियों द्वारा जगह जगह पर पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया।श्री राम नाम की गूंज ने सबका मन मोह लिया।इस अवसर पर विभाग प्रचारक आरएसएस धर्मेंद्र,विभाग संघचालक आरएसएस ओमपाल,जिलाध्यक्ष भाजपा पीलीभीत संजीव प्रताप,पूर्व सांसद बलराज पासी,दर्जा प्राप्त राज्य मंत्री सुरेश गंगवार,पूर्व राज्य मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार डॉ. विनोद तिवारी,लेखराज वर्मा,जिला प्रचारक आरएसएस दुष्यंत, ब्लॉक प्रमुख सभ्यता वर्मा,भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा के जिला अध्यक्ष गीता मिश्रा,ब्लॉक प्रमुख निशान सिंह नगर प्रचारक आरएसएस सोहानवीर,जिला महामंत्री लेखराज भारती,वरिष्ठ भाजपा नेता दुर्गा प्रसाद सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

भाजपा लेखन अभियानः ब्लॉक प्रमुख ने दीवार पर लिखा एक बार फिर मोदी सरकार

पीलीभीत।भाजपा लेखन अभियान की शुरूआत हो चुकी है। जिसके अंतर्गत मरोरी ब्लाक प्रमुख सभ्यता वर्मा ने दीवार पर लिखा एक बार फिर मोदी सरकार पार्टी नेतृत्व के आह्वान पर शुरू दीवार लेखन अभियान में भाजपा की ब्लाक प्रमुख सभ्यता वर्मा ने विकासखंड में स्थित कई ग्राम पंचायतो में दीवार लेखन का कार्य किया उन्होंने अपने हाथों से दीवार पर पार्टी चुनाव चिन्ह कमल का फूल बनाया और एक बार फिर मोदी सरकार का नारा लोकसभा चुनाव 2024 के मद्देनजर लिखा।और जिला पदाधिकारियों,मंडल पदाधिकारी,तथा बूथ स्तर तक के कार्यकर्ताओं से दिवार पर लेखन कार्य करने का आह्वान किया है।

आज आर्य समाज मंदिर में होगा भजन कीर्तन और काव्यपाठ

पुरनपुर।नगर में स्थित आर्य समाज मंदिर में 22 जनवरी को भजन कीर्तन एवं काव्य पाठ का आयोजन बड़े ही हर्षोल्लास के साथ किया जाएगा। आर्य समाज मंदिर के प्रधान डॉक्टर तेज बहादुर सिंह तेजू एव प्रबंधक बाबू राम आर्य ने बताया कि अयोध्या में मर्यादा पुरुषोत्तम आर्य श्री रामचंद्र के अयोध्या धाम में भव्य मंदिर निर्माण एवं अभिषेक का कार्य 22 जनवरी को बड़े ही धूमधाम से आयोजित किया जा रहा है।इस शुभ घड़ी के अवसर पर आर्य समाज के तद्भावधान में प्रातः 11:00 बजे भंडारे का आयोजन किया जाएगा दोपहर 1:00 बजे भजन कीर्तन एवं काव्य पाठ का आयोजन किया जाएगा।

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के दिन पूरे प्रदेश में 24 घंटे बिना कटौती होगी विद्युत आपूर्ति

प्राण-प्रतिष्ठा के ऐतिहासिक अवसर पर योगी सरकार ने लिया निर्णय

अयोध्या। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा के अनुरूप अयोध्या में सोमवार 22 जनवरी को रामलला के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को देखते हुए पूरे प्रदेश को कटौती मुक्त विद्युत आपूर्ति का निर्णय लिया गया है।यह जानकारी देते हुए उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन के अध्यक्ष डॉ. आशीष कुमार गोयल ने बताया कि मुख्यमंत्री एवं ऊर्जा मंत्री की मंशा के अनुरूप प्राण प्रतिष्ठा के कार्यक्रम को देखते हुए पूरे प्रदेश को प्रकाश युक्त करने का निर्णय लिया गया है। इसी क्रम में उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन के मुख्यालय शक्ति भवन, एसएलडीसी भवन सहित सभी प्रमुख भवनों को प्रकाश मय कर दिया गया है। अध्यक्ष ने बताया है कि सोमवार को पूरे प्रदेश के सभी क्षेत्रों को 24 घंटे कटौती मुक्त विद्युत प्राप्त होगी। अध्यक्ष ने विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि इस संदर्भ में पूरी तरह सावधानी बरतें और सबको अनवरत विद्युत प्राप्त हो, इसके लिए सभी आवश्यक कदम उठाएं।

कुशभवनपुर हुआ राममय, अतिथियों के सत्कार में जुटे स्वयंसेवक

सुलतानपुर। रेलवे स्टेशन भी प्राण प्रतिष्ठा के इतिहास का साक्षी बन रहा है। पूरा कुशभवनपुर राममय हो गया है। भगवामय स्टेशन पर कई प्रांतों से ट्रेन से साधु-संत यहां पहुंच रहे हैं। जिन्हें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पदाधिकारियों की ओर से उनका स्वागत कर उन्हें अयोध्या पहुंचाया जा रहा है।

अयोध्या में 22 जनवरी को होने वाले प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को लेकर स्थानीय रेलवे स्टेशन पर देश के विभिन्न हिस्सों से साधु-संत आ रहे हैं। ऐसे में रेलवे स्टेशन का मुख्य द्वार फूल मालाओं से सजा हुआ है। पूरा परिसर भगवा कपड़े से सजाया गया है। आने वाले साधू-संतों के ठहरने के लिए वर्तमान पुरुष प्रतीक्षालय को रेड मैट लगाकर सुसज्जित किया गया है। वहीं अधिकारी विश्रामगृह की भी साज-सज्जा की गई है। स्टेशन परिसर में स्वागतकर्ता हेतु कुर्सी एवं एक नंबर प्लेटफार्म पर मैट लगाकर सुसज्जित किया गया है रूपेश सिंह ने बताया कि देश के विभिन्न हिस्सों से रेलवे स्टेशन पहुंच रहे साधु संतों का भव्य स्वागत किया जा रहा है। अब तक 250 के आसपास साधु संतों को अयोध्या पहुंचाया जा चुका है।

मंदिर में दान देने के लिए व्यापारी नेता के पुत्र ने फोड़ दी अपनी गुल्लक

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पीलीभीत।श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मंदिर निर्माण का उत्साह हर जाति उम्र क्षेत्र की सीमाओं से बहुत ऊपर उठ चुका है।न सिर्फ बड़े अपितु छोटे बच्चे भी अपने आराध्य प्रभु राम के 500 वर्षों के वनवास के खत्म होने पर अत्यंत हर्षित और पुलकित हैं। मझोला के पूर्व चेयरमैन राम औतार अग्रवाल के पौत्र और युवा व्यापार मंडल प्रदेश अध्यक्ष कपिल अग्रवाल के पुत्र आर्यान्श अग्रवाल ने अबसे करीब तीन वर्ष पूर्व श्री राम जन्मभूमि का निर्माण शुरू होने पर 10 वर्ष की आयु में अपनी सम्पूर्ण जमापूंजी जो कि बालक ने अपनी गुल्लक में सहेज कर रखी थी। स्वप्रेरणा से खुशी खुशी विश्व हिन्दू परिषद द्वारा चलाये जा रहे निधि समर्पण अभियान में पूरी गुल्लक समेत दान कर दी थी। आज उस मंदिर का निर्माण होने और उसमें भगवान की प्राण प्रतिष्ठा होने की घड़ी आने पर ये बालक आर्यान्श भी अत्यंत आल्हादित है। और बड़ी उमंग से उसने अपने घर पर इलेक्ट्रीशियन को बुलवाकर रोशनी की दांज कार्यवाई है।और अपने पिता के साथ बाजार जाकर आतिशबाजी और पटाखे 22 जनवरी के लिये लेकर आया है।उल्लेखनीय है। कि आर्यान्श के पितामह मझोला के पूर्व चेयरमैन राम औतार अग्रवाल श्री राम जन्मभूमि आंदोलन में पीलीभीत जिले से गिरफ्तार होने वाले प्रथम तीन कारसेवकों में से थे।और उस आंदोलन के हर चरण में महत्वपूर्ण भूमिका में रहे थे।आज उनके पौत्र में भी प्रभु श्री राम के प्रति वैसा ही समर्पण और प्रेम देखकर सभी लोग अभिभूत हैं।

251 महिलाओं ने निकाली भव्य कलश यात्रा

मुरादाबाद। महानगर मुरादाबाद के रामगंगा विहार स्थित ओम शिव हरी मनोकामना मंदिर के तत्वावधान में अयोध्या में नवनिर्मित भव्य श्री राम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की पूर्व संध्या पर रविवार को 251 महिलाओं की भव्य कलश यात्रा मंदिर परिसर से निकली गई। इसके बाद भव्य रामलीला मंचन मंदिर प्रांगण में हुआ।

ओम शिव हरी मनोकामना मंदिर में पंडित हरिश्चंद्र जोशी ने विधि विधान से कलश पूजन संपन्न कराया। इसके बाद पीतांबर वस्त्रों में तैयार 251 महिलाएं अपने सिर पर कलश रखकर गाजे-बाजे के साथ निकलीं।

राष्ट्रीय महिला खो-खो प्रतियोगिता का फाइनल मुकाबला हरियाणा को हराकर दिल्ली ने जीता

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बांदा। बुंदेलखंड के बांदा में अतर्रा के तथागत ज्ञानस्थली सीनियर सेकेंडरी स्कूल में चल रही चार दिवसीय अस्मिता खेलो इंडिया के तहत राष्ट्रीय महिला खो-खो प्रतियोगिता के अंतिम दिन दिल्ली और हरियाणा के बीच फाइनल मुकाबला हुआ। जिसमें कड़े मुकाबले के बीच दिल्ली ने हरियाणा को हराकर ट्रॉफी पर कब्जा कर लिया। प्रतियोगिता में 12 राज्यों की टीमें भाग ले रही थी। प्रतियोगिता में यूपी तीसरे स्थान पर रहा।अस्मिता खेलो इंडिया सीनियर महिला खो-खो लीग सेमीफाइनल में दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान की टीमें पहुंची। प्रथम सेमीफाइनल हरियाणा बनाम उत्तर प्रदेश के बीच हुआ। जिसमें 18 पॉइंट से हरियाणा ने जीत दर्ज की। दूसरा सेमीफाइनल मैच दिल्ली बनाम राजस्थान के बीच हुआ। जिसमें दिल्ली ने 40 पॉइंट से जीत दर्ज की। तीसरा स्थान प्राप्त करने के लिए राजस्थान बनाम उत्तर प्रदेश के बीच मैच हुआ। जिसमें राजस्थान ने जीत हासिल की। इसके बाद दिल्ली बनाम हरियाणा के बीच फाइनल महा मुकाबला हुआ जो बहुत ही कांटे का रहा।इन दोनों टीमों की तरफ से अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी भी खेल रहे थे, इसलिए प्रतियोगिता बहुत ही रोमांचक रही। अंततः दिल्ली ने 13 पॉइंट से बाजी मारी और जीत दर्ज की। इस पूरी प्रतियोगिता में बेस्ट अटैकर नसरीन शेख जर्सी नंबर 7 दिल्ली रहीं, जो अभी 2023 में राष्ट्रपति द्वारा अर्जुन पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं। इसके साथ ही स्वर्ण पदक विजेता भी है। इसके बाद बेस्ट डिफेंडर शहनाज जर्सी नंबर 10 दिल्ली की रही।

गन्ना मूल्य बढ़ोत्तरी से गन्ना किसानो में ख़ुशी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पीलीभीत।एलएच चीनी मिल पीलीभीत के क्रय केंद्र मझोला गेट प्रथम एवं बंदरबोझ का निरिक्षण ख़ुशी राम भार्गव जिला गन्ना अधिकारी पीलीभीत द्वारा किया गया।निरिक्षण के दौरान ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक पीलीभीत व अन्य लोग उपस्थित थे।किसानो द्वारा बताया गया कि मझोला क्रय केंद्र पर पक्ष -कॉलम --6/12 की पर्चियां निर्गत हो गयी है तथा बंदरबोझ क्रय केंद्र पर 8 वे पक्ष के 15 वे कॉलम की पर्चियां निर्गत की जा चुकी।क्रय केंद्र पर उपस्थित किसान रमाकांत,संकठा,नग्गू,महेश, सुकदेव,राम दरस व अन्य लोगो ने जिला गन्ना अधिकारी से पौधे गन्ने की पर्चियां दिलाने की माँग की है।जिला गन्ना अधिकारी द्वारा किसानो को बताया गया कि एक फरवरी से पौधे गन्ने की पर्चियां मिलने लगेगी द्यजिला गन्ना अधिकारी द्वारा क्रय केंद्र बंदरबोझ पर उपस्थित किसानो से पूछा कि प्रदेश सरकार ने गन्ना मूल्य 20 रूपये प्रति कुं बढ़ा दिया है तो किसानो ने कहा कि सरकार का बहुत बहुत धन्यवाद कि गन्ना किसानो की तरफ ध्यान दिया। क्योकि गन्ना यहाँ की मुख्य फसल है।

दोनों क्रय केन्द्रो पर यसजीके के माध्यम से नियुक्त तौल लिपिक तौल कार्य कर रहे है।एलएच चीनी मिल द्वारा आज तक 95.83लाख कुं गन्ना खरीद की जा चुकी है।दिनांक 12 जनवरी तक खरीदे गये गन्ने का भुगतान चीनी मिल द्वारा किसानो के खाते मे भेजा जा चुका है।चीनी मिल द्वारा अब तक 86981किसानो को 296.21 करोड़ रूपये का भुगतान किया जा चुका है। अब तक जिले मे 1.33 लाख किसानो से 160.00लाख कुं गन्ना खरीद की जा चुकी है।एल एच चीनी मिल द्वारा 12 जनवरी, पूरनपुर चीनी मिल द्वारा 31 दिसम्बर 2023,बीसलपुर चीनी मिल द्वारा एक जनवरी 2024 एवं बरखेड़ा चीनी मिल द्वारा 16 नवंबर 2023 तक खरीद किये गये गन्ने का भुगतान किसानो के खाते मे भेज दिया है।पूरे जनपद मे आज तक 1.11 लाख किसानो को 359.00 करोड़ रूपये का भुगतान चीनी मिलो द्वारा किया जा चुका है।

प्रभू श्रीराम के नाम आयोध्या मंदिर को समर्पित है रक्तदानः विहिप

मीरजापुर। 22 जनवरी को श्रीरामलला के प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष में रविवार को विन्ध्य फाउंडेशन ट्रस्ट की ओर से संकट मोचन मंदिर पर स्वैच्छिक रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि विश्व हिन्दू परिषद के जिलाध्यक्ष रामचन्द्र शुक्ल सहित राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ जिला प्रचारक धीरज ने संकट मोचन हनुमान की आरती कर सामूहिक हनुमान चालीसा का पाठ किया।

विहिप के जिलाध्यक्ष ने कहा कि जो भी रक्तदान कर रहे हैं वह प्रभू श्रीराम के नाम आयोध्या मंदिर को समर्पित है। हम सबके लिए गर्व की बात है रामलला 500 वर्षों पश्चात तंबू से निकल अपने वृहद महल में विराजमान होने जा रहे हैं। शिविर में स्वरूप गुप्ता, रितेश कुमार गुप्ता, विकल वर्मा, ब्रिजेश कुमार, स्वतंत्र सिंह, अभिषेक कुमार, महेश कुमार, शिव कुमार शुक्ल, बृजेष कुमार, विवेक त्रिपाठी आदि ने रक्तदान किया। रक्तदान करने वालों को संस्था की ओर से प्रशस्ति पत्र, रामनाम पट्टी एवं उपहार देकर समान्नित किया गया। इस दौरान मंडलीय रक्तकोषागार से रामकुमार गुप्ता, डॉ सूरज कुमार, कौंसलर माला सिंह पटेल, एलटी अमित कुमार एवं प्रदीप प्रजापति आदि रहे।

तीन आरोपितों की 91.37 करोड़ की बेनामी संपत्ति कुर्क

मथुरा। संगठित गिरोह बनाकर आपराधिक तरीके से अर्जित की गई हरियाणा के नूंह जिले के गांव पल्ला के रहने वाले इमरान खान की 91 करोड़ 37 लाख 89 हजार की बेनामी संपत्ति कुर्क की गई है। पुलिस की सबसे बड़ी कुर्की की कार्रवाई की गई है, जिसे थाना जैंत पुलिस ने किया है।वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक शैलेश कुमार पांडेय ने रविवार शाम ने बताया कि तीन अपराधियों ने एक गिरोह बनाकर अवैध तरीके से संपत्ति बना ली थी। जिला और पुलिस प्रशासन ने इन संपत्तियों को चिन्हित कर कार्रवाई के लिए जिलाधिकारी कार्यालय भेजा गया। डीएम शैलेंद्र कुमार सिंह ने संपत्ति को कुर्क करने के आदेश जारी कर दिए।इसी के तहत रविवार को क्षेत्राधिकारी सदर प्रवीण मालिक की अगुवाई में गैंगस्टर एक्ट संबंधित शातिर अभियुक्त गांव पल्ला निवासी इमरान खान, मोहम्मद समी आलम और एक महिला आरोपित है। इन लोगों ने गिरोह बनाकर अवैध तरीके से कुल 46 संपत्तियां खरीदी थीं, जिसे कुर्क कर लिया गया है।

एसएसपी ने बताया कि बेनामी सम्पत्ति फर्जी रूप से छल-कपटकर कूटरचित दस्तावेज दिखाकर व तैयार कर प्लॉट बेचकर, बुकिंग कर अवैध रूप से अर्जित की गई थी। आरोपित इमरान खान और महिला अपराधी ने 20 जनवरी को एक मुकदमा में न्यायालय में आत्मसमर्पण कर दिया था। मोहम्मद समी आलम को गिरफ्तार कर लिया गया था। आरोपितों के खिलाफ हरियाणा और उत्तर प्रदेश के कई जिलों में छह से अधिक मुकदमे दर्ज हैं। पिछले साल इसी गैंग ने वृंदावन में कुंभ क्षेत्र में फर्जी नक्शा बनाकर जमीन की बिक्री थी। कुर्क गई सपंत्ति में दुकान, गाड़ियां और प्लॉट भी शामिल हैं।

35 सौ दीपों से करेंगे स्वागत, प्राण प्रतिष्ठा के साक्षी बनेंगे कैदी

मीरजापुर। अयोध्या में भव्य राम मंदिर के उद्घाटन की तैयारियों के बीच राम भक्त अपने भगवान का स्वागत करने में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते हैं। भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा के आयोजन के लिए सभी अपने तरीक़े से भागेदारी करने की कोशिश में हैं। इस कड़ी में मीरजापुर जेल में बंद क़ैदी भी 35 सौ मिट्टी के दीपकों से अपने आराध्य भगवान राम के स्वागत की तैयारी कर रहे हैं।

जेलर व प्रभरी अधीक्षक अरूण कुमार मिश्र ने बताया कि कैदियों ने इच्छा जाहिर की थी जिसे देखते हुए जेल प्रशासन ने दीपों का इंतजाम किया है। कैदियों का कहना है कि उनकी भी भगवान राम में बहुत श्रद्धा है। ऐसे में रामलला के उत्सव में वे भी सहभागी बनेंगे।प्रभारी जेल अधीक्षक ने बताया कि जिला कारागार में साफ-सफाई के विशेष अभियान का रविवार को समापन किया गया। इसके बाद अखण्ड श्रीरामचरित मानस का पाठ बन्दियों द्वारा प्रारम्भ किया गया है, जिसका परायण 22 जनवरी की अपराह्न में होगा। इसके उपरान्त सभी बन्दियों एवं स्टाफ के लिए भण्डारे का आयोजन किया गया है।रामलला के प्राण-प्रतिष्ठा कार्यक्रम का सीधा प्रसारण करने लिए सभी बैरकों में बंदियों के लिए एलईडी टीबी की व्यवस्था की गई है। सायंकाल कारागार में दीपोत्सव तथा भगवान श्रीराम के जीवन चरित्र से संबंधित रंगोली कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। कारागार में वर्तमान में 700 बन्दी निरूद्ध है। इनके लिए प्रति बंदी पांच दीप प्रज्वलित कराने के लिए कुल 3500 मिट्टी के दीपकों की व्यवस्था की गई है। 22 तारीख को कैदी भजन कीर्तन भी करेंगे।उत्तर-प्रदेश सरकार ने राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह से जन-जन को जोड़ने की तैयारी की है। 22 जनवरी को जब अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा होगी तो प्रदेश की सभी जेलों में सुंदरकांड और रामायण पाठ की तैयारियां की गई है। इस दौरान कैदियों के लिए समारोह का लाइव प्रसारण करने का भी निर्देश दिया गया है।

रामलला विराजमान की भी शुरु हुई पूजा, मंदिर में होंगे स्थापित

अयोध्या। श्रीराम मंदिर में पिछले छह दिन से चल रहे प्राण प्रतिष्ठा के अनुष्ठान में रामलला विराजमान (प्रभु श्रीराम के पुराने विग्रह) की भी पूजा प्रारम्भ हो गई है। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के अनुसार मंदिर में श्रीरामलला की नई प्रतिमा के साथ पुराने विग्रह को भी स्थापित किया जाएगा।कुछ संतों ने रामलला विराजमान को लेकर हाल ही में शंका व्यक्त की थी, तो न्यास ने उसी समय स्पष्टीकरण दिया था कि प्रभु श्रीराम के पुराने विग्रह को भी मंदिर में स्थापित किया जायेगगौरतलब है कि श्रीरामलला के प्राण प्रतिष्ठा का अनुष्ठान पिछले छह दिन से जारी है।

सत्कर्म करते हुए मन और वाणी को मधुर रखना चाहिएः डां. कौशलेन्द्र

वर्तमान पीढ़ी बहुत भाग्यवान हैं। अपनी आँखों से हम अयोध्या में 'श्रीराम मन्दिर' भव्यता को साकार होते देख रहे हैं- डां.कौशलेन्द्र कृष्ण शास्त्री महराज

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। संत कुटी पलटूराम मंदिर सतरिख रोड चिनहट लखनऊ में श्री मद् भगवद् फाउंडेशन द्वारा आयोजित श्रीमद् भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ का चतुर्थ दिवस में कथा श्रवण कर भावविभोर हुए भक्त प्रख्यात भागवद प्रवक्ता डां. कौशलेंद्र कृष्ण शास्त्री जी महाराज ने श्रोताओं को संबोधित करते हुए कहा की सत्कर्म करते हुए मन और वाणी को मधुर रखना चाहिए तभी हमारा जीवन सार्थक होगा,।

कौशलेंद्र कृष्ण शास्त्री जी ने कहा लगभग 500 वर्षों की दीर्घ प्रतीक्षा के बाद 22 जनवरी, 2024 को श्रीराम अपने जन्मस्थली के गर्भगृह में पुनः विराजमान होंगे।भारतीय इतिहास का यह स्वर्णिम दिन है। जिस क्षण रामलला गर्भगृह में पुनः विराजमान होंगे, वह क्षण निश्चय ही भारत सहित विश्वभर में निवास कर रहे करोड़ों भारतवंशियों को अत्यन्त भावुक और आनंद से विभोर करने वाला है। वर्तमान पीढ़ी बहुत भाग्यवान हैं ।अपनी आँखों से हम अयोध्या में 'श्रीराम मन्दिर' भव्यता को साकार होते देख रहे हैं। कई पीढ़ियों की अविरत भक्ति, संघर्ष और फिर विधि सम्मत न्याय के बाद यह अवसर आया है। देश के हर नगर-ग्राम में श्रीराम के आगमन के लिए सज रहे हैं। पुनः महराज जी ने कथा में गज और ग्राह प्रसंग में में बताया कि हाथी का पैर जब मगर ने पकड़ लिया तो उसने अपने बचाव के सभी प्रयास किए अंत में कमल पुष्प लेकर गोविंद प्रभु का स्मरण किया तो भगवान तुरंत प्रगट होकर रक्षा करने आ गए और मगर से कहा मेरे भक्त का पैर छोड़ दे ,मगर ने कहा मैं कैसे इसका पैर छोड़ दूं इसने आपके पैर पकड़ रखे हैं इसलिए मैंने इसका पैर पकड़ रखा है ,अतः भक्त चरण आश्रय से उद्धार निश्चित होता है। सूर्यवंश वर्णन में राजा सगर के साठ हजार पुत्र कपिल मुनि के श्राप से भस्म हो गए थे उन्हें भागीरथ जी ने गंगा जी द्वारा उनका उद्धार किया ,

भक्त अंबरीशजी का चरित्र वर्णन एवं श्री राम जन्म की कथा श्रवण कराते हुए महाराज जी ने श्री कृष्ण के जन्म का सुंदर वर्णन किया महाराज जी ने कृष्ण जन्म से पहले राम जन्म की कथा इसलिए श्रवण कराई की राम चरित्र को समझे बिना जीव कृष्ण चरित्र का अधिकारी नहीं हो सकता ।बधाइयां गाई गई नंद के आनंद भयो जय कन्हैया लाल की ।भक्त भाव विभोर हो नृत्य करने लगे, उपस्थित सभी भक्तों को बधाइयां बांटीं गईं । खूशबू दिनेशानंद ज्योतिष गुरू पंडित अतुल राजेश पाठक ने श्रद्धालु श्रोताओं से कथा श्रवण करने का आग्रह किया।।

राष्ट्र और धर्म हित में मतभेदों को भुलाकर एकता का संदेश देना ही भारतीय परंपरा : शंकराचार्य

अयोध्या। कांची कामकोटि पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री विजयेंद्र सरस्वती महाराज ने रविवार को यहां कहा कि राष्ट्र हित, धर्म हित और विश्व के कल्याणार्थ जब भी कोई पहल होती है, तो आपसी सभी मतभेदों को भुलाकर एकता का संदेश देना ही भारतीय संस्कृति और परंपरा है।श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा से एक दिन पहले जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री विजयेंद्र सरस्वती जी महाराज आज राम नगरी अयोध्या पहुंचे और यह संदेश दिया। उन्होंने कहा कि दशाववतार में मुख्य अवतार श्रीराम जी का श्रीराम जन्मभूमि क्षेत्र में सोमवार को बाल राम विग्रह प्राण प्रतिष्ठा होना है। इस संदर्भ में उतरायण में पौष मास शुक्ल पक्ष द्वादश तिथि मृगशीर्स नशत्र में होना है। यह प्राण प्रतिष्ठा जगकल्याणकारी के लिए है।शंकराचार्य ने कहा कि प्रभु श्रीराम की कृपा भारतवासियों और विश्वभर में फैले सभी श्रद्धालुओं को मिले, ऐसी कामना करता हूं।शंकराचार्य के सचिव गजानंद कांड़े ने बताया कि जगद्गुरु ने कहा कि हमारे देश में जब-जब राष्ट्र हित की दिशा में कोई पहल हुई है तब-तब लोग आपसी मतभेद भुलाकर एक साथ आगे आये हैं। यही हमारी संस्कृति है। इसी तरह धर्म हित की पहल होने पर भी मतभेदों को भुलाकर एकता का संदेश देना भारत की गौरवशाली परंपरा रही है।गजानंद कांड़े के अनुसार जगद्गुरु शंकराचार्य ने यह भी कहा कि विश्व कल्याण के लिये पहल होने पर भी भारत का प्रत्येक नागरिक आपसी मतभेद भुलाकर दुनिया को एकता का संदेश देता है।

जेल में जंजाल

यह जेल अधिकारियों और अपराधियों की सांठगांठ की पराकाष्ठा ही है कि फिरोजपुर जेल के भीतर से 43 हजार फोन कॉल हुई और पांच हजार बैंक लेनदेन हुए। घटनाक्रम उजागर करता है कि जिन जेल अधिकारियों पर अपराधियों की सख्त निगरानी व समाज को भयमुक्त करने का जिम्मा है, वे अपराधियों से मिलीभगत करके व्यवस्था से विश्वासघात कर रहे हैं। जिस दायित्व के लिये सरकार उन्हें वेतन देती है, वे उससे छल ही कर रहे हैं। मानवीय मूल्यों के पतन की यह पराकाष्ठा ही है कि खाकी वर्दी में कुछ लोग निहित स्वार्थों व लालच के लिये समाज में तमाम लोगों के जीवन को संकट में डाल रहे हैं। उनकी इस संदिग्ध भूमिका से अपराधी अपने खतरनाक मंसूबों को जेल में रहते हुए भी अंजाम दे रहे हैं। यह संभव नहीं था कि बिना जेल अधिकारियों की मिलीभगत के अपराधी-तस्कर जेल के भीतर से अपराध का साम्राज्य चला सकें। यूं तो जेल-तंत्र में सडांध की खबरें पूरे देश से आती रहती हैं, लेकिन पंजाब में ऐसी खबरों की निरंतरता चिंताजनक है। अपराधी जेल के भीतर से निरंतर समानांतर शासन चला रहे हैं तो यह कानून के राज पर सवालिया निशान लगाता है। आखिर जेल के भीतर मोबाइल बिना जेलकर्मियों की मिलीभगत कैसे पहुंच रहे हैं? क्यों जेल के भीतर जैमर नहीं लगाए जाते ताकि अपराधी मोबाइलों का उपयोग न कर सकें? फिरोजपुर जेल के भीतर से 43 हजार फोन कॉल का होना, एक बड़े आपराधिक कृत्य को दर्शाता है। संभव है दुर्दांत अपराधियों के भय से कुछ जेल अधिकारी समर्पण करते हों। यदि ऐसा है तो उन्हें नैतिकता के आधार पर अपना पद छोड़ना चाहिए। आगे जांच से पता चलेगा कि बैंकिंग लेन-देन से किस-किस तक ड्रग मनी पहुंची और कौन इसका सूत्रधार था। निस्संदेह, इस आपराधिक कृत्य की व्यापक पैमाने पर जांच की जानी चाहिए। यह भी पड़ताल होनी चाहिए कि इन फोन कॉल में से कितनी परिजनों को की गई और कितनी अपराधियों को। निस्संदेह, यह भी पता लगाया जाना चाहिए कि क्या बैंक से लेन-देन जेल अधिकारियों को रिश्वत देने के लिये किया गया था? या यह धन नशीली दवाओं के भुगतान के लिये किया गया। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि देश की नामी जेलों में भी दुर्दांत अपराधियों को पांच सितारा सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिये जेल अधिकारियों व कर्मचारियों को मोटी रकम चुकाई जाती है। निस्संदेह, यह खतरनाक खेल समाज में मानवीय मूल्यों के पतन की गाथा भी बताता है। दरअसल, फिरोजपुर जेल में जेल अधिकारियों की मिलीभगत से अपराधियों की इन करतूतों का मामला तब प्रकाश में आया था, जब पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट ने एक जमानत याचिका पर सुनवाई करते हुए जेल में मोबाइल फोन के इस्तेमाल व नशीली दवाओं की तस्करी पर रिपोर्ट मांगी थी। कोर्ट ने पूछा था कि तीन तस्करों द्वारा अवैध रूप से इस्तेमाल किये गए फोन के जरिये जेल के अंदर से 43 हजार कॉल्स कैसे की गई। अदालत द्वारा इस मामले की जांच के आदेश दिये जाने के बाद पुलिस ने जेल विभाग के 11 अधिकारियों सहित 25 लोगों पर मामला दर्ज किया था। नौ जेल अधिकारियों के अलावा कुछ तस्करों, एक मोबाइल दुकान के मालिक और चाय के दुकानदार समेत 19 लोगों को गिरफ्तार किया गया था। इस जांच में जेल के भीतर से चलाए जा रहे ड्रग तस्करी के रैकेट का भी खुलासा हुआ। दो तस्करों की पत्नियों के खातों में करोड़ों रुपये का लेनदेन होने की बात सामने आई। निश्चित रूप से इन आपराधिक कृत्यों ने इस बात की जरूरत को बताया कि जेल अधिकारियों की कारगुजारी पर निगरानी रखने के लिये एक उच्चस्तरीय अधिकार संपन्न तंत्र विकसित किया जाए। जिसमें राज्य या केंद्र सरकार के उच्च पुलिस अधिकारी ऐसी किन्हीं साजिशों व कानून की अवहेलना की निगरानी रख सकें। इतना ही नहीं जेल अधिकारियों पर निगरानी के लिये नागरिकों के स्तर पर कोई व्यवस्था होनी चाहिए। निस्संदेह, जेल के भीतर से अपराधों का संचालन किसी कानून के राज पर सवालिया निशान की तरह है, जिस पर नियंत्रण बेहद जरूरी है।

श्रीराम जन्मभूमि मंदिर राष्ट्रीय गौरव के पुनर्ज़ागरण का प्रतीक

अयोध्या में श्रीराम मंदिर का विध्वंस भी इसी मनोभाव से, इसी उद्देश्य से किया गया था। आक्रमणकारियों की यह नीति केवल अयोध्या या किसी एक मंदिर तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए थी। भारतीय शासकों ने कभी किसी पर आक्रमण नहीं किया, परन्तु विश्व के शासकों ने अपने राज्य के विस्तार के लिए आक्रामक होकर ऐसे कुकृत्य किये हैं। परंतु इसका भारत पर उनकी अपेक्षानुसार वैसा परिणाम नहीं हुआ जिसकी आशा वे लगा बैठे थे। इसके विपरीत भारत में समाज की आस्था निष्ठा और मनोबल कभी कम नहीं हुआ, समाज झुका नहीं, उनका प्रतिरोध का जो संघर्ष था वह चलता रहा। इस कारण जन्मस्थान बार-बार पर अपने आधिपत्य में कर, वहां मंदिर बनाने का निरंतर प्रयास किया गया। उसके लिए अनेक युद्ध, संघर्ष और बलिदान हुए। और राम जन्मभूमि का मुद्दा हिंदुओं के मन में बना रहा। 1857 में विदेशी अर्थात ब्रिटिश शक्ति के विरुद्ध युद्ध योजनाएं बनाई जाने लगी तो उसमें हिंदू और मुसलमानों ने मिलकर उनके विरुद्ध लड़ने की तैयारी दर्शाई और तब उनमें आपसी विचार-विनिमय हुआ। और उस समय गौऽहत्या बंदी और श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति के मुद्दे पर सुलह हो जायेगी, ऐसी स्थिति निर्माण हुई। बहादुर शाह जफर ने अपने घोषणापत्र में गोहत्या पर प्रतिबंध भी शामिल किया। इसलिए सभी समाज एक साथ मिलकर लड़े। उस युद्ध में भारतीयों ने वीरता दिखाई लेकिन दुर्भाग्य से यह युद्ध विफल रहा, और भारत को स्वतंत्रता नहीं मिली, ब्रिटिश शासन अबाधित रहा, परन्तु राम मंदिर के लिए संघर्ष नहीं रुका। अंग्रेजों की हिंदू मुसलमानों की फूट डालो और राज करो की नीति के अनुसार, जो पहले से चली आ रही थी और इस देश की प्रकृति के अनुसार अधिक से अधिक सख्त होती गई। एकता को तोड़ने के लिए अंग्रेजों ने संघर्ष के नायकों को अयोध्या में फाँसी दे दी और राम जन्मभूमि की मुक्ति का प्रश्न वहीं का वहीं रह गया। राम मंदिर के लिए संघर्ष जारी रहा। 1947 में देश को स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जब सर्वसम्मति से सोमनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया तभी ऐसे मंदिरों की चर्चा शुरू हुई।

हमारे भारत का इतिहास पिछले लगभग डेढ़ हजार वर्षों से आक्रांताओं से निरंतर संघर्ष का इतिहास है। आरंभिक आक्रमणों का उद्देश्य लूटपाट करना और कभी-कभी (सिकंदर जैसे आक्रमण) अपना राज्य स्थापित करने के लिए होता था। परंतु इस्लाम के नाम पर पश्चिम से हुए आक्रमण यह समाज का पूर्ण विनाश और अलगाव ही लेकर आए। देश-समाज को हतोत्साहित करने के लिए उनके धार्मिक स्थलों को नष्ट करना अनिवार्य था, इसलिए विदेशी आक्रमणकारियों ने भारत में मंदिरों को भी नष्ट कर दिया। ऐसा उन्होंने एक बार नहीं, बल्कि अनेक बार किया। उनका उद्देश्य भारतीय समाज को हतोत्साहित करना था ताकि भारतीय स्थायी रूप से कमजोर हो जाएं और वे उन पर अबाधित शासन कर सकें। अयोध्या में श्रीराम मंदिर का विध्वंस भी इसी मनोभाव से, इसी उद्देश्य से किया गया था। आक्रमणकारियों की यह नीति केवल अयोध्या या किसी एक मंदिर तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए थी। भारतीय शासकों ने कभी किसी पर आक्रमण नहीं किया, परन्तु विश्व के शासकों ने अपने राज्य के विस्तार के लिए आक्रामक होकर ऐसे कुकृत्य किये हैं। परंतु इसका भारत पर उनकी अपेक्षानुसार वैसा परिणाम नहीं हुआ जिसकी आशा वे लगा बैठे थे। इसके विपरीत भारत में समाज की आस्था निष्ठा और मनोबल कभी कम नहीं हुआ, समाज झुका नहीं, उनका प्रतिरोध का जो संघर्ष था वह चलता रहा। इस कारण जन्मस्थान बार-बार पर अपने आधिपत्य में कर, वहां मंदिर बनाने का निरंतर प्रयास किया गया। उसके लिए अनेक युद्ध, संघर्ष और बलिदान हुए। और राम जन्मभूमि का मुद्दा हिंदुओं के मन में बना रहा। 1857 में विदेशी अर्थात ब्रिटिश शक्ति के विरुद्ध युद्ध योजनाएं बनाई जाने लगी तो उसमें हिंदू और मुसलमानों ने मिलकर उनके विरुद्ध लड़ने की तैयारी दर्शाई और तब उनमें आपसी विचार-विनिमय हुआ। और उस समय गौऽहत्या बंदी और श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति के मुद्दे पर सुलह हो जायेगी, ऐसी स्थिति निर्माण हुई। बहादुर शाह जफर ने अपने घोषणापत्र में गोहत्या पर प्रतिबंध भी शामिल किया। इसलिए सभी समाज एक साथ मिलकर लड़े। उस युद्ध में भारतीयों ने वीरता दिखाई लेकिन दुर्भाग्य से यह युद्ध विफल रहा, और भारत को स्वतंत्रता नहीं मिली, ब्रिटिश शासन अबाधित रहा, परन्तु राम मंदिर के लिए संघर्ष नहीं रुका। अंग्रेजों की हिंदू मुसलमानों की फूट डालो और राज करो की नीति के अनुसार, जो पहले से चली आ रही थी और इस देश की प्रकृति के अनुसार अधिक से अधिक सख्त होती गई। एकता को तोड़ने के लिए अंग्रेजों ने संघर्ष के नायकों को अयोध्या में फाँसी दे दी और राम जन्मभूमि की मुक्ति का प्रश्न वहीं का वहीं रह गया। राम मंदिर के लिए संघर्ष जारी रहा। 1947 में देश को स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जब सर्वसम्मति से सोमनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया तभी ऐसे मंदिरों की चर्चा शुरू हुई। राम जन्मभूमि की मुक्ति के संबंध में ऐसी सभी सर्वसम्मति पर विचार किया जा सकता था, परंतु राजनीति की दिशा बदल गयी। भेदभाव और तुष्टीकरण जैसे स्वार्थी राजनीति के रूप प्रचलित होने लगे और इसलिए प्रश्न ऐसे ही बना रहा। सरकारों ने इस मुद्दे पर हिंदू समाज की इच्छा और मन की बात पर विचार ही नहीं किया। इसके विपरीत, उन्होंने समाज द्वारा की गई पहल को उध्वस्त करने का प्रयास किया। स्वतंत्रता पूर्व से ही इससे संबंधित चली आ रही कानूनी लड़ाई निरंतर चलती रही। राम जन्मभूमि की मुक्ति के लिए जन आंदोलन 1980 के दशक में शुरू हुआ और तीस वर्षों तक जारी रहा। वर्ष 1949 में राम जन्मभूमि पर भगवान श्री रामचन्द्र की मूर्ति का प्राकट्य हुआ। 1986 में अदालत के आदेश से मंदिर का ताला खोल दिया गया। आगामी काल में अनेक अभियानों एवं कारसेवा के माध्यम से हिन्दू समाज का सतत संघर्ष जारी रहा। 2010 में इलाहाबाद हाई कोर्ट का फैसला स्पष्ट रूप से समाज के सामने आया। जल्द से जल्द अंतिम निर्णय के माध्यम से इस मुद्दे को हल करने के लिए आगे भी आग्रह जारी रखना पड़ा। 9 नवंबर 2019 में 134 वर्षों के कानूनी संघर्ष के बाद सुप्रीम कोर्ट ने सत्य और तथ्यों को परखने के बाद संतुलित निर्णय दिया। दोनों पक्षों की भावनाओं और तथ्यों पर भी विचार इस निर्णय में किया गया था। कोर्ट में सभी पक्षों के तर्क सुनने के बाद यह निर्णय सुनाया गया है। इस निर्णय के अनुसार मंदिर का निर्माण के लिए एक न्यासी मंडल की स्थापना की गई। मंदिर का भूमिपूजन 5 अगस्त 2020 को हुआ और अब पौष शुक्ल द्वादशी युगाब्द 5125, तदनुसार 22 जनवरी 2024 को श्री रामलला की मूर्ति स्थापना और प्राणप्रतिष्ठा समारोह का आयोजन किया गया है। धार्मिक दृष्टि से श्रीराम बहुसंख्यक समाज के आराध्य देव हैं और श्री रामचन्द्र का जीवन आज भी संपूर्ण समाज द्वारा स्वीकृत आचरण का आदर्श है । इसलिए अब अकारण विवाद को लेकर जो पक्ष-विपक्ष खड़ा हुआ है, उसे ख़त्म कर देना चाहिए। इस बीच में उत्पन्न हुई कड़वाहट भी समाप्त होनी चाहिए। समाज के प्रबुद्ध लोगों को यह अवश्य देखना चाहिए कि विवाद पूर्णतः समाप्त हो जाये। अयोध्या का अर्थ है 'जहां युद्ध न हो', 'संघर्ष से मुक्त स्थान' वह नगर ऐसा है। संपूर्ण देश में इस निमित्त मन में अयोध्या का पुनर्निर्माण आज की आवश्यकता है और हम सभी का कर्तव्य भी है। अयोध्या में श्रीराम मंदिर के निर्माण का अवसर अर्थात राष्ट्रीय गौरव के पुनर्ज़ागरण का प्रतीक है। यह आधुनिक भारतीय समाज द्वारा भारत के आचरण के मर्यादा की जीवनदृष्टि की स्वीकृति है । मंदिर में श्रीराम की पूजा 'पत्रं पुष्पं फलं तोयं' की पद्धति से और साथ ही राम के दर्शन को मन मंदिर में स्थापित कर उसके प्रकाश में आदर्श आचरण अपनाकर भगवान श्रीराम की पूजा करनी है क्योंकि शिवो भूत्वा शिवं भजेत रामो भूत्वा रामं भजेत को ही सच्ची पूजा कहा गया है। इस दृष्टि से विचार करें तो भारतीय संस्कृति के सामाजिक स्वरूप के अनुसार-

मातृवत परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्ठवत।
आत्मवत् सर्वभूतेषु, यः पश्यति सः पंडितः।

इस तरह हमें भी श्री राम के मार्ग पर चलने होगा।

जीवन में सत्यनिष्ठा, बल और पराक्रम के साथ क्षमा, विनयशीलता और नम्रता, सबके साथ व्यवहार में नम्रता, हृदय की सौम्यता और कर्तव्य पालन में स्वयं के प्रति कठोरता इत्यादि, श्री राम के गुणों का अनुकरण हर किसी को अपने जीवन में और अपने परिवार में सभी के जीवन में लाने का प्रयत्न ईमानदारी, लगन और मेहनत से करना होगा। साथ ही, अपने राष्ट्रीय जीवन को देखते हुए सामाजिक जीवन में भी अनुशासन बनाना होगा। हम जानते हैं कि श्री राम-लक्ष्मण ने उसी अनुशासन के बल पर अपना 14 वर्ष का वनवास और शक्तिशाली रावण के साथ सफल संघर्ष पूरा किया था। श्री राम के चरित्र में प्रतिबिंबित न्याय और करुणा, सद्भाव, निष्पक्षता, सामाजिक गुण, एक बार फिर समाज में व्याप्त करना, शोषण रहित समान न्याय पर आधारित, शक्ति के साथ-साथ करुणा से संपन्न एक पुरुषार्थी समाज का निर्माण करना, यही श्रीराम की पूजा होगी । अहंकार, स्वार्थ और भेदभाव के कारण यह विश्व विनाश के उन्माद में है और अपने ऊपर अनंत विपत्तियां ला रहा है। सद्भाव, एकता, प्रगति और शांति का मार्ग दिखाने वाले जगदाभिराम भारतवर्ष के पुनर्निर्माण का सर्व-कल्याणकारी और 'सर्वेषाम् अविरोधी' अभियान का प्रारंभ, श्री रामलला के राम जन्मभूमि में प्रवेश और उनकी प्राण-प्रतिष्ठा से होने वाला है। हम उस अभियान के सक्रिय कार्यान्वयनकर्ता हैं। हम सभी ने 22 जनवरी के भक्तिमय उत्सव में मंदिर के पुनर्निर्माण के साथ-साथ भारत और इससे पूरे विश्व के पुनर्निर्माण को पूर्तता में लाने का संकल्प लिया है। इस भावना को अंतर्मन में स्थापित करते हुए अग्रसर हो।

डॉ. मोहन भागवत
सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

गुरुकुल और राष्ट्रीय शिक्षा नीति में श्रीराम

सुरेश जैन

श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। श्रीराम का जीवन समाज के लिए आदर्श है। उनकी शिक्षा गुरुकुल में होती है। बाबा तुलसी के शब्दों में गुरु गृह पढ़न गए रघुराई, अल्पकाल विद्या सब पाई। श्रीराम चक्रवर्ती सम्राट के बेटे हैं। किन्तु वे शिक्षा ग्रहण करने के लिए गुरु वशिष्ठ के गुरुकुल में जाते हैं। यह केवल प्रतीकात्मक नहीं है। इस व्यवस्था का व्यक्तित्व निर्माण पर गहरा प्रभाव पड़ता है। वे वहां दूसरे विद्यार्थियों की तरह ही रहते हैं। गुरुकुल के कार्यों में उसी तरह हाथ बंटाते हैं, जैसे दूसरे बटुक करते हैं। गुरुकुल में आम और खास के बीच कोई भेद नहीं है। गुरुकुल में परा और अपरा अर्थात लौकिक और अलौकिक दोनों तरह की ही शिक्षा ग्रहण की जाती है। परा विद्या में शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद, नक्षत्र, वास्तु, आयुर्वेद, वेद, कर्मकांड, ज्योतिष, सामुद्रिक शास्त्र, हस्तरेखा एवम् धनुर्विद्या शामिल है। इससे उनकी समझ, अनुभव, विवेक, विचारशीलता और सही समय पर सही निर्णय लेने की क्षमता को विकसित करने की पृष्ठभूमि तैयार होती है। इसी तरह के पाठ्यक्रमों की परिकल्पना राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भी की गई है। इसमें मुख्य विषय के अलावा आनुषांगिक विषयों को भी पढ़ाए जाने के लिए पाठ्यक्रम बनाए गए हैं। गुरुकुल में भी इसी तरह की व्यवस्था है। क्योंकि, राम चक्रवर्ती सम्राट के बेटे हैं। इसलिए उनके मूल विषय के रूप में कूटनीति और धनुर्विद्या जैसे विषयों को पढ़ना अनिवार्य है। किन्तु इसके साथ ही निरुक्त, छंद, नक्षत्र, वास्तु, आयुर्वेद, वेद, कर्मकांड, ज्योतिष जैसे विषयों की भी शिक्षा दी जाती है। ताकि उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो सके। गुरुकुल में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि विद्यार्थी के लिए जितना महत्वपूर्ण उसका औपचारिक अध्ययन है, उतना ही महत्वपूर्ण अध्ययन के आसपास का परिवेश है। उस परिवेश के माध्यम से छात्रों में आत्मनिर्भरता, अनुशासन, समय प्रबंधन, सामाजिक सामंजस्य की कला और नेतृत्व के गुण जैसे व्यावहारिक ज्ञान, विद्यार्थी स्वयं ही आत्मसात कर लेता है। शिक्षा की पूर्णता में दोनों ही समान रूप से आवश्यक हैं। कौशल के राजकुमार राम गुरुकुल में एक बटुक की तरह इन सभी गुणों को सीखते हैं। गुरुकुल में राम विद्या ग्रहण करने जाते हैं। विद्या और ज्ञान में अंतर है। सूचनाओं के संकलन मात्र से ज्ञान तो प्राप्त हा सकता है, किन्तु विद्या उससे अलग है। विद्या सोदेश्य होती है। यह व्यक्तित्व को गढ़ने का एक माध्यम होती है। विष्णु पुराण में कहा गया है- तत्कर्म यन्न बन्धाय सा विद्या या विमुक्तए आयासाय परम कर्म विद्यान्या शिल्प नैपुणम अर्थात कर्म वही है, जो बंधन में न बांधे और विद्या वही है, जो मुक्त करे। अन्य सभी कर्म केवल निरर्थक क्रिया हैं, जबकि अन्य सभी अध्ययन केवल कारीगरी मात्र हैं। गुरुकुल में राम को दी जाने वाली विद्या मुक्ति देने के लिए दी जाने वाली शिक्षा है। उसका उनके व्यक्तित्व पर गहरा असर पड़ा है। मुक्ति का अर्थ सामाजिक जीवन की कुरीतियों से मुक्ति। अंधविश्वास से मुक्ति। मुक्ति का अर्थ ऊंच-नीच के मनोभाव से मुक्ति। मुक्ति के मायने अवैज्ञानिक सोच से मुक्ति। स्वार्थ और जड़ता से मुक्ति। हर तरह के अहंकार से मुक्ति। श्रीराम के व्यक्तित्व पर इस विद्या का गहरा असर पड़ा है और यह उनके भावी जीवन में दृष्टिगोचर भी हुआ है। विद्या के बारे में कहा गया है- विद्या ददाति विनयं, विनयाद्याति पात्रताम। विद्या विनय देती है। उससे पात्रता विकसित होती है। व्यक्ति उतना ही सीख पाता है, जितनी उसकी पात्रता होती है। जिसकी पात्रता जितनी व्यापक होती है, उसका व्यक्तित्व भी उतना ही व्यापक होता है। सागर जैसा व्यापक होने के लिए उसके जैसी व्यापक विनम्रता और शांत चित्त की आवश्यकता होती है। श्रीराम गुरुकुल जाकर इसी विनम्रता को आत्मसात करते हैं, जो उनके व्यक्तित्व को सागर जैसा विस्तार देती है। जिसके लिए नर-वानर में कोई भेद नहीं। नगरवासी और वनवासी उनके लिए एक जैसे हैं। सुग्रीव का भी स्वागत है और अपने विरोधी रावण के छोटे भाई को भी शरणागत किया जाता है। गुरुकुल में आत्मसात किए गए इन सभी सद्गुणों का असर श्रीराम के जीवन पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 में इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि आरंभिक शिक्षा मातृभाषा में हो, शिक्षा में भारतीय मूल्यों और चरित्र निर्माण पर विशेष जोर हो। शिक्षा समावेशी हो। एकांगी नहीं हो और विद्यार्थियों में कौशल का विकास हो।

सेहत मंत्र

स्वाइन फ्लू के प्रकोप से बचना है तो करें अर्क फूल का सेवन, पास भी नहीं आएगा रोग

स्वाइन फ्लू एक बार फिर से अपना प्रकोप दिखाना शुरू कर दिया है। आलम यह है कि सिर्फ आम व्यक्ति ही नहीं बल्कि बड़े बड़े नेता और सेलेब्रिटी भी इसकी चपेट में आ रहे हैं। पिछले दिनों बीजेपी के बड़े नेता रविशंकर प्रसाद को स्वाइन फ्लू हुआ था तो अब बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह भी स्वाइन फ्लू की चपेट में आ चुके हैं। आप भी अपने आसपास के लोगों को स्वाइन फ्लू की चपेट में आते हुए देख रहे होंगे। कहने का मतलब यह है कि जिस तेजी से यह रोग फैल रहा है उससे लगता है कि यह इतनी जल्दी जाने वाला नहीं है। इसलिए जरूरी है कि आप अपना खुद ख्याल रखें। यह एक संक्रमित रोग है जो एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। अगर इसके लक्षणों के बात करें तो वह जुकाम से काफी मिलते हैं। ऐसे में आपको समझ ही नहीं आएगा कि आपके आसपास के व्यक्ति को सामान्य जुकाम है या फिर वह स्वाइन फ्लू का मरीज है। इसलिए जरूरी है कि आप अपनी सुरक्षा के इंतजाम खुद ही करें। आज हम आपको स्वाइन फ्लू से बचने के लिए अर्क या आक फूल के फायदे बता रहे हैं। अर्क, आक, अकोवा और मदार इस फूल के कई नाम है। इसमें कई औषधीय गुण पाए जाते हैं। यह सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होता है। इसके फूल-पत्तियों का इस्तेमाल करने से स्वाइन फ्लू रोग आसपास भी नहीं आता है। इसके लिए आपको रोजाना गुनगुने पानी के साथ इस फूल को या फिर इसकी पत्तियां चबानी है। सिर्फ स्वाइन फ्लू ही नहीं बल्कि इसके सेवन से अस्थमा, डायबिटीज, कुष्ठ रोग और बवासीर जैसी बीमारियों को दूर करने में मदद करता है। इससे स्किन में एलर्जी या खुजली जैसी समस्याओं को दूर किया जा सकता है। विषैला होने के बावजूद भी इस पौधे में कई गुण हैं। आपको बता दें कि मदार का पुष्प भगवान शिव को भी चढ़ाया जाता है। हिंदू मान्यताओं के अनुसार इस पुष्प से भगवान शिव प्रशन्न होते हैं। तो आइए जानते है किस तरह इस पौधे के फूल, पत्ते का इस्तेमाल से बड़ी-बड़ी बीमारियों को दूर करने में मदद करता है। पुराणों में इसके महत्ता का वर्णन किया गया है। अर्क को आक भी कहते हैं, यह सफ़ेद और लाल दो रंग का होता हे।

धर्म मंत्र

घर पर नहीं रखी जाती है शनि की प्रतिमा

कई बार आपके काम बनते बनते बिगड़ जाते हैं, या आप लगातार बीमार हैं, किसी परेशानी में हों या परिजनों या मित्रों से मनमुटाव हो जाए तो संभव है कि आपकी कुंडली में शनि की स्थिति सही ना हो। आप पर शनि की महादशा, साढ़ेसाती, ढैय्या आदि का प्रकोप हो सकता है। ऐसे में उसे शांत करने के उपाय करने आवश्यक हो जाते है। इसके लिए आप शनिदेव की पूजा घर पर भी कर सकते हैं। बस कुछ विशेष बातों का ध्यान रखें। वास्तव में शनिदेव को श्राप है कि वे जिस किसी को वो सीधी नजरों से देखेंगे, उसका अनिष्ट हो जाएगा। इसलिए वास्तु शास्त्र के अनुसार घर पर शनिदेव की मूर्ति रखना वर्जित है। इसलिए याद रखें कि उनको मन में ही स्मरण करके उनकी पूजा करें। शनिवार को हनुमान जी की भी पूजा का विधान है तो आप उनके समक्ष पूजा करें और शनिदेव को भी याद करें। इससे भी शनि प्रसन्न होते हैं। घर पर शनिदेव की पूजा सामान्य रूप से ही करें और उसके बाद किसी भी निकट के मंदिर जा कर शनिदेव को नीले या काले रंग के वस्त्र चढ़ायें। इसके अतिरिक्त शनिवार को व्रत का संकल्प लें और नहा-धोकर काले वस्त्र धारण कर पूजा करें। इस दिन सरसों या तिल के तेल से दिया जला शनिदेव को अर्पित करें। साथ ही शनिदेव को तिल, काली उदड़ या कोई भी काली वस्तु भेंट में चढ़ायें।

पर्यटन

चाय और कॉफी के बागानों के लिए जाना जाता है चिकमगलूर

चिकमगलूरभारत के कर्नाटक राज्य के चिक्कमगलुरु जिले में स्थित है। मुल्लयनागिरी पर्वत श्रेणीयों की तलहटी में स्थित यह शहर अपनी चाय और कॉफी के बागानों के लिए जाना जाता है। इस शहर का सब से निकटतम हवाई अड्डा है मंगलोर का बाजपे हवाई अड्डॉ, निकटतम रेलवे स्टेशन है कडुर। चिक्कमगलुर जिले को 1947 तक कडुर जिले के नाम से जाना जाता था। यह लगभग कर्नाटक राज्य के दक्षिण पश्चिमी भाग में स्थित है। इस जिले का एक बड़ा क्षेत्र है, 'मलनाड' यानी, भारी वर्षा होनेवाला एक बड़ा सा पहाड़ी वन क्षेत्र। इस जिले का नाम चिकमगलूर इस मिख्यालय शहर से पडा है जिसका शब्दशः अर्थ है, छोटी बेटी का शहर- चिक्क+मागल+ऊरू-(कन्नडा में)। कहा जाता है कि, सक्रेपटना के प्रसिद्द प्रमुख रुक्मांगद की छोटी बेटी को यह एक दहेज के रूप में दिया गया था। शहर का एक अन्य भाग हिरेमगलुर के नाम से जाना जाता है, जिसे बड़ी बेटी को दिया था। लेकिन कुछ पुराने शिलालेखों से पता चलता है कि, इन दो स्थानों को किरिया-मुगुली और पिरिया-मुगुली के नाम से जाना जाता था। बाबा-बुदन पहाड़ी श्रृंखला के एक उपजाऊ घाटी की दक्षिण में इस जिले का मुख्यालय शहर स्थित है। यह शिक्षा, व्यापार और वाणिज्य का एक केन्द्र है। शहर का वातावरण बहुत ही स्वास्थ्यकारक है और वहाँ पर सभी धर्मों की पूजनीय समाधियाँ हैं- कोदंडराम मंदिर जो की, होयसल और द्रविड़ वास्तुशास्त्र शैली का मिलाप माना जाता है, जामिया मस्जिद तथा न्यू सेंट जोसेफ कैथेड्रल जिस का बरामदा आकर्षक सीप की आकार में बनाया गया है। हिरेमगलूर जो अब चिक्कमगलुर शहर का हिस्सा है, उस में एक ईश्वरा मंदिर है जहाँ पर 1.22 मीटर ऊंचे गोलकार जदेमुनी की बड़े ही चतुराई से बनाई गई प्रतिमा है। मंदिर में एक यूपस्तम्भ भी है जिसे राजा जनमेजय द्वारा अपने सर्प यज्ञ के दौरान स्थापित किया गया था ऐसा माना जाता है। वहाँ एक परशुराम मंदिर और एक काली मंदिर भी है।

राम मंदिर है देश की निशानी मितवा बोला झूमि-झूमि सरजू के पानी मितवा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

मसौली बाराबंकी। भगवान श्रीराम प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को लेकर रविवार को मसौली चौराहा स्थित शिवगँगा मैरिज लान मे खिचड़ी भोज एव शिवगँगा साहित्य सेवा समिति के तत्वाधान मे काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया कार्यक्रम के आयोजक राजकुमार सोनी ने कवियों को अंगवस्त्र ओढाकर सम्मानित किया।

कार्यक्रम मे भगवान श्रीराम को नमन करते हुए संस्कृतिक प्रकोष्ठ की प्रांतीय सह संयोजक नीरा सिन्हा ने कहा कि बरसों का इतंजार हुआ खत्म अब बस हर जगह होगी राम नाम की गूंज क्योंकि 22 जनवरी को राम मंदिर का उद्घाटन देश के लिए स्वर्णिम दिन है जिसके लिए ना जानें कितने सालों तक राम भक्तों ने लड़ाई लड़ी तब जाकर प्रभु श्रीराम की स्थली अयोध्या वापस मिली। काव्य गोष्ठी का शुभारम्भ करते हुए कवियत्री नीरा सिन्हा ने कहा कि मेरी

चौखट पे चल के आज, चारो धाम आये हैं,
बजाओ ढोल स्वागत में, मेरे घर राम आये हैं।

कवि रामकिशोर तिवारी ने कहा कि राम मंदिर है देश की निशानी मितवा
बोला झूमि झूमि सरजू के पानी मितवा
डा ओपी वर्मा उर्फ़ ओम ने प्राण प्रतिष्ठा पर कविता पाठ करते हुए कहा कि
प्राण प्रतिष्ठा के दिन हम दब दीपावली मनाएंगे
रामलला का पूजन करके गीत सनातन गाएंगे

प्रसिद्ध कवि डा अमरीश अम्बर ने कहा कि
बहु मे बेटी नजर आये ननद भाभी पर इतराये
प्रीत मे जहा रवानी है स्वर्ग की यह निशानी है।

आयोजक कवि राज कुमार सोनी ने कहा कि
न जाने कितना लहु बाहाया तब जाकर कही न्याय मिला
पावन अवध की धरती पर राम का भव्य मंदिर बना

अजय अटल ने कहा कि
जब छोड़ कर साथी धरा सुर धाम जायेगा
तो बस राम ही भौ पार का साधन रह जाएगा।

डा आलोक शुक्ल ने कविता पाठ करते हुए कहा कि
राम जब राम राम से मिले होंगे हृदय की धड़कनो के संघ मे मिले होंगे।

इसके आलावा कवि अशोक सोनी, डा ओम शर्मा, प्रमोद पंकज, सुनील झंझटी, नागेंद्र सिंह, ध्यान सिंह चिंतन, राम किशुन, आदर्श पाण्डेय, वीरेंद्र सिंह, डा घनश्याम शर्मा, कृष्ण वीर सिंह, अवधराम गुरु, मनीष सोनी, अमर जीत यादव ने कविता पाठ किया। कार्यक्रम मुख्य अतिथि नीरा सिन्हा, राजकिशोर तिवारी, विनय दास को समिति के अध्यक्ष राजकुमार सोनी ने सम्मानित किया ।

जगत कल्याणकारी है राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा : विजयेंद्र सरस्वती

अयोध्या। कांची कामकोटि पीठ के पीठाधीश्वर जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी विजयेंद्र सरस्वती ने रविवार को कहा कि राम मंदिर का प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम जगत कल्याणकारी है। उन्होंने कहा कि दशावतार में भगवान राम का अवतार प्रमुख है। सोमवार को रामलला की प्राण प्रतिष्ठा होगी। महत्वपूर्ण यज्ञशाला का निर्माण एवं पूर्णाहुति होगी। आचार्य गणेश शास्त्री द्रविड़ और लक्ष्मीकांत दीक्षित की देखरेख में बहुत सुंदर कार्यक्रम हो रहा है।शंकराचार्य ने कहा कि भगवान रामचंद्र की कृपा एवं आशीर्वाद संपूर्ण भारतवासियों और विश्व के सभी भक्तों को प्राप्त हो। भगवान राम से हम भारत की सुरक्षा एवं समृद्धि के लिए प्रार्थना करेंगे।स्वामी विजयेंद्र सरस्वती के श्रीराम जन्मभूमि मंदिर परिसर पहुंचने पर श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष स्वामी गोविंद देव गिरी महाराज ने उनका स्वागत किया। प्राण प्रतिष्ठा समारोह में जगतगुरु शंकराचार्य सोमवार को स्वयं उपस्थित रहेंगे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल ने शंकराचार्य का आशीर्वाद लिया।

महादेवा पहुंचे प्रभारी मंत्री जितिन प्रसाद, प्रस्तावित कॉरिडोर की ली जानकारी

मंदिर परिसर की साफ सफाई,लोधेश्वर का किया जलाभिषेक

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी।प्रदेश के लोक निर्माण एवं जिले के प्रभारी मंत्री जितिन प्रसाद ने रविवार को लोधेश्वर महादेवा पहुंचकर मंदिर परिसर की साफ-सफाई की। लोधेश्वर महादेव की पूजा अर्चना कर विश्व कल्याण की कामना की। उन्होंने मौके पर मौजूद पीडब्ल्यूडी विभाग के अधिकारियों से महादेवा कॉरिडोर बनाने के लिए प्रस्तावित कार्य योजना के बारे में जानकारी ली। विभाग के द्वारा सड़क कितनी चौड़ी की जाएगी तथा कितनी जमीन अधिग्रहण की जाएगी इस बारे में अधिकारियों ने जानकारी दी। इस दौरान बुढ़वल चौराहे बस स्टॉप पर नगर अध्यक्ष रामशरण पाठक के द्वारा व महादेवा डाक बंगले के पास ब्लॉक प्रमुख संजय तिवारी के द्वारा भव्य स्वागत किया गया। एमएलसी अवनीश सिंह, भाजपा जिलाध्यक्ष अरविंद मौर्य,पूर्व विधायक शरद कुमार अवस्थी, एडीएम डॉ.अरुण कुमार सिंह एसडीएम नागेंद्र पांडेय पुलिस क्षेत्राधिकारी हर्षित चौहान, प्रभारी निरीक्षक रत्नेश कुमार पांडेय जिला पंचायत सदस्य प्रतिनिधि नानमून शुक्ला ग्राम प्रधान राजन तिवारी सहित भारी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता व संबंधित विभागीय अधिकारी कर्मचारी मौजूद रहे।

बुनियादी शिक्षा मजबूत करने के लिए आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को दिया गया प्रशिक्षण

कैनविज टाइम्स संवाददाता

कोठी बाराबंकी शिक्षा नीति के तहत आंगनबाड़ी केंद्रों पर बच्चों को कक्षा तीन से छःसाल तक के बच्चों को प्री-प्राइमरी की पढ़ाई कराई जाएगी। बच्चों को पुष्टाहार के साथ शिक्षा भी दी जाएगी। प्री प्राइमरी शिक्षा के अंतर्गत 52 सप्ताह के गतिविधि कैलेंडर आधारित बेसिक शिक्षा विभाग तथा आईसीडीएस विभाग के संयुक्त तत्वावधान में रविवार विकासखंड सिद्धौर से आंगनबाडीओं की ब्लॉक स्तरीय अभिमुखीकरण कार्यशाला केसरगंज चौराहा स्थित ब्लॉक संसाधन केंद्र सिद्धौर में तीन दिवसीय किया गया। प्रतिभागियों को बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा विकसित किए गए पहल, कैलेंडर निर्देशिका, परिकलन, कलांकुर, चहक मैन्यूअल पर प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण में मॉडल आँगनवाड़ी की अवधारणा, पूर्व-प्राथमिक शिक्षा से संबंधित साक्षरता और संख्यात्मकता और पूर्व-प्राथमिक के लिए शैक्षणिक दृष्टिकोण, बच्चों का आकलन जैसे विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई। समापन सत्र के दौरान खंड शिक्षा अधिकारी प्रमोद कुमार उपाध्याय ने कहा कि इस प्रशिक्षण से विद्यालय परिसर में संचालित आंगनबाड़ी और बालवाटिका को इसका पूरा लाभ मिलेगा। नोडल एआरपी आदर्श कुमार पांडेय ने कहा कि यदि बच्चा यहां अपने आयु अनुसार दक्षताओं को प्राप्त कर लेता है। आगे की कक्षाओं में बच्चा अपनी कक्षा अनुरूप दक्षताओं को आसानी से हासिल कर पाता है। उनके आयु वर्ग के हिसाब से संसाधन उपलब्ध कराते हुए। उन्हें खेल-खेल में शिक्षा दी जाए। प्रशिक्षणकर्ताओं में आरती, निर्मला देवी, रेनू पांडेय, अर्चना, राजकुमारी, ममता पाल, सुनीता, सुषमा, भारती सिंह, अर्चना बाजपेई, अनुपम वर्मा, मोनिका, रामकुमारी, नीलम, राजेस्वरी, सरोज, उर्मिला देवी आदि थे।

प्राण-प्रतिष्ठा से पहले दूधिया रोशनी में जगमग हुआ कोटवाधाम मंदिर

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी। भगवान श्री राम के अयोध्या मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा होने से पहले सभी मंदिरों में अनुष्ठान और सजावट दीपोत्सव मनाने को कहा गया था।जिसके बाद सिरौलीगौसपुर तहसील क्षेत्र में पड़ने वाले स्वामी जगजीवन दास के मंदिर में अनुष्ठान शुरू हो गया है।और शनिवार देर शाम यहाँ पर रामचरित मानस का पाठ शुरू कर दिया गया।वही मंदिर के गुमद को रंग बिरंगी झालरों से सजा दिया गया।जिसकी छठा अनोखी दिखाई दे रही है।पूरे प्रांगण में उत्सव का माहौल तैयार हो चुका है।सोमवार को यहाँ पर सुंदरकांड पाठ के साथ किया जाएगा।वही शाम को अभरण सरोवर से मंदिर तक दीपोत्सव भी होगा।इस कार्यक्रम की अगुवाई महंत निलेन्द्र बख्श दास शेषनारायण तिवारी, दुर्गेश सिंह लल्लन पांडेय सन्दीप यादव दिग्विजय सिंह यादव,सहित मंदिर के सभी अनुयायी मिल कर सहयोग करगें।

ढ़ाई घण्टे बंद रही रेलवे क्रॉसिंग,जाम में फंसे रहे लोग

बाराबंकी। प्रदेश की राजधानी लखनऊ से सटे शहर को बंकी नगर सहित सैकड़ों गांवों को ओवरब्रिज से जोड़ने की परियोजना साढ़े तीन वर्ष से अधर में है। लोगों के पत्राचार के बाद रेल मंत्रालय ने तो हां कहा कह दिया, लेकिन सेतु निगम से रोड़ा बना है। ऐसे में बंकी क्रसिंग पर ओवर ब्रिज व अंडर पास ब्रिज बनने की सहमति आज तक नहीं बन सकी है। जबकि प्रतिदिन एक लाख के करीब लोगों का आवागमन इस क्रसिंग से होता है। लोग घंटों रेलवे क्रॉसिंग घंटों मार्ग जाम होने के चलते सबसे अधिक स्कूल के बच्चों को होती है। सुबह कई बच्चों को कालेज व स्कूल सहित कोचिंग भी पहुंचना होता है। लेकिन क्रसिंग बंद होने के बावजूद फिर लोग जान जोखिम में डालकर क्रसिंग पार करते हैं और रोजाना लोग घंटो जाम से जूझते हैं। वही शनिवार को बंकी रेलवे क्रॉसिंग करीब दो घंटे बंद रही जिसमे एम्बुलेंस भी फंसी रही ये एक बार नही कई बार होता है की इस जाम मे एम्बुलेंस फंसी होने के कारण मरीजो की हालत ज्यादा बिगड़ जाती हैं यहां पर ओवर ब्रिज या अंडर पास ब्रिज बनने के लिए पिछले कई वर्षों से लोग पत्राचार रेलवे मंत्रालय से कर रहे हैं। यहां के निवासी कैप्टन विजय श्रीवास्तव का कहना है कि बंकी रेलवे क्रसिंग पर ओवरब्रिज बनना अति आवश्यक है। इसके लिए हम लोग रेलमंत्रालय से लेकर सेतु निगम व अन्य ओवरब्रिज निर्माण से संबंधित अधिकारियों से लगातार पत्राचार कर रहे है। यहां के नागरिकों के पत्राचार के बाद मंडल रेल प्रबंधक लखनऊ ने पत्र जारी कर कहा था कि राज्य सरकार के हिस्से में आने वाला खर्च व स्वीकार करे। तथा ओवरब्रिज निर्माण के दौरान जिला मजिस्ट्रेट की ओर से सड़क बंद करने का प्रमाणपत्र दे तो पुनः रेलवे का इंजीनियरयारी विभाग सर्वे करेगा। लेकिन यह सब महज पत्राचार तक ही सीमित रह गया। डीएम ने भी लिखा गया था पत्र। बंकी रेलवे क्रॉसिंग पर ओवर ब्रिज बनाने के लिए पूर्व में डीएम अखिलेश तिवारी ने आर्मी को पत्र लिखा था। इससे थोड़ी कवायद तेज हो गई थी। ओवरब्रिज निर्माण में सेना की भी अनुमति जरूरी होगी।

अयोध्या हाईवे पर एसपी व डीएम दिन भर रहे भ्रमणशील,चप्पे-चप्पे पर पुलिस की सतर्क दृष्टि

बिना पास अयोध्या जाने वालो को पुलिस ने रोका

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी।अयोध्या में आगामी श्रीराम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के दृष्टिगत रविवार को जिलाधिकारी सत्येन्द्र कुमार व पुलिस अधीक्षक दिनेश कुमार सिंह द्वारा बाराबंकी-अयोध्या राजमार्ग पर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया गया।लखनऊ-बाराबंकी सीमा पर स्थित विभिन्न थानों के स्थानों जैसे-चौपुला चौराहा, सफदरगंज चौराहा व अहमदपुर टॉल प्लाजा आदि ड्यूटी में लगे पुलिस कर्मियों को सतर्क दृष्टि रखने हेतु निर्देशित किया गया और साथ ही जनपद अयोध्या के निवासी/आकस्मिक वाहन तथा प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में सम्मलित होने वाले पासधारक महानुभावों को छोड़कर अन्य सभी प्रकार के वाहनों को निर्धारित रूट डायवर्जन किए जाने हेतु निर्देशित किया गया। बाराबंकी पुलिस द्वारा लगातार बैरिकेटिंग कर संदिग्ध व्यक्तियों/वाहनों की सघन चेकिंग की जा रही है एवं स्थापित रुट डायवर्जन हेतु बैरियरों पर पुलिस बल द्वारा लगातार कड़ी निगरानी की जा रही है तथा सोशल मीडिया पर सतर्क दृष्टि रखी जा रही है।

रामलीला के लिए मुस्लिमों ने भी दिया बढ़-चढ़कर चंदा

हमीरपुर। क्षेत्र के ग्राम विदोखर पुरई के काली माता मंदिर प्रांगण में सोमवार से शुरू होने वाली दो दिवसीय रामलीला के लिए हिंदुओं की तरह गांव के मुस्लिमों ने भी कार्यक्रम को संपन्न कराने के लिए सेवा भाव से आर्थिक सहयोग प्रदान किया है। उन्होंने कहा कि राम सबके हैं। उनका कहना है कि इस पुनीत कार्य में सभी को बिना भेदभाव के सहयोग करना चाहिए।

अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर विदोखर पुरई में शोभा यात्रा के बाद रात में रामलीला का आयोजन होना है। इस आयोजन को सफल बनाने के लिए ग्रामीणों से आर्थिक सहयोग लिया गया है। इस सहयोग में गांव के मुस्लिमो ने भी बढ़-चढ़कर सहयोग किया है। रामलीला कमेटी के सदस्य नागेन्द्र सिंह, मंतोष शर्मा, विनय शर्मा, बबली सिंह आदि ने बताया कि कार्यक्रम के लिए जब गांव वासियों से चंदा एकत्र किया जा रहा था तब गांव निवासी जुम्मन खान, भूरा खान, बबलू खान, गयासुद्दीन घस्सू, इसरार, अनीश, उस्मान खान, गनी खान, एनुउद्दीन, जुबैदा खातून ने भी बढ़ चढ़कर आर्थिक सहयोग किया।

एसपी ने लखनऊ सीमा पर पुलिस चौकी मोहम्मदपुर का किया जीर्णोद्धार, चौकी का किया भ्रमण

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी।एसपी ने जीर्णोद्धार पुलिस चौकी मोहम्मदपुर थाना कोतवाली नगर का उद्घाटन कर सम्पूर्ण परिसर का किया गया निरीक्षण। रविवार को एसपी दिनेश कुमार सिंह द्वारा जीर्णोद्धार पुलिस चौकी मोहम्मदपुर थाना कोतवाली नगर का उद्घाटन किया गया एवं सम्पूर्ण परिसर का निरीक्षण कर सम्बन्धित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। इस अवसर पर अपर पुलिस अधीक्षक उत्तरी सीएन सिन्हा, क्षेत्राधिकारी नगर डॉ.बीनू सिंह व प्रभारी निरीक्षक कोतवाली नगर अजय कुमार त्रिपाठी एवं प्रभारी चौकी मोहम्मदपुर रवीन्द्र कुमार सिंह आदि अधिकारी/कर्मचारीगण मौजूद रहें।

सुरक्षा चाक चौबंद ,तीन जोन में बांटा गया अयोध्या हाईवे

बाराबंकी। अयोध्या में होने वाली भगवान श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर हाईवे पर प्रशासनिक तैयारी लगभग पूरी कर ली गई है। 51 किमी लंबे हाईवे को तीन जोन में बांटा गया है। इसकी जिम्मेदारी चार एसडीएम को नोडल अधिकारी बनाकर सहयोग के लिए 13 और अफसर लगाए गए हैं।

अपर जिलाधिकारी डॉ.अरुण कुमार सिंह ने बताया कि लखनऊ सीमा से लेकर अयोध्या सीमा तक हाईवे पर निगरानी के लिए 17 अधिकारियों को लगाया गया है। यह अधिकारी सुबह आठ से रात आठ बजे तक और रात आठ से सुबह आठ बजे तक अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करेंगे। बताया कि मोहम्मदपुर चौकी से लेकर चौपुला तक एसडीएम सदर और तहसीलदार सदर सुबह से लेकर शाम तक और शाम से लेकर सुबह तक का जिम्मा नायब तहसीलदार सदर को सौंपा गया। चौपुला से सफदरगंज तक सुबह नायब तहसीलदार नवाबगंज व शाम को नायब तहसीलदार फतेहपुर तैनात रहेंगे।

इसी प्रकार सफदरगंज से अहमदपुर टॉल प्लाजा तक सुबह एसडीएम रामसनेहीघाट और तहसीलदार रामसनेहीघाट में शाम को नायब तहसीलदार रामनगर को लगाया गया है। इसके अलावा अहमदपुर से कोटवासड़क तक का जिम्मा सुबह तहसीलदार फतेहपुर, शाम को नायब तहसीलदार रामसनेहीघाट संभालेंगे। कोटवासड़क से लेकर रामसनेहीघाट सीमा तक सुबह अतिरिक्त मजिस्ट्रेट द्वितीय और नायब तहसीलदार नवाबगंज तथा शाम से सुबह तक नायब तहसीलदार रामनगर को जिम्मेदारी सौंपी गई है।एडीएम ने बताया कि रामसनेहीघाट स्थित डाक बंगले का जिम्मा अतिरिक्त मजिस्ट्रेट प्रथम को सौंपा गया है। सुबह आठ से शाम आठ बजे तक अतिरिक्त मजिस्ट्रेट नायब तहसीलदार के साथ मौजूद रहेंगे। इसके अलावा शाम आठ से सुबह आठ बजे तक यह जिम्मेदारी नायब तहसीलदार हैदरगढ़ संभालेंगे।

तीन दिवसीय धनुषयज्ञ मेला धनुषभंग के साथ ग्राम सीहामऊ मे हुआ सकुशल सम्पन्न

कैनविज टाइम्स संवाददाता

रामनगर बाराबंकी। ग्राम सभा सीहामऊ में चल रहा तीन दिवसीय धनुष यज्ञ मेला बड़ी धूमधाम से संपन्न हुआ। ज्ञात हो की बीते शुक्रवार से खटला हनुमान कुंड अवध धाम से आई आदर्श रामलीला मंडल के कलाकारों द्वारा रामलीला का मंचन किया जा रहा था। जिसमें राम जन्म से लेकर धनुष भंग सीता स्वयंवर राम कलेवा व सुंदर झांकियों भक्ति भजनों से दर्शकों को मंत्र मुक्त किया। तीन दिवसीय धनुष यज्ञ मेले में रविवार को धनुष यज्ञ का मंचन किया गया। जिसमें फुलवारी रावण बाणासुर संवाद चौपाई उठव राम भंजव भव चापा मेटहुं तात जनक पारितापा गुरु विश्वामित्र का आदेश पातें ही श्री राम ने शिव धनुष का खंडन किया श्री जनक लली सुकुमारी सीता ने श्री राम को वरमाला पहनाई तथा शिव धनुष का खंडन देख क्रोधित परशुराम व लक्ष्मण में संवाद मंचन किया गया। रात्रि में मेला आयोजक सत्ती दीन अवस्थी ओमप्रकाश अवस्थी सतीश चंद्र दीक्षित के द्वारा राम कलेवा की व्यवस्था की गई। वहीं मेले में बच्चों ने खिलौनों के साथ-साथ चटपटे व्यंजनों का लुक उठाया बड़े बुजुर्गों व संभ्रांत लोगों ने जलेबियां को एक दूसरे को खिलाकर मुंह मीठा कराया। मेला प्रांगण छोटे-छोटे बच्चों व नौजवानों से गुलजार था मेले में दूर दराज से आए हुए दुकानदार भी संतुष्ट दिखे। मेले को संपन्न करवाने में अभिषेक दीक्षित प्रदीप अवस्थी संजय अवस्थी लालता प्रसाद तिवारी विजय अवस्थी रवी संचित रवि शंकर रजनीश भानू परशुराम नैमिष लक्ष्मीकांत गोलू अवस्थी जीत देव सहित संभ्रांत जनों ने बढ़-चढ़कर सहयोग किया।

दिव्यांगजनों के जीवनयापन व रोजगार के लिए सरकार चला रही अनेक योजनाएं: अनुप्रिया पटेल

केंद्रीय राज्यमंत्री ने 95 दिव्यांगजनों को वितरित किए कृत्रिम अंग एवं सहायक उपकरण

कैनविज टाइम्स संवाददाता

मीरजापुर। कोन ब्लॉक के मवैया गांव में स्थित श्रीकृष्णा शारदा देवी बालिका इंटर कॉलेज के मैदान में रविवार को दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग की ओर से आयोजित कृतिम अंग एवं सहायक उपकरण वितरण समारोह में मुख्य अतिथि केंद्रीय राज्यमंत्री अनुप्रिया पटेल ने दिव्यांग महिला-पुरुष व बच्चों को कृत्रिम अंग एवं सहायक उपकरण वितरित किया।

केंद्रीय राज्यमंत्री ने कहा कि दिव्यांगजनों के कल्याण के लिए राज्य सरकार ने बहुत सारी योजनाएं संचालित की हैं। दिव्यांग पेंशन, दुकान निर्माण या फिर दुकान संचालन ये सभी योजनाएं केवल दिव्यांग जनों के लिए हैं। साथ ही दिव्यांगजनों को कृत्रिम अंग प्रदान किये जाते हैं। इसके तहत ट्राई साइकिल, व्हीलचेयर इस तरह के तमाम उपकरण दिए जाते हैं।उन्होंने कहा कि वर वधू शादी विवाह के अंतर्गत वर अथवा वधू पक्ष में से कोई एक दिव्यांग है प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाती है और इसमें यदि वर दिव्यांग है तो 15000 और वधू दिव्यांग है तो 30000 की प्रोत्साहन धनराशि प्रदान की जाती है। इसके अलावा यदि आपको कोई रोजगार करना है तो उसके लिए भी सरकार द्वारा धनराशि मुहैया कराई जाती है। उन्होंने 60 ट्राई साइकिल, तीन व्हीलचेयर, 26 बैसाखी, छह स्मार्ट केन सहित 95 सामग्री दिव्यांगजनों में वितरित किए। इस दौरान छानबें विधायक रिकी कोल, जिला दिव्यांग अधिकारी राजेश सोनकर आदि मौजूद रहे।

दुर्गा मंदिर पर भंडारा व कंबल वितरण आज

बाराबंकी। हरख ब्लॉक के ग्राम रसूलपुर मे प्राण-प्रतिष्ठा के सुअवसर पर गांव के प्राचीन दुर्गा मंदिर पर विशाल भंडारा व हाड़कपाऊ ठंड से जूझ रहे गरीबो को कम्बल वितरित किया जाएगा। उक्त आयोजन रसूलपुर गांव के निवासी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के पत्रकार बलराम सिंह व ग्रामीणों के द्वारा होगा।भंडारे का आयोजन अपराह्न 12 बजे से होगा।

माघ मेला : राममय माहौल में जल जीवन मिशन के पंडाल का सोमवार को होगा श्री गणेश

प्रयागराज। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रेरणा और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कुशल नेतृत्व का परिणाम है कि जल जीवन मिशन के तहत उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में पानी की समस्या को कम किया जा रहा है। जल जीवन मिशन पूरे यूपी में ग्रामीणों के जीवन में किस तरह बदलाव ला रहा है, उसकी झांकी माघ मेले में देखने को मिलेगी। जहां करोड़ों श्रद्धालुओं के बीच उत्तर प्रदेश जल जीवन मिशन का पंडाल आकर्षण का केंद्र बनेगा।इस पंडाल में यहां आने वाले तीर्थयात्री जल जीवन मिशन की कामयाबी से रूबरू होंगे। अयोध्या में श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह के मौके पर सोमवार के दिन इस पंडाल का श्री गणेश होगा। जहां सुबह 8 बजे से पंडाल में लगाई गई आठ एलईडी स्क्रीन पर रामानंद सागर कृत रामायण धारावाहिक का प्रसारण किया जाएगा। इसके साथ ही अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा समारोह की लाइव स्ट्रीमिंग भी इन स्क्रीन पर की जाएगी। जल जीवन मिशन के पंडाल में प्राण प्रतिष्ठा समारोह के पश्चात शाम को सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया जाएगा। इसके बाद भंडारे का आयोजन होगा और यहां आए श्रद्धालुओं के बीच प्रसाद वितरण किया जाएगा।उत्तर प्रदेश के दो करोड़ ग्रामीण घरों में जल जीवन मिशन के तहत नल से जल पहुंच चुका है। राज्य सरकार की इस कामयाबी से उत्तर प्रदेश के 75 प्रतिशत ग्रामीण घरों तक शुद्ध पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। जिसकी झांकी माघ मेला के दौरान लगाए गए पंडाल में भी दिखेगी।उत्तर प्रदेश जल जीवन मिशन के प्रबंध निदेशक बलकार सिंह ने बताया कि इस पंडाल का सबसे बड़ा उद्देश्य जल संरक्षण के प्रति ग्रामीणों को जागरूक करना है।

200 टीपीडी सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट प्रक्रिया से लैस होगा अयोध्या धाम

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। अयोध्या को दुनिया की सुंदरतम नगरी बनाने के विजन से कार्य कर रही योगी सरकार स्वच्छता के सभी मानकों को अयोध्या में लागू कर पुरातन वैभव युक्त नगरी की दशा-दिशा बदलने के लिए प्रयासरत हैं। इस क्रम में, अयोध्या में अपशिष्ट निस्तारण व सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट प्रक्रियाओं के कुशल प्रबंधन की जो कार्यप्रणाली विस्तृत कार्ययोजना के जरिए सीएम योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में स्वीकृत हुई थी उसे क्रियान्वित कर दिया गया है। अयोध्या नगर निगम द्वारा सीएम योगी की मंशा अनुरूप अयोध्या में 200 टन प्रति दिन (टीपीडी) कैपेसिटी युक्त सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट फैसिलिटी की स्थापना की प्रक्रिया शुरू हो गई है। इस क्रम में, अयोध्या नगर निगम द्वारा 7 वर्षों की अवधि के लिए सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट फैसिलिटी की स्थापना व संचालन एजेंसी व कॉन्ट्रैक्टर्स के माध्यम से किया जाएगा। इस कार्य अवधि को प्रदर्शन के आधार पर 4 वर्षों के लिए बढ़ाया भी जा सकता है तथा इसके अंतर्गत जीरो वेस्ट डिस्चार्ज पैटर्न के अनुरूप वेट वेस्ट प्रोसेसिंग, ड्राई वेस्ट प्रोसेसिंग व सैनिटरी लैंड फिल जैसी प्रक्रियाओं की पूर्ति के जरिए अपशिष्ट निस्तारण को पूर्ण किया जाएगा।

साइट के भीतर ही लैंडफिल की व्यवस्था को भी करना होगा पूरा अयोध्या नगर निगम द्वारा तैयार की गई कार्य योजना के अनुसार, गीला कचरा और सूखा कचरा प्रसंस्करण दोनों के लिए अलग-अलग व्यवस्था के साथ स्वच्छ भारत मिशन के मानकों का पालन करते हुए अपशिष्ट प्रबंधन संयंत्र स्थापित किया जाएगा। इसमें साइट के भीतर एक सैनिटरी लैंडफिल स्थापित करना भी शामिल है। इस फैसिलिटी को अयोध्या के पिखरौली में स्थापित किया जाएगा तथा इसमें वेस्ट मैनेजमेंट प्रक्रियाओं को पूर्ण करने के लिए रिक्वेस्ट फॉर प्रपोजल माध्यम से आवेदन मांगे गए हैं। इस फैसिलिटी की स्थापना को जीरो वेस्ट डिस्चार्ज प्रक्रिया के अनुरूप बनाया जाएगा तथा यहां अपशिष्ट निस्तारण के साथ ही रीसाइक्लिंग की भी प्रक्रिया पर जोर दिया जाएगा। रीसाइकल्ड वेस्ट प्रोडक्ट्स व बायप्रोडक्ट्स को विभिन्न प्रकार की सकारात्मक गतिविधियों में इस्तेमाल में लाने की प्रक्रिया की भी पूर्ति पर संयंत्र में जोर दिया जाएगा। इसके अंतर्गत इन प्रोडक्ट्स व बाय प्रोडक्ट्स के कमर्शियल यूज व बिक्री के लिए मार्केट का निर्धारण कर आर्थिक लाभ के अवसरों की तलाश व विकास प्रक्रिया पर भी बल दिया जाएगा। ऐसा इसलिए भी जरूरी होगा क्योंकि ऐसा करने से इन प्रोडक्ट्स व बाय प्रोडक्ट्स को 45 दिनों से अधिक समय तक साइट पर संग्रहीत करने की आवश्यकता नहीं होगी। ऐसे में, इन प्रोडक्ट्स व बाय प्रोडक्ट्स की बिक्री से उत्पन्न राजस्व कार्य प्राप्त करने वाली एजेंसी के पास ही आएगा तथा उसे राजस्व सृजन का विवरण व अन्य जानकारियां नियमित अंतराल पर अयोध्या नगर निगम के साथ साझा करना होगा।

सीएम योगी के विजन अनुसार सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट फैसिलिटी की स्थापना के जरिए अपशिष्ट निस्तारण को मिलेगी गति

अयोध्या नगर निगम ने शुरू की प्रक्रिया, जीरो वेस्ट डिस्चार्ज पैटर्न के अनुरूप काम करेगा नया संयंत्र

वेट वेस्ट प्रोसेसिंग, ड्राई वेस्ट प्रोसेसिंग व सैनिटरी लैंड फिल जैसी प्रक्रियाओं से अपशिष्ट निस्तारण में मिलेगी मदद

प्राण प्रतिष्ठा : रामलला विराजमान की भी शुरु हुई पूजा, मंदिर में होंगे स्थापित

अयोध्या। श्रीराम मंदिर में पिछले छह दिन से चल रहे प्राण प्रतिष्ठा के अनुष्ठान में रामलला विराजमान (प्रभु श्रीराम के पुराने विग्रह) की भी पूजा प्रारम्भ हो गई है। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के अनुसार मंदिर में श्रीरामलला की नई प्रतिमा के साथ पुराने विग्रह को भी स्थापित किया जाएगा। कुछ संतों ने रामलला विराजमान को लेकर हाल ही में शंका व्यक्त की थी, तो न्यास ने उसी समय स्पष्टीकरण दिया था कि प्रभु श्रीराम के पुराने विग्रह को भी मंदिर में स्थापित किया जायेगा। गौरतलब है कि श्रीरामलला के प्राण प्रतिष्ठा का अनुष्ठान पिछले छह दिन से जारी है। रविवार को सुबह नौ बजे से देर शाम तक छठवें दिन की पूजन प्रक्रिया चली। इस दौरान नित्य के पूजन, हवन और पारायण के साथ 114 कलशों में औषधियुक्त जल एवं देश के विभिन्न तीर्थों से लाये गये पवित्र जल से श्रीरामलला की मूर्ति का स्नान सम्पन्न हुआ। श्रीरामलला के विग्रह को आज मध्याधिवास में रखा गया।

प्राण प्रतिष्ठा पर रामनगरी में होंगे समूचे भारत के दर्शन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। आखिरकार 22 जनवरी की वह तिथि आ ही गई, जिसका इंतजार 500 वर्षों से था। इस तिथि पर समूची रामनगरी को सजाने के लिए सीएम योगी आदित्यनाथ ने खुद ही सारी व्यवस्था की कमान संभाली और निरंतर निरीक्षण कर अभूतपूर्व आयोजन का निर्देश भी दिया। अब 22 जनवरी को रामनगरी में समूचे भारत के दर्शन होंगे। संस्कृति मंत्रालय के क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों के 200 कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां होंगी। इनमें यहां आंध्र प्रदेश, सिक्किम, हिमाचल प्रदेश, तेलंगाना, राजस्थान, मेजबान उत्तर प्रदेश की झलक प्रस्तुत होगी। वहीं मालिनी अवस्थी- कन्हैया मित्तल सरीखे कलाकार भी सुरमयी सांझ सजाएंगे। राम की पैड़ी पर इको फ्रेंडली आतिशाबाजी व लेजर शो भी होगा। 22 जनवरी को प्राण-प्रतिष्ठा के उपरांत अनेक आयोजन होंगे। शाम छह बजे से श्रीराम भारती कला केंद्र की तरफ से रामकथा पार्क में रामलीला होगी। वहीं

पर्यटन विभाग के तत्वावधान में शाम 6.30 बजे से सात बजे तक राम की पैड़ी पर सरयू आरती होगी। सात बजे तक यहीं प्रोजेक्शन शो का आयोजन किया गया है। शाम साढ़े सात से 7.45 तक राम की पैड़ी पर लेजर शो होगा। इसके पश्चात इको फ्रेंडली आतिशबाजी का नजारा प्रस्तुत किया जाएगा। रामनगरी में प्राण-प्रतिष्ठा की सांझ पद्मश्री मालिनी अवस्थी तथा कन्हैया मित्तल सरीखे कलाकारों से सुरमयी होगी। तुलसी उद्यान पर रात्रि 8 से 9 बजे तक मालिनी अवस्थी का कार्यक्रम होगा। इसी अवधि में कन्हैया मित्तल रामकथा पार्क में प्रस्तुति देंगे। तुलसी उद्यान में शाम सात से आठ बजे तक उज्जैन के शर्मा बंधु भजनों की सुर गंगा में डुबकी लगाएंगे। इसी अवधि में राम कथा पार्क नागपुर के वाटेकर सिस्टर्स की प्रस्तुति होगी। प्रतिदिन की भांति सुबह 10.30 से भजन संध्या स्थल पर देवकीनंदन ठाकुर की श्रीरामकथा होगी।

उप्र के विभिन्न अंचलों के लोकनृत्यों के कलाकारों के साथ ही संस्कृति मंत्रालय के क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों के 200 कलाकारों की तरफ से अयोध्या के 100 चिह्नित स्थलों पर सांस्कृतिक शोत्रायात्रा होगी। इसमें हिमाचल प्रदेश, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, राजस्थान समेत कई राज्यों के कलाकार भी हिस्सा लेंगे।

मालिनी अवस्थी-कन्हैया मित्तल सरीखे कलाकारों से सुरमयी होगी सांझ

राम की पैड़ी पर होगी लेजर शो व इको फ्रेंडली आतिशबाजी

आंध्र प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल की संस्कृति का भी आज अयोध्या में होगा दीदार

श्रद्धा बलिदान एवं हर्ष का नया इतिहास है अयोध्या : पूर्व राजनयिक डॉ. मोक्षराज

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। सात लाख उनहत्तर हज़ार वर्ष पुरानी अयोध्या नगरी के प्रति करोड़ों भारतीयों की सतत श्रद्धा का ही परिणाम है कि छल कपट और क्रूरता से भरे म्लेच्छों के अत्याचार एवं अंग्रेज़ी लेखकों के षड्यंत्र भी इस इतिहास को दबा नहीं सके ।शरीर तो नाशवान हैउसे जाना ही था, किन्तु जिस प्रभु श्री राम के वंशजों व भक्तों ने 500 वर्ष तक संघर्ष किया उनका बलिदान व्यर्थ नहीं गया। उक्त विचार रविवार को अमेरिका स्थित भारतीय राजदूतावास में तीन वर्ष तक भारतीय संस्कृति की शिक्षा देने वाले पूर्व राजनयिक डॉ. मोक्षराज ने अयोध्या दर्शन में सरयू के तट पर वाल्मीकि रामायण का पाठ करते हुए व्यक्त किए । उन्होंने मुनि नारद एवं वाल्मीकिके संस्कृत संवाद का पाठ किया तथा मूल रामायण का उपदेश किया। योगगुरू एवं भारतीय संस्कृति

शिक्षक डॉ. मोक्षराज ने कहा कि आज अयोध्या की शोभा को देखकर देश-विदेश के पर्यटक एवं श्रद्धालु अचंभित व आनंदित हैं।

अमेरिका में भारत की संस्कृति योग एवं हिंदी भाषा का डंका बजाने वाले तथा भारत का राष्ट्रगान गाने वाली अफ्रीकन अमेरिकन मूल की हॉलीवुड अभिनेत्री मैरी मिलबेन के गुरु डॉ. मोक्षराज विगत 5 दिन से अयोध्याधाम में धर्मलाभ ले रहे हैं। जन्मभूमि तीर्थस्थल, कनक महल, दशरथ महल एवं सरयू नदी को देखकर भावुक हो गए। उन्होंने कहा कि आर्य जाति की जैसी एकजुटता इस समय है, वह श्लाघनीय है। सांस्कृतिक विकास के इस अभूतपूर्व योगदान के लिए भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एवं राम मंदिर निर्माण ट्रस्ट के पदाधिकारी साधुवाद के पात्र हैं। उद्घाटन समारोह की पूर्वसंध्या पर डॉ. मोक्षराज ने अनेक साधु संतों से आशीर्वाद लिया तथा पद्मश्री डॉक्टर सुकामा आचार्या से भी भेंट की तथा उन्होंने पुष्कर से पधारे डॉ. रामेश्वरानंद हरि निर्मल, उज्जैन महाकाल के प्रमुख पुजारी पं. घनश्याम गौड, जयपुर के आचार्य राधेश्याम गौतम, महंत राजेश्वरानंद तीर्थ, महंत मनोहर शरण, महंत नरेंद्रनाथ, स्वामी सेवानंद गिरी, कृष्ण मुरारी, महंत गोपालदास, राम सिंह सेन, बसंत चौबीसा, बालमुकुंद, चंद्रप्रकाश व्यास आदि से विमर्श किया।

प्राण प्रतिष्ठा के बाद मेहमानों को दिया जाएगा शुद्ध देशी घी से बना महाप्रसाद

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ । अयोध्या धाम में श्रीराम लला प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में अब कुछ ही घंटे शेष हैं। योगी सरकार ने प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को भव्य और दिव्य बनाने के लिए अयोध्या धाम को एक दुल्हन की तरह सजा दिया है। वहीं, प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में आने वाले वीआईपी मेहमानों के लिए श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की ओर से महाप्रसाद तैयार कराया गया है। जो प्राण प्रतिष्ठा के बाद उन्हें भेंट किया जाएगा। इसके अलावा कार्यक्रम के दौरान मेहमानों को मंदिर परिसर में देश घी से तैयार भोजन भी परोसे जाने की तैयारी है। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के मार्गदर्शन में गुजरात की भगवा सेना भारती गरवी गुजरात व सन्त

सेवा संस्थान की ओर से महाप्रसाद तैयार किया जा रहा है, जिसे प्राण प्रतिष्ठा कार्यकम के बाद मेहमानों को वितरित किया जाएगा। संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष कमल भाई रावल ने बताया कि ट्रस्ट की ओर से उन्हें तीन दायित्व सौंपे गये हैं। इसके तहत उन्हें महाप्रसाद तैयार करने के साथ संतों के ठहरने और खाने-पीने की व्यवस्था का दायित्व सौंपा गया है। उन्होंने बताया कि करीब 200 लोगों की टीम द्वारा 5 हजार किलो से अधिक सामग्री से महाप्रसाद को तैयार किया गया है। महाप्रसाद को शुद्ध देशी घी, बेसन, शक्कर और पंच मेवे से तैयार किया गया है। महाप्रसाद की शुद्धता का भी विशेष ध्यान रखा गया है, जिसमें सभी सामग्रियों को खुद संस्थान की ओर से निर्मित किया गया।

महाप्रसाद के पैकेट में दो लड्डू, सरयू नदी का जल, अक्षत, सुपारी की थैली और कलावा शामिल

सनातनी परंपरा को ध्यान में रखकर तैयार किया गया महाप्रसाद

प्राण प्रतिष्ठा : तुलसी उद्यान के पंडाल में भक्तिमय गीतों और नृत्य के साथ मनाया जा रहा है रामोत्सव

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ । तुलसी उद्यान अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर भक्तिमय गीतों पर लोग झूम रहे हैं। ठुमक रहे हैं। केन्द्रीय संस्कृति मंत्रालय और समस्त क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों की ओर से भक्तिमय प्रस्तुतियों के माध्यम से प्रभु श्रीराम की आराधना की जा रही है। रविवार को पहली प्रस्तुति में अयोध्या के कलाकार प्रमोद कुमार सिंह के कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। अवधी के भजनों पर दर्शक उठकर स्टेज के सामने ही मगन होकर नृत्य करने लगे। दूसरी प्रस्तुति सिक्किम के लोक कलाकारों के दल ने की, कलाकारों के सधे नृत्य और उनकी मुस्कान ने पूरे वातावरण को राममय

कर दिया। जब गुजरात के कलाकार मंच पर आए और गुजराती लोकधुन पर तलवारबाजी के हैरतअंगेज कारनामे के साथ नृत्य किया तो तालियों से पूरा पांडाल गूंज गया। अगली प्रस्तुति हर शुभ अवसर पर किया जाने वाला गुजराती नृत्य 'अटेंगी' कलाकारों ने किया। हरियाणा से आए दल ने आते ही अपनी विशिष्ट हरियाणवी लोकगीतों की जैसे तान छेड़ी सभी मानो मंच के साथ हो गए और अगले ही पल महिला कलाकारों ने प्रवेश किया और पारंपरिक परिधानों में हरियाणवी नृत्य करके सभी को मोह लिया। मंच पर हिमांचल प्रदेश से आए लोक कलाकारों ने भी नृत्य प्रस्तुत किया। इन कलाकारों के थिरकते कदमों ने सभी को झूमने पर बाध्य कर दिया। जम्मू कश्मीर की लोक धुन बजते ही वातावरण में भक्ति भाव घुल गया। इस दल ने डोगरी भाषा में गीतों, संवादों के साथ दर्शकों को अपने साथ जोड़ लिया। आंध्र प्रदेश के दल ने मार्शल आर्ट के साथ किया जाने वाला तपेट गुल्लू लोक नृत्य करके सभी को हतप्रभ कर दिया। गजनना गजानना और जय श्रीराम जय श्रीराम के बोलों पर उनके नृत्य और गीत में पूरा पांडाल साथ दे रहा था। दर्शकों से

प्राण प्रतिष्ठा : राममय हुई अयोध्या, उल्लास में हैं राम भक्त

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। प्रभु की कृपा भयो सब काजु अर्थात जब प्रभु की कृपा होती है तो सारे काम हो जाते हैं। हिन्दू समाज के पांच वर्षों के तप के बाद आखिरकार सोमवार को प्रभु श्रीरामलला अपने नव्य-भव्य और दिव्य महल में विराजने जा रहे हैं। 22 जनवरी को प्रधानमंत्री मोदी और मुख्यमंत्री योगी समेत संत समाज और अति विशिष्ट लोगों की उपस्थिति में रामलला के श्रीविग्रह की प्राण प्रतिष्ठा का ऐतिहासिक अनुष्ठान संपन्न होने जा रहा है। अयोध्या नगरी को हजारों क्विंटल फूलों से दुल्हन की तरह सजाया गया है। अवधपुरी में उत्सव सा माहौल है। सूर्यवंश की राजधानी अयोध्या धाम समेत पूरे देश के मंदिरों में राम संकीर्तन और राम चरित मानस का पाठ हो रहा है। फूलों से सजी अयोध्या जी में जन्मभूमि पथ से लेकर राम पथ, भक्ति पथ और धर्म पथ की अलौकिक आभा देखते ही बन रही है।

काशी के आचार्य संपन्न कराएंगे प्राण प्रतिष्ठा अनुष्ठान, विभिन्न मतों, संप्रदाय और संस्कृति के लोग रहेंगे उपस्थित

सांस्कृतिक नृत्य और वादन के माध्यम से विभिन्न स्थानों पर प्रदेश के साथ-साथ देश भर की परंपराओं और कला का समागम हो रहा है। हर तरफ भगवान राम के भजन सुनने को मिल रहे हैं। सोमवार शाम को भव्य दीपोत्सव की तैयारी है। ऐसा लग रहा है मानों रघुनंदन के अभिनंदन के लिए पूरा स्वर्ग ही धरती पर उतर आया है। जनवरी में ही दीपावली का अहसान हो रहा है। शबरी के, केवट के, दमितों और वंचितों के, सबके श्रीराम आ रहे हैं और वो पीढ़ी धन्य हो रही है, जिसे इस ऐतिहासिक क्षण का साक्षी बनने का सौभाग्य मिल रहा है।

प्राण प्रतिष्ठा के लिए राम मंदिर परिसर समेत पूरे अयोध्या धाम को फूलों से सजाया

गया है। जन्मभूमि स्थान में अलग-अलग तरह के देशी विदेशी फूलों से सजावट की गई है, जबकि जन्मभूमि पथ, राम पथ, धर्म पथ और लता चौक पर भी सुंदर फूलों की सजावट है। विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए मंच बनाए गए हैं। विभिन्न धर्माचार्यों द्वारा अलग-अलग स्थानों पर राम कथा का आयोजन हो रहा है तो विभिन्न देशों की रामलीलाओं का मंचन भी किया जा रहा है। लता चौक पर लगी वीणा को भी लाइटिंग और फूलों के अद्भुत संगम से रौशन किया गया है। पूरे अयोध्या धाम में म्यूरल पेंटिंग और वॉल पेंटिंग के माध्यम से भगवान श्रीराम की जीवनी से जुड़े अलग-अलग अध्यायों का चित्रण किया गया है। राम की पैड़ी में सरयू आरती के साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ लेजर शो धार्मिक अलख जगा रही है। अयोध्या धाम का ऐसा कोई स्थान नहीं जो फूलों से या एलईडी लाइटिंग से रौशन न किया गया हो। यही नहीं, अयोध्या आने वाले विभिन्न हाईवे भी फूलों और लाइट से सजाए गए हैं। कुल मिलाकर अयोध्या में स्वर्ग जैसा अहसास हो रहा है। इसके साथ ही सूर्यास्त के बाद अयोध्या में दस लाख दीयों से दीपोत्सव की भी तैयारी की गई है। वहीं पूरे देश और दुनिया में भी दीपोत्सव मनाया जाएगा। पीएम मोदी और सीएम योगी ने सूर्यास्त के बाद देशवासियों से 5 दीप प्रज्ज्वलित करने का आग्रह किया है। भगवान श्री रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा का कार्यक्रम अभिजीत मुहूर्त में संपन्न किया जाएगा। इस ऐतिहासिक अवसर पर कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सीएम योगी एक दिन पहले ही अयोध्या धाम पहुंच चुके हैं। वहीं पीएम मोदी सुबह 10.25 पर अयोध्या धाम के महर्षि बाल्मीकि अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट पहुंच जाएंगे। 10.45 पर अयोध्या हैलीपैड पर उनका आगमन होगा। यहां से वो सीधे राम जन्मभूमि स्थल पर पहुंचेंगे। इसके बाद 11 बजे से 12 बजे तक वह विभिन्न आयोजनों में हिस्सा लेंगे, जबकि दोपहर 12.05 बजे से 12.55 तक प्राण प्रतिष्ठा का आयोजन होगा। दोपहर एक बजे कार्यक्रम खत्म होने के बाद वह समारोह स्थल पर पहुंचेंगे, जहां अन्य विशिष्ट अतिथियों के साथ ही पूरे देश और दुनिया को संबोधित करेंगे। यहां सीएम योगी भी अपना उद्बोधन देंगे। कार्यक्रम के सफलतापूर्वक आयोजन को सुनिश्चित करने के लिए सीएम योगी ने दिन-रात एक कर दिया है। वो लगातार तैयारियों का जायजा ले रहे हैं और समीक्षा कर रहे हैं। कार्यक्रम से पहले बीते 13 दिनों में वह चार बार अयोध्या धाम का दौरा कर चुके हैं। समारोह के अनुष्ठान की सभी प्रक्रियाओं का समन्वय, समर्थन और मार्गदर्शन करने वाले 121 आचार्य होंगे। वाराणसी के गणेशवर शास्त्री द्रविड़ सभी प्रक्रियाओं की निगरानी, समन्वय और दिशा-निर्देशन करेंगे तथा काशी के लक्ष्मीकांत दीक्षित मुख्य आचार्य होंगे।

चेयरमैन एवं प्रधान सम्पादक - राकेश कुमार पाण्डेय कार्यकारी सम्पादक* - अरशद सईद खान
स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश कुमार पाण्डेय द्वारा सरस्वती प्रिंटर्स वाटर वर्क्स रोड ऐशबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं सी-46, कृष टॉवर, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ, पिन-226010 से प्रकाशित। * इस अंक में प्रकाशित सभी समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पीआरबी एक्ट के तहत उत्तरदायी।
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय क्षेत्र के ही अधीन होंगे। फोन नं। 0522-4249333 फैक्स नं.- 4249333 e-mail : info@kanwhizztimes.com RNI NO - UPHIN/2012/42063

‘विकसित भारत संकल्प यात्रा’ नये भविष्य का निर्माण करेगी: सिन्हा

एजेंसी

जम्मू। जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने रविवार को 'आवाम की आवाज' कार्यक्रम का 34वां संस्करण प्रदेश के नागरिकों को 'विकसित भारत संकल्प यात्रा' में उनकी ऐतिहासिक भागीदारी के लिए समर्पित करते हुए कहा कि यह यात्रा विकसित भारत के लिए नया भविष्य बनाएगी। उपराज्यपाल ने कहा, समाज के कमजोर वर्ग तक पहुंचने के लिए एक शक्तिशाली जन-अभियान,'विकसित भारत संकल्प यात्रा', विकसित भारत के लिए एक नया भविष्य बनाएगी। उन्होंने कहा कि इस यात्रा में अब तक जम्मू कश्मीर के 40 लाख नागरिकों की भागीदारी ने केंद्र शासित प्रदेश के ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में प्रगति की मजबूत नींव रखी है। उन्होंने कहा,छ्मुझे विश्वास है कि जनभागीदारी और जिलों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा जम्मू-कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश की असाधारण यात्रा को समृद्धि और समावेशी विकास के पथ पर आगे ले जाती रहेगी। नागरिकों की प्रेरणादायक सफलता की कहानियों को साझा करते हुए श्री सिन्हा ने अपने गांव के लोगों को खेती के नए तरीके सिखाने के लिए कठुआ के झंकार गांव के बिक्रम सिंह के प्रयास की सराहना की। उन्होंने कहा,छ्हवह एकीकृत खेती पर एक जीवित विश्वकोश हैं और उन लोगों की मदद करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं जो विविधीकरण के लाभों को सुरक्षित करना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि बडगाम के चंबूरा गांव के गुलाम हसन शेख दृढ़ निश्चय से भरे हुए हैं। उन्होंने कहा कि उनके पेशेवर करियर में रणनीतिक विस्तार या व्यवसाय विविधीकरण जैसे कि 'कालीन से लेकर कश्मीरी लाल मिर्च' तक का व्यवसाय संभालना अन्य उद्यमियों को प्रेरित कर रहा है। उपराज्यपाल ने श्रीनगर के एक कुशल कालीन कारीगर गुलाम हुसैन वानी का विशेष उल्लेख किया जो कालीन मरम्मत में अपनी विशेषज्ञता के लिए एक घरेलू नाम बन गए हैं' और इस दुर्लभ कला रूप की सुंदरता को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं'। श्री सिन्हा ने कहा कि नारी शक्ति शून्य से भी संभावनाएं पैदा करने में सक्षम है। उपराज्यपाल ने कहा,छ्चेनानी, उधमपुर की कौशल्या देवी की कहानी से पता चलता है कि स्वयं सहायता समूहों ने ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। उन्होंने जिला प्रशासन अनंतनाग और पेट्रोलियम डीलर एसोसिएशन के सड़क सुरक्षा अभियान 'नो हेलमेट नो पेट्रोल' की भी सराहना की। उप राज्यपाल ने मट्टन निवासी निसार अहमद के अनोखे प्रयास, साथी नागरिकों और युवाओं को सामाजिक अभियानों से जोड़ने तथा हाथ की कढ़ाई की प्राचीन पारंपरिक कला को बढ़ावा देने के लिए उधमपुर के युवा विशाल रैधन एवं कुलगाम की महमूदा अख्तर की भी सराहना की।

दिल्ली एम्स में 22 जनवरी को ओपीडी सेवाएं रहेंगी खुली

नयी दिल्ली। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) दिल्ली ने रविवार को कहा कि बाह्य रोगी सेवाएं (ओपीडी) 22 जनवरी को खुली रहेंगी। साथ ही एम्स ने अयोध्या में राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह के लिए अपराह्न 2:30 बजे तक सेवाएं बंद करने के अपने फैसले को पलट दिया। एम्स, दिल्ली ने आज जारी एक नए कार्यालय ज्ञापन में कहा, इस कार्यालय के 20 जनवरी के परिपत्र के क्रम में, उन्हें किसी भी असुविधा से बचाने और रोगी देखभाल की सुविधा के लिए आउट पेशेंट सेवाओं (ओपीडी) सहित सभी नैदानिक सेवाएं खुली रहेंगी। अस्पताल ने अपने पहले ज्ञापन में सूचित किया था कि अयोध्या में राम लला प्राण प्रतिष्ठा पूरे भारत में मनाई जाएगी लिहाजा संस्थान 22 जनवरी को 14:30 बजे तक आधे दिन के लिए बंद रहेगा। इसमें कहा गया है कि सभी केंद्रों के प्रमुखों, विभागों के प्रमुखों, इकाइयों और शाखा अधिकारियों से अनुरोध है कि वे इसे अपने अधीन काम करने वाले सभी कर्मचारियों के ध्यान में लाएं। अस्पताल ने कहा कि हालांकि, चूंकि एम्स नई दिल्ली 21 फरवरी तक एक महीने के लिए हाई अलर्ट पर है, इसलिए सभी महत्वपूर्ण नैदानिक सेवाएं चालू रहेंगी।

मडिगा समुदाय के कल्याण पर सिफारिश के लिये बनी सचिवों की समिति

एजेंसी

नयी दिल्ली। तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और कुछ अन्य दक्षिणी राज्यों में फैले गरीब दलित मडिगा समुदाय के आर्थिक, सामाजिक उन्नयन के लिये कुछ ठोस कदम उठाने के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के वादे को आगे बढ़ाते हुये सरकार ने कैबिनेट सचिव की अध्यक्षता में सचिव स्तरीय अधिकारियों की पांच सदस्यीय समिति का गठन किया है। सूत्रों के अनुसार इस उच्च स्तरीय समिति का गठन इसी माह किया गया है। समिति में गृह, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता, जनजातीय मामले और कानून मंत्रालय के सचिवों को शामिल किया गया है। सूत्रों ने कहा कि समिति मुख्यतः चमड़े के काम में लगे गरीब मडिगा समुदाय के लोगों को सरकारी योजनाओं और सुविधाओं का लाभ दिलाने के विशेष उपाय करने की सिफारिश करेगी। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नवंबर में तेलंगाना विधानसभा के चुनाव के दौरान मडिगा समुदाय की समस्याओं को विशेष रूप से उठाया था और इस समुदाय के साथ उचित न्याय का आश्वासन दिया था। मडिगा समुदाय अनुसूचित जाति के एक उप समूह के रूप में रखे जाने की मांग लंबे समय से कर रहा है ताकि उसे विशेष रूप से आरक्षण व्यवस्था का लाभ मिल सके। सूत्रों ने कहा कि आधिकारिक समिति उप वर्गीकरण की मडिगा समुदाय की मांग पर कोई सिफारिश शायद ही कर सके क्योंकि यह विषय उच्चतम न्यायालय के समक्ष लंबित है। उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों की एक सात सदस्यीय पीठ को विचार करना है कि क्या अनुसूचित जातियों और जनजातियों के बीच उप वर्गीकरण की व्यवस्था करना विधि सम्मत है। भारतीय जनता पार्टी मडिगा समुदाय को लुभाने के लिये इस समुदाय को उप समूह में रखने की उनकी मांग का समर्थन करने का वादा कर रही है। यह समुदाय तेलंगाना और आंध्रप्रदेश के अलावा कर्नाटक और तमिलनाडु के कुछ क्षेत्रों में फैला है। यदि इस वर्ग को अनुसूचित जाति के उप वर्ग में रखा जाता है तो इस समुदाय के अभ्यर्थियों को अनुसूचित जाति के लिये आरक्षित सीटों के अंतर्गत अति पिछड़े उप समूहों के लिये 15 प्रतिशत आरक्षण का विशेष लाभ मिल सकेगा। उप समूहों को मिलने वाला इस तरह का विशेष लाभ अनुसूचित जातियों की आबादी में उनके अनुपात के अनुरूप दिया जाता है। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के एक उच्च अधिकारी ने यूनीवार्ता से कहा, समिति मडिगा समुदाय के शैक्षिक एवं आर्थिक उत्थान के विषयों को देखेगी और उस पर सरकार को अपनी सिफारिशें देगी। अधिकारी ने कहा कि 'समिति मडिगा समुदाय की आर्थिक और सामाजिक स्थिति क्या है, इसका भी अध्ययन करेगी और उसकी रिपोर्ट देगी। मडिगा समुदाय के नेता इस समुदाय को अनुसूचित जातियों के उप समूह में रखने की मांग 1990 के मध्य से ही करते आ रहे हैं।

भारत का बीते साल वस्तु एवं सेवा निर्यात 0.4 प्रतिशत बढ़कर 765.6 अरब डॉलर पर

नयी दिल्ली। वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं के बावजूद बीते साल (2023 में) देश का वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात मामूली 0.4 प्रतिशत की बढ़त के साथ 765.6 अरब अमेरिकी डॉलर रहा है। वाणिज्य मंत्रालय के आंकड़ों से यह जानकारी मिली है। भारत के निर्यात को इलेक्ट्रॉनिक, दवा, सूती धागा, कपड़े और मेड-अप; सिरेमिक उत्पाद, मांस, डेयरी और पॉल्ट्री उत्पाद, फल और सब्जियां और सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) क्षेत्र से मदद मिली है। आंकड़ों के अनुसार, पिछले कैलेंडर साल में वस्तुओं का निर्यात 4.71 प्रतिशत घटकर 431.9 अरब डॉलर पर आ गया। वहीं सेवाओं का निर्यात 7.88 प्रतिशत बढ़कर 333.8 अरब डॉलर पर पहुंचने अनुमान है। वस्तुओं का आयात भी पिछले साल सात प्रतिशत घटकर 667.73 अरब डॉलर रहा। 2022 में यह 720.2 अरब डॉलर था। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा जारी सेवा क्षेत्र के नवंबर 2023 तक के आंकड़े जारी किए गए हैं। दिसंबर 2023 का आंकड़ा मंत्रालय का एक अनुमान है। भारत के प्रमुख निर्यात गंतव्यों में अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात, नीदरलैंड, बांग्लादेश, ब्रिटेन और जर्मनी शामिल हैं। रूस-यूक्रेन युद्ध, इजराइल-हमास संघर्ष और मालवाहक जहाजों पर यमन स्थित हुती विद्रोहियों के हमलों के कारण लाल सागर व्यापार मार्ग संकट के चलते माल लदान प्रभावित हुआ है। अंतरराष्ट्रीय व्यापार विशेषज्ञों के अनुसार, यदि ये चुनौतियां लंबे समय तक बनी रहीं, तो इसका वैश्विक व्यापार पर बड़ा प्रभाव पड़ेगा। आर्थिक शोध संस्थान ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) ने कहा कि भारत का निर्यात और आयात 2022 के 1,651.9 अरब डॉलर की तुलना में 2023 में 2.6 प्रतिशत घटकर 1,609 अरब डॉलर रह गया है। इस दौरान आयात और निर्यात का अंतर यानी व्यापार घाटा कम होकर 75.2 अरब डॉलर रहा है। 2022 में यह 141.3 अरब डॉलर था।

जमीनी अभियान से लेकर ‘स्क्रीनिंग’ तक, कॉरपोरेट घराने भी राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के जश्न में शामिल

एजेंसी

नयी दिल्ली। राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह के मौके पर कई बड़ी कंपनियों ने परिसर में प्रकाश व्यवस्था में योगदान से लेकर कार्यक्रम को ‘मल्टीप्लेक्स’ पर लाइव दिखाने तक की घोषणा की है। कुछ कंपनियां समारोह के दौरान क्षेत्र में बिक्री से अपने लाभ का एक हिस्सा पूरे अयोध्या शहर में विशेष खाद्य पदार्थ वितरित करने के लिए दान कर रही हैं। उपभोक्ता क्षेत्र में काम करने वाली कई कंपनियों ने बड़ी संख्या में होर्डिंग, गेट ब्रांडिंग, शॉपबोर्ड और कियोस्क लगाकर अयोध्या राम मंदिर के लिए पवित्र शहर में आने वाले भक्तों को उत्पाद पेश करके ‘ऑन-ग्राउंड मार्केटिंग’ अभियान शुरू किया है। प्राण प्रतिष्ठा समारोह 16 जनवरी को शुरू हुआ और 22 जनवरी तक चलेगा। अग्रणी मल्टीप्लेक्स ऑपरेटर पीवीआर आईनॉक्स ने 22 जनवरी, 2024 को 70 से अधिक शहरों में अपने 160 सिनेमा स्क्रीन पर प्राण प्रतिष्ठा समारोह को लाइव दिखाने की घोषणा की है। पीवीआर आईनॉक्स के सह मुख्य कार्यपालक अधिकारी (को-सीईओ) गौतम दत्ता ने कहा कि वास्तव में अनूठे तरीके से भक्तों को इस उत्सव से जोड़ने में सक्षम होना हमारे लिए सौभाग्य की बात होगी। उम्मीद है कि हम मंदिर की गूंज, मंत्र और मन को छूने वाले दृश्यों को दिखाकर भारत के समकालीन इतिहास में सबसे प्रतीक्षित क्षणों को जीवंत कर पाएंगे। डाबर इंडिया 17 जनवरी से 31 जनवरी तक अपने उत्पादों की बिक्री से होने वाले मुनाफ़े का एक हिस्सा श्री जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र को दान करेगी। डाबर इंडिया के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) मोहित मल्होत्रा, ‘‘ राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा निस्संदेह हमारे इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण अवसरों में से एक है। इस अवसर पर डाबर ने 17 जनवरी से 31 जनवरी तक अपने उत्पादों की बिक्री से हुए मुनाफ़े का एक हिस्सा श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र को दान करने का फैसला किया है। अडाणी विल्मर की जलेबी बांटने और एक दिन व्यापक स्तर पर भोग आयोजित करने की योजना बनाई है। कंपनी की अयोध्या में इकट्ठा होने वाले भक्तों की बड़ी भीड़ का ध्यान खींचने के लिए गेट ब्रांडिंग, होर्डिंग्स, शॉपबोर्ड तथा कियोस्क जैसी बीटीएल गतिविधियों को अंजाम देने की भी योजना है। ब्रांड श्रीमद रामायण की पूरी अवधि का प्रयोजक बनकर टेलीविजन का भी लाभ उठा रहा है, जो कि अयोध्या में समारोह के साथ मेल खाता है। कंपनी के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) अंग्शु मलिक ने कहा, ‘‘अयोध्या में राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा प्रत्येक भारतीय के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है। फॉर्च्यून की ब्रांड भावना को ध्यान में रखते हुए हमें इस उत्सव का हिस्सा बनने पर गर्व है, क्योंकि यह ऐतिहासिक कार्यक्रम एक त्योहार के समान है जो भारतीय होने की अनुभूति का जश्न है।

डब्ल्यूटीओ विवाद निपटान निकाय में सुधारों पर आम सहमति बनने की उम्मीद ‘‘कम’ : जीटीआरआई

एजेंसी

नयी दिल्ली। डब्ल्यूटीओ के सदस्य देशों के बीच वैश्विक व्यापार निकाय की विवाद निपटान प्रणाली में सुधार पर अगले महीने आम सहमति बनने की उम्मीद नहीं है क्योंकि विकसित तथा विकासशील देशों के बीच इस मुद्दे पर व्यापक मतभेद हैं। जीटीआरआई की एक रिपोर्ट में रविवार को यह बात कही गई है। विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के व्यापार मंत्री विवाद निपटान तंत्र में सुधार, कृषि संबंधी मामलों तथा सीमा शुल्क पर रोक, ई-कॉमर्स व्यापार पर शुल्क जैसे विभिन्न मुद्दों को हल करने के लिए 13वें मंत्रिस्तरीय सम्मेलन (एमसी) के लिए फरवरी में अबू धाबी में एकत्रित होंगे। डब्ल्यूटीओ के 164 देश सदस्य हैं। आर्थिक शोध संस्थान ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) के अनुसार, विवाद निपटान प्रणाली में सुधार पर आम सहमति तक पहुंचना मुश्किल है, क्योंकि विकसित तथा विकासशील देशों की प्राथमिकताएं और चिंताएं अलग-अलग हैं। जीटीआरआई के अनुसार, अपीलीय निकाय, एसएंडडीटी (विशेष एवं अलग व्यवहार) प्रावधानों और पारदर्शिता तथा कानूनी निश्चितता सहित अन्य सदस्यों की चिंताओं से निपटते समय निष्पक्षता के लिए भारत की मांगों को संतुलित करने को महत्वपूर्ण समझौते तथा बातचीत की आवश्यकता होगी। जीटीआरआई के सह-संस्थापक अजय श्रीवास्तव ने कहा कि भारत के लिए आगामी एमसी13 में विवाद निपटान प्रणाली में सुधार एक महत्वपूर्ण प्राथमिकता है। विवाद निपटान तंत्र में सुधार करना आवश्यक है, क्योंकि देशों के बीच संघर्षों को हल करने के विश्वसनीय तरीके के बिना डब्ल्यूटीओ नियम प्रभावी नहीं हैं। एमसी वैश्विक व्यापार निगरानी संस्था की सर्वोच्च निर्णय लेने वाली संस्था है। उन्होंने कहा, डब्ल्यूटीओ विवादों में अक्सर भाग लेने वाला अमेरिका डब्ल्यूटीओ के न्यायिक क्षेत्र की अक्षमताओं तथा कथित अधिक पहुंच से असंतोष के कारण इस प्रक्रिया में बाधा डाल रहा है।

कुश्ती : रवि कुमार दहिया ने ग्रैंड प्रिक्स डी फ्रांस 2024 में जीता कांस्य पदक

एजेंसी

नीस। टोक्यो ओलंपिक के रजत पदक विजेता रवि कुमार दहिया ने ग्रैंड प्रिक्स डी फ्रांस हेनरी डेग्लेन 2024 कुश्ती टूर्नामेंट में कांस्य पदक जीता है। शनिवार को फ्रांस के नीस में पुरुषों के 61 किग्रा फ्रीस्टाइल वर्ग के कांस्य पदक मुकाबले में भारत के स्टार पहलवान रवि दहिया ने कजाकिस्तान के कैरात अमिरतायेव के खिलाफ 10-4 से जीत दर्ज की। दहिया पहले मिनट में 2-4 से पिछड़ गए लेकिन उन्होंने अपने अनुभव का इस्तेमाल करते हुए मुकाबला जीत लिया। इससे पहले दहिया ने 16वें राउंड में तकनीकी श्रेष्ठता (13-2) के आधार पर जर्मनी के जूलियन ज़िन्सर को हराया, उसके बाद क्वाटर्र फाइनल में कजाकिस्तान के जंगार काबिलबेकोव को 12-6 से हराया। हालाकि, भारतीय पहलवान को सेमीफाइनल में फ्रांस के अरमान एलॉयन के खिलाफ 6-3 से हार का सामना करना पड़ा और वह कांस्य पदक मुकाबले में पहुँच गए। उल्लेखनीय है कि रवि कुमार दहिया ने आखिरी बार अंतरराष्ट्रीय मंच पर 2022 विश्व कुश्ती चैंपियनशिप में प्रतिस्पर्धा की थी। फरवरी में अभ्यास के दौरान उनके दाहिने घुटने में चोट लगने के बाद उन्हें अप्रैल 2023 में एशियाई चैंपियनशिप से बाहर कर दिया गया था। जुलाई 2023 में एशियाई खेलों के लिए राष्ट्रीय ट्रायल के दौरान रवि कुमार दहिया की चोट बढ़ गई और उन्हें शेष वर्ष अभियान से बाहर होना पड़ा। वह बेलग्रेड में हुई पेरिस ओलंपिक के क्वालीफाइंग विश्व कुश्ती चैंपियनशिप में प्रतिस्पर्धा नहीं कर पाये थे। आगामी अभियानों में रवि कुमार दहिया के 61 किग्रा से 57 किग्रा भार वर्ग में आने की उम्मीद है। वह अप्रैल में किर्गिस्तान में एशियाई ओलंपिक गेम्स क्वालीफायर और मई में तुर्की में विश्व ओलंपिक क्वालीफायर में प्रतिस्पर्धा कर सकते है।

पेज एक का शेष

अभिजीत मुहुर्त...

फायर-बिरकिन, जेनाडू, रेड कांगो, पिंक फायर, पिंक प्रिसेंज, डिफ़ेनबेकिया व्हाइट, होमालोमेना ब्रांज, केलेडियम मिक्स, मेलपिघिया श्रीराम, ड्रकाना महात्मा, सेफलेरा, वेरीगेटेड, लोरोपेटलम, रेडार मचेरा, डिफ़ेनबेकिया बोमानी, मोंसटेरा डेलीसिओसा, आर्केड मिक्स, पीस लिली आदि प्रमुख हैं। रामायणकालीन वैभव को दर्शाने वाले नक्षत्र वाटिका में 27 नक्षत्रों से जुड़े 27 पेड़ लगाए गए हैं। राम मंदिर परिसर हरा भरा हो, इसके लिए पूरे प्रांगण में हरियाली का खास ध्यान रखा जा रहा है। रामायण कालीन पेड़ों में पीपल, पाकड़, नीम, गुटेल, महुआ, शीशम, खैर, पलास, बेल, मौलिश्री, शमी, कदंब, आम, अर्जुन, गुलर, साल, बरगद, आंवला, चीड़ आदि के पौधे लगाए गए हैं। इनका संबंध भी नक्षत्रों से है।

मोदी ने की धनुषकोडी मंदिर ...

की पंखुड़ियाँ बरसाईं और प्रार्थना की। उन्होंने अरिचल मुनाई में राष्ट्रीय प्रतीक के साथ स्थापित अशोक स्तंभ पर पुष्पांजलि भी अर्पित की। धनुषकोडी और अरिचल मुनाई में लगभग एक घंटा बिताने के बाद श्री मोदी रामेश्वरम के लिए रवाना हुए जहां से वह हेलीकॉप्टर द्वारा मदुरै पहुंचे और नयी दिल्ली के लिए रवाना हो गए। श्री मोदी ने अपनी तीन दिवसीय यात्रा के दौरान शुक्रवार शाम को यहां खेलो इंडिया यूथ गेम्स का उद्घाटन किया, धनुषकोडी की यात्रा के साथ अपना दौरा समाप्त करने से पहले, शनिवार को त्रिची के श्रीरंगम में श्री रंगनाथस्वामी मंदिर और रामनाथपुरम में भगवान रामनाथस्वामी मंदिर का दौरा किया।

तमिलनाडु में राम मंदिर...

श्री राम के नाम पर किसी भी तरह की पूजा/भजन/प्रसादम/अन्नदानम की अनुमति नहीं है। पुलिस निजी तौर पर आयोजित मंदिरों को कार्यक्रम आयोजित करने से रोक रही है। उन्होंने कहा,वे आयोजकों को धमकी दे रहे हैं कि वे पंडालों को तोड़ देंगे। इस हिंदू विरोधी, घृणित कार्रवाई की कड़ी निंदा करती हूं। उन्होंने कहा,तमिलनाडु सरकार अनौपचारिक रूप से लाइव टेलीकास्ट प्रतिबंध को सही ठहराने के लिए कानून और व्यवस्था के मुद्दों का दावा कर रही है। झूठी और फर्जी कहानी! अयोध्या फैसले के दिन कोई कानून-व्यवस्था के मुद्दे नहीं थे। उस दिन भी नहीं जब प्रधानमंमत्री नरेंद्र मोदी ने राम मंदिर की नींव रखी थी। तमिलनाडु में श्रीराम का जश्न मनाने के लिए जमीनीस्तर और लोगों की स्वैच्छिक भागीदारी ने हिंदू विरोधी द्रविड़ मुन्नेत्र कषगम को परेशान कर दिया है।उधर, तमिलनाडु में सत्तारूढ़ द्रमुक सरकार ने पलटवार करते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सलेम में द्रमुक युवा सम्मेलन से लोगों का ध्यान हटाने के लिए गलत जानकारी का प्रचार कर रही है। राज्य के एचआर एवं सीई मंत्री पी के शेखरबाबू ने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि श्रीमती सीतारमण जैसा व्यक्ति, (जो ‘उच्च पद’ पर आसीन है) ऐसी खबरें फैलाने रहा है, ‘जो स्पष्ट रूप से झूठी और फर्जी हैं’।

दुल्हन बनी...

से आये कलाकार अपनी सुरमयी प्रस्तुतियों से श्रद्धालुओं के बीच रामनामी लहर का अहसास करा रहे हैं। कई टन फूलों से जगह जगह पर तोरण द्वार बनाये गये हैं। इसके अलावा खूबसूरत पेंटिंग के जरिये रामायण के प्रसंगों का जीवंत वर्णन किया गया है। भव्य राम मंदिर की छटा तो देखते ही बनती है। आने जाने वाले श्रद्धालु अपने आराध्य के नवनिर्मित भवन को टकटकी लगाये देख रहे हैं । प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में आने वाले वीआईपी मेहमानों के लिए श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की ओर से महाप्रसाद तैयार कराया गया है। जो प्राण प्रतिष्ठा के बाद उन्हें भेंट किया जाएगा। इसके अलावा कार्यक्रम के दौरान मेहमानों को मंदिर परिसर में देश घी से तैयार भोजन भी परोसे जाने की तैयारी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आगमन पर उनका भव्य स्वागत होगा। यहां 100 मंचों पर 2500 कलाकार भव्य सांस्कृतिक शोभायात्रा के सारथी बनेंगे। रविवार को इसका पूर्वाभ्यास भी किया गया। 100 स्थानों पर कलाकार भारतीय संस्कृति की खुशबू अपनी प्रस्तुति से बिखरेंगे।

आज रहेगा घना...

गोरखपुर, प्रयागराज, बरेली, झांसी, आगरा व मेरठ मण्डलों में रात का तापमान सामान्य से कम रहा। रविवार को सबसे ठंडा दिन कानपुर में रहा जहां दिन का तापमान 12 डिग्री सेल्सियस रहा जो कि सामान्य से 11 डिग्री कम रहा। लखनऊ एयरपोर्ट पर रविवार को दिन का तापमान सामान्य से 10 डिग्री कम यानि 12.6 डिग्री सेल्सियस रहा। शनिवार को सबसे कम रात का तापमान 4.1 डिग्री सेल्सियस आगरा में ताजमहल के आसपास दर्ज किया गया। भारतीय रेलवे के अनुसार रविवार को देश के विभिन्न हिस्सों से राष्ट्रीय राजधानी आने वाली लगभग बारह यात्री ट्रेनें अपने निर्धारित समय से देरी से चल रही हैं। घने कोहरे के कारण अमृतसर-नांदेड़ एक्सप्रेस, पुरी-नई दिल्ली पुरूषोत्तम एक्सप्रेस, अंबेडकरनगर-कटरा और मानिकपुर-निजामुद्दीन एक्सप्रेस सहित अन्य ट्रेनें विलंबित रहीं। दिल्ली हवाईअड्डे पर घने कोहरे के कारण लोग कई घंटों तक अपनी उड़ान का इंतजार करते दिखे। कुछ उड़ानें रद्द करने की भी घोषणा की गई। दिल्ली हवाई अड्डे के अधिकारियों ने परामर्श जारी कर यात्रियों से अनुरोध किया कि वे अपनी उड़ानों की स्थिति के बारे में संबंधित एयरलाइन से संपर्क करें। मौसम विभाग (आईएमडी) के अनुसार, रविवार तड़के 3:00 बजे से दिल्ली-पालम पर दृश्यता शून्य मीटर बनी हुई थी। आईएमडी ने बताया कि दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पश्चिम मध्य प्रदेश और बिहार में अलग-अलग इलाकों में बहुत घना कोहरा देखा गया। आईएमडी ने 21-22 जनवरी के दौरान बिहार और उत्तरी मध्य प्रदेश में शीत लहर की स्थिति प्रबल होने और उत्तर भारत के अधिक हिस्सों में सर्दी बढ़ने का अनुमान व्यक्त किया है। राष्ट्रीय राजधानी में आज सुबह कोहरा छाया रहा तथा न्यूनतम तापमान 4.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो सामान्य से तीन डिग्री कम है।

एक और दीवाली...

मनाया जाएगा। श्री मोदी और श्री योगी ने सूर्यास्त के बाद देशवासियों से कम से कम पांच दीप प्रज्ज्वलित करने का आग्रह किया है। भगवान श्री रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा का कार्यक्रम अभिजीत मुहूर्त में संपन्न किया जाएगा। इस ऐतिहासिक अवसर पर कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सीएम योगी एक दिन पहले ही अयोध्या धाम पहुंच चुके हैं। वहीं पीएम मोदी सुबह 10.25 पर अयोध्या धाम के महर्षि बाल्मीकि अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट पहुंच जाएंगे। 10.45 पर अयोध्या हैलीपैड पर उनका आगमन होगा। यहां से वो सीधे राम जन्मभूमि स्थल पर पहुंचेंगे। इसके बाद 11 बजे से 12 बजे तक वह विभिन्न आयोजनों में हिस्सा लेंगे, जबकि दोपहर 12.05 बजे से 12.55 तक प्राण प्रतिष्ठा का आयोजन होगा। दोपहर एक बजे कार्यक्रम खत्म होने के बाद वह समारोह स्थल पर पहुंचेंगे, जहां अन्य विशिष्ट अतिथियों के साथ ही पूरे देश और दुनिया को संबोधित करेंगे। यहां सीएम योगी भी अपना उद्बोधन देंगे। समारोह के अनुष्ठान की सभी प्रक्रियाओं का समन्वय, समर्थन और मार्गदर्शन करने वाले 121 आचार्य होंगे। वाराणसी के गणेशवर शास्त्री द्रविड़ सभी प्रक्रियाओं की निगरानी, समन्वय और दिशा-निर्देशन करेंगे तथा काशी के लक्ष्मीकांत दीक्षित मुख्य आचार्य होंगे। इसके अतिरिक्त प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, आरएसएस के सरसंघचालक मोहन भागवत, उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थित रहेंगे। प्राण प्रतिष्ठा की प्रक्रिया 16 जनवरी से ही शुरू हो चुकी है। 16 जनवरी को जहां प्रायश्चित्त और कर्मकूटि पूजन कराया गया था, वहीं 17 जनवरी को मूर्ति का परिसर प्रवेश हुआ था। 18 जनवरी को तीर्थ पूजन, जल यात्रा, जलाधिवास और गंधाधिवास के साथ ही श्रीराम लला विग्रह को उनके स्थान पर विराजमान किया गया। 19 जनवरी को औषधाधिवास, केसराधिवास, घृताधिवास, 19 जनवरी को धान्याधिवास, 20 जनवरी को शर्कराधिवास, फलाधिवास, पुष्पाधिवास और 21 जनवरी को मध्याधिवास और शय्याधिवास कराया गया। प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर आठ हजार से ज्यादा लोगों को आमंत्रित किया गया है। इसमें साधु संतों के साथ विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिष्ठित लोगों को बुलाया गया है। देर रात तक इनमें से कई लोग अयोध्या धाम पहुंच चुके हैं, जबकि बाकी लोग भी 22 को सुबह तड़के पहुंचने वाले हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय आध्यात्मिकता, धर्म, संप्रदाय, पूजा पद्धति, परंपरा के सभी विद्यालयों के आचार्य, 150 से अधिक परंपराओं के संत, महामंडलेश्वर, मंडलेश्वर, श्रीमहंत, महंत, नागा सहित 50 से अधिक आदिवासी, गिरिवासी, तातवासी, द्वीपवासी आदिवासी परंपराओं के प्रमुख व्यक्तियों की कार्यक्रम में उपस्थिति रहेगी। इसके साथ ही, भारत के इतिहास में पहली बार पहाड़ों, वनों, तटीय क्षेत्रों, द्वीपों आदि के वासियों द्वारा एक स्थान पर ऐसे किसी समारोह में प्रतिभाग किया जा रहा है। प्राण प्रतिष्ठा में विभिन्न परंपराओं के लोगों को भी स्थान दिया गया है। शैव, वैष्णव, शाक्त, गाणपत्य, पात्य, सिख, बौद्ध, जैन, दशनाम शंकर, रामानंद, रामानुज, निम्बार्क, माध्व, विष्णु नामी, रामसनेही, घिसापंथ, गरीबदासी, गौड़ीय, कबीरपंथी, वाल्मीकि, शंकरदेव (असम), माधव देव, इस्कॉन, रामकृष्ण मिशन, चिन्मय मिशन, भारत सेवाश्रम संघ, गायत्री परिवार, अनुकूल चंद्र ठाकुर परंपरा, ओडिशा के महिमा समाज, अकाली, निरंकारी, नामधारी (पंजाब), राधास्वामी और स्वामीनारायण, वारकरी, वीर शैव इत्यादि कई सम्मानित परंपराएं इसमें भाग लेंगी। गर्भ-गृह में प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के पूर्ण होने के बाद, सभी साक्षी महानुभावों को दर्शन कराया जाएगा। श्रीराम लला प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के मद्देनजर अयोध्या में भारी पुलिस बल की तैनाती की गई है। धाम की सुरक्षा को लेकर इसे दो जोन रेड और यलो में बांटा गया है। एसपीजी, एनएसजी ब्लैक कैट कमांडो, सीआरपीएफ कोबरा, सीआईएसएफ, आरएएफ, एनडीआरएफ को तैनात किया गया है। चप्पे-चप्पे पर यूपी पुलिस के सुरक्षाकर्मी मुस्तैद हैं। घरों की छतों से लेकर अहम लोकेशंस पर स्नाइपर्स की भी तैनाती है। साथ ही इंटेलिजेंस ब्यूरो और रॉ भी गतिविधियों पर नजर रख रही है। धाम में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 100 से अधिक डीएसपी, लगभग 325 इंस्पेक्टर व 800 उपनिरीक्षकों को तैनात किया गया है, जबकि पुलिस और अर्धसैनिक बलों के 11,000 जवानों को अतिरिक्त तैनात किया गया है। वहीं वीआईपी सुरक्षा के लिए तीन डीआईजी, 17 एसपी, 40 एएसपी, 82 डीएसपी, 90 इंस्पेक्टर के साथ एक हजार से ज्यादा कॉस्टेबल और 4 कंपनी पीएसी को तैनात किया गया है। श्रद्धालुओं को दर्शनीय स्थलों की जानकारी देने के लिए 250 पुलिस गाइड भी उपलब्ध है। योगी सरकार ने धाम की सुरक्षा को अभेद्य बनाने के लिए आईटीएमएस, सीसीटीवी, कंट्रोल रूम एवं पब्लिक सीसीटीवी का भी सहारा ले रही है। एआई तकनीक पर आधारित एंटी ड्रोन सिस्टम पूरी तरह से सक्रिय मोड पर है। सरकार ने आने वाले मेहमानों के वाहनों की पार्किंग के लिए भी पुख्ता इंतजाम किए हैं। पार्किंग के लिए 51 स्थानों को चिन्हित किया गया है। इन पार्किंग में करीब 23 हजार वाहनों को पार्क किया जा सकेगा। इतना ही नहीं पार्किंग के लिए किसी को भटकना न पड़े इसके लिए पार्किंग स्थलों को गूगल मैप पर अपलोड किया गया है। वहीं पार्किंग स्थलों को वीवीआईपी, वीआईपी और अन्य मेहमानों के लिए भी रिजर्व किया गया है। इन पार्किंग को वायरलेस और पीए सिस्टम से लैस किया गया है। प्राण प्रतिष्ठा आयोजन के लिए स्वास्थ्य विभाग ने भी कमर कस ली है। सीएमओ डॉ.संजय जैन ने बताया कि विभाग द्वारा आयोजन क्षेत्र के सोलह स्थानों पर श्रीराममंदिर तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के साथ मिलकर फर्स्ट एड यूनिट बनाई गई है। इस यूनिट में एक डॉक्टर, एक फार्मासिस्ट व एक वॉर्ड बॉय की मौजूदगी रहेगी। इनके अलावा दो अस्पताल भी बनाए गए हैं, जिसकी क्षमता 10 व 20 बेड की होगी। इसके अलावा 40 एम्बुलेंस की भी व्यवस्था की गई है। मेडिकल कॉलेज, श्रीराम चिकित्सालय अयोध्या, जिला अस्पताल अयोध्या, महिला जिला अस्पताल व कुमारगंज के चिकित्सालय मे 190 बेड आपातकालीन स्थिति के लिए आरक्षित रखे गए हैं। प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर वीवीआईपी मूवमेंट को देखते हुए अयोध्या-लखनऊ, अयोध्या-गोरखपुर, अयोध्या-प्रयागराज और अयोध्या-वाराणसी हाईवे को ग्रीन कॉरिडोर में बदला गया है। स्वयं के हेलिकॉप्टर व प्राइवेट चार्टर्ड प्लेन से आने वाले वीवीआईपी के लिए महर्षि वाल्मीकि अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा अयोध्या धाम के साथ-साथ 5 राज्यों के 12 शहरों के एयरपोर्ट्स में पार्किंग की व्यवस्था की गई है। प्राण प्रतिष्ठा के लिए क्रिकेट जगत, फिल्म जगत, संत समाज, राजनीति, कला, साहित्य और संस्कृति समेत अन्य क्षेत्रों के अतिविशिष्ट अतिथियों को आमंत्रित किया गया है। अयोध्या धाम में इन अतिथियों का आगमन शुरू हो गया है। उत्तर प्रदेश सरकार ने 22 जनवरी को छुट्टी का ऐलान किया है, जबकि केंद्र सरकार ने दोपहर ढाई बजे तक हाफ डे छुट्टी घोषित की है। वहीं कई अन्य राज्य और प्रतिष्ठानों ने भी यूपी और केंद्र सरकार की तर्ज पर पहल करते हुए छुट्टी की घोषणा की है।

श्री रामलला विराजमान

श्रीरामोत्सव

"राम मंदिर के निर्माण की यह प्रक्रिया राष्ट्र को जोड़ने का उपक्रम है।"

-नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

सप्तपुरियों में प्रथम श्रीअयोध्या धाम में

प्रभु श्रीराम के बाल रूप विग्रह का

प्राण प्रतिष्ठा समारोह

गरिमामयी उपस्थिति

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

डॉ. मोहनराव भागवत
सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

महंत नृत्यगोपाल दास
अध्यक्ष, श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास

एवं अन्य गणमान्य महानुभाव

दिनांक : 22 जनवरी, 2024 | समय : अपराह्न 12:20 बजे | स्थान : श्रीराम जन्मभूमि मंदिर, श्रीअयोध्या धाम

लाइव प्रसारण DD NEWS व Youtube.com/DDNEWS Youtube.com/dduttarpradesh एवं UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश